... کی خدمت کرتا ہے ...

... ہے جو ...

وہ اپنی آپ ... کرتا ہے ... ایک فرد ...

ہے۔ جب تم کسی شخص کی خدمت کرو۔ ماں باپ

ملک کی خدمت کرو۔ تو ہمیشہ یہ سمجھو۔ کہ مالک

نے تم کو ایک نایاب موقعہ دیا ہے۔ کہ خدمت

کے ذریعے تم آپ کو اچھا اور بہتر بناؤ۔ جو

شخص تم کو خدمت کا موقعہ دے۔ اس کا شکریہ

بجا لاؤ۔ نہ کہ اس پر احسان دھرو۔

... یعنی لالچ یا بےغرض خدمت

انسانی آدمی کے دل کو خدا کا نور حاصل کرنے

کے لئے پاک دیتا ... ہے۔ یہ دل کو وسیع

کرتی ہے۔ اور وحدانیت کے راستے کی

رکاوٹوں کو دور کرتی ہے۔ دل کے پاک

کرنے کے لئے ... اشد ...

بےغرض خدمت ... انجام ... آئینہ

... [illegible]

... [illegible]

... دھاگہ ... اونچے درجہ

کبھی ہوتی ہے ... دنیا کی جھنجھٹوں میں پھنسے

ہوئے منشوں کو کچھ پتہ نہیں۔ آج ہم اس پر ...

... مہاتما ... جی نے جو اپدیش ...

کے بارہ میں دیا ہے۔ اس کا خلاصہ ناظرین

کرتے ہیں۔

... نے پوچھا ...

... کیا ہے ...

میں ہی ... کی ... ہو سکتی ہے؟

شوک اور موہ سے چھٹکارا کس طرح ہو سکتا ہے

مہاتما ... جی نے ...

میں موجود دیکھتے ہیں۔ ان کا اپدیش ...

کر ... کا ... آرمبھ کیا ...

اسی شخص کو دینا چاہیئے جو اس کا مستحق ہو ...

کہا ہے۔

دنیا گیلا جگت ہے سمجھو مکھ سے بول

... [illegible]

... بیٹھی ... کرتے ...

... ہیں ... چاہنے والے انسان ...

نہیں ... چاہیئے ... میرے ...

... طرح گذارہ کر سکے۔

انسان آپ ہی جنم لیتا ہے ...

ہے۔ آپ ہی ...

قبول کرتا ہے ...

... کا ... کیا ...

... آتا ہے ... میں جو کچھ ...

وہ ... کے کھیل کے علاوہ وہ کوئی

... نہیں پاتا ... مٹی کا لوندا۔

... اور ... ہے۔ وہ رشتہ ...

... [illegible]

* ओ३म् *

वैदिक संस्कृति दर्पण

अर्थात्

श्री महता जैमिनी जी वैदिक मिशनरी

के

२४ प्रभावशाली व्याख्यान

इसमें भारत दर्पण व जापान दर्पण
भी सम्मिलित है।

संग्रहकर्ता व प्रकाशक-
रोशनलाल आर्य मिशनरी
ननकाना साहब ज़िला शेखूपुरा
मंत्री, श्री महता जैमिनी जी।

मुद्रक-
विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'
अध्यक्ष-प्रेमी प्रिन्टिङ्ग प्रेस, मेरठ शहर।

प्रथमबार १०००] १९४० [मूल्य १) रुपया।

विषय सूची

व्याख्यान १

वैज्ञानिक युग में धर्म की आवश्यकता

वर्तमान समय को कलयुग कहते हैं। हिन्दुओं की सम्मति में कलयुग से तात्पर्य अंधकार का और पाप का समय है परन्तु पश्चिमी लोगों की सम्मति में कलयुग से तात्पर्य कला कौशल मैशीन का युग है अर्थात् अब भोजन बनाना, रेलवे टिकट देना, पंखा चलाना आदि सब कार्य बिजली और मैशीन द्वारा किये जा रहे हैं इस लिये ऐसे वैज्ञानिक शक्ति के समय में मतमतान्तरों की क्या आवश्यकता है। इस समय चार प्रकार के विचार वाले लोग हैं जो मज़हब के नाम से घृणा करते और दूर भागते हैं (१) वैज्ञानिक लोग जिनका मत है कि हम अपनी तमाम आवश्यकतायें साइन्स (विज्ञान) के बल से पूरी कर रहे हैं मज़हब की ओर ध्यान देना अपना समय व्यर्थ खोना है (२) प्रकृति के पुजारी भोग वादी जिनका विचार है दुनिया मनुष्य के भोग विलास के लिये है जैसा कि यूनान के प्रसिद्ध विद्वान ऐपीकूरस (Epicures) ने कहा कि "खाओ पिलाओ मज़े उड़ाओ कल मर जाना है" (३) राजनीतिज्ञ लोग जिनका मत है कि अपनी जाति और देश को फैलाओ। राजनैतिक उन्नति करना ही हमारा मज़हब है इससे संसार में अमन व शान्ति फैल सकती है (४) वर्तमान समय के लिखे

पढ़े लोग। जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा की गोद में परवरिश पाई है जो मज़हब के नाम से बेमुख (indifferent) हैं वह कहते हैं मज़हब ने दुनिया में तलवारें चलाईं, निरअपराधियों के रक्त बहाये और संसार में भयानक युद्ध और आक्रमण कराये। इन चारों प्रकार के सम्प्रदायों ने मज़हब और धर्म के भेद पर विचार नहीं किया। मज़हब की आवश्यकतायें मैं भी नहीं मानता परन्तु धर्म के बिना तो संसार क्षण भर भी आनन्द और शान्ति से नहीं रह सकता। मज़हब उन सिद्धान्तों का नाम है जो किसी मनुष्य ने बनाकर इन्हें ईश्वर की ओर से सम्बोधित किया और उसमें अपने प्रभुत्व को स्थापित किया हो जैसा कि इसलाम में हज़रत मौहम्मद ने जो उपदेश और आज्ञायें वर्णन की हैं इन्हें ईश्वर की तरफ़ से भेजा हुवा बताया और अपने आपको ईश्वर का अन्तिम दूत सिद्ध किया बस इसलाम का आधार हज़रत मौहम्मद को ईश्वर का दूत मानना है जो उसे ईश्वर का दूत न माने उसे काफ़िर कहा जाता है। इस प्रकार बुद्ध मत में भगवान बुद्ध को, ईसाई मत में हज़रत ईसा को, यहूदी मत में हज़रत मूसा को जो प्रभुत्व दिया जाता है, वह ईश्वर के तुल्य है। गोया यह मानसिक दासता की शिक्षा देते हैं परन्तु धर्म वह है जिसमें किसी मनुष्य का प्रभुत्व न हो और स्वतन्त्रता का उपदेश हो जैसे वैदिक धर्म में किसी ऋषि मुनि या अन्य मनुष्य को अन्य मतमतान्तरों के समान ऐसा प्रभुत्व नहीं दिया गया किन्तु

सम्पूर्ण स्वतन्त्रता का उपदेश आर्य समाज का चौथा नियम है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। धर्म का नेत्र बुद्धि और युक्ति है इस लिये दुनिया में तर्क बुद्धि और विचार की सर्वदा आवश्यक्ता रहेगी और इसी का नाम धर्म है। इस लिये धर्म की आवश्यकता सर्वदा मनुष्य को रहेगी। अब मैं आपके सन्मुख कई देशों की अवस्था का नक़्शा रखना चाहता हूं जो विज्ञान, प्राकृतिक उन्नति, राजनैतिक उन्नति और विद्या में निपुण और उच्चकोटि पर पहुंच चुके हैं फिर भी वह धर्म की आवश्यकता को अनुभव करते हैं या नहीं।

(१) अमरीका को लीजिये—वर्तमान समय में अमरीका में यह चारों अवस्थायें विद्यमान हैं अर्थात् वैज्ञानिक शक्ति में इसने कई आविष्कार किये हैं-ग्रामोफ़ोन, विद्युत शक्ति आदि अनेक नये आविष्कार अमरीका ने निकाले हैं। वहां होटलों में भोजन बनाना, परोसना बिल के पैसे वसूल करने का कार्य बिजली देवता कर रहा है। धन में तो राकफीलर, हैनरीफोर्ड, मोरगन आदि धन पतियों का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। राजनैतिक अवस्था में भी अमरीका में कोई राजा नहीं। प्रजा ही अपना राजा, अध्यक्ष और अधिकारी नियुक्त करती है। विद्या में अमरीका में ९९ प्रतिशत लिखे पढ़े हैं। जब यहां चारों प्रकार की वस्तुएं विद्यमान हैं तो क्या वहां अब धर्म की आवश्यकता नहीं है? इस पर पादरी पीच (Rev. Peach)

महोदय लिखते हैं और पालमाल गज़ट में महोदय (Samuel Hoar) इसका समर्थन करते हुये लिखते हैं कि—

(१) अमरीका में विवाह एक प्रकार का व्यभिचार बनगया है।

(1) America is land of Marital Scandals.

(२) अमरीका आत्महत्याओं की भूमि बनगया है। जहां १,२५००० आत्महत्यायें प्रति वर्ष होती हैं।

(2) America is land of Suicides.

(३) अमरीका में धन्धों पर युद्ध होते हैं अर्थात् धनपती और परिश्रमियों के बीच हड़तालें और झगड़े होते हैं।

(3) America is land of industrial strifes where strikes and lock outs are rampant.

(४) जहाँ अन्य जातियों के लोगों और मूल निवासियों को वृक्षों से लटका कर मार डालना और आग में ज़िन्दा जलाना अब तक जारी है।

(4) America is land of rynching.

(५) जहां कि लोगों का जीवन और सम्पत्ति खतरे में है। इसलिये पादरी महोदय लिखते हैं कि अमरीका शैतान का नरक बन गया है।

इसका कारण यह है कि अमरीका में किसी मनुष्य का हृदय ईश्वर की ओर नहीं रहा। इसलिये ईश्वर से विमुख होगये हैं।

Because in America there is no heart for God; heart is changed into merit and so it is God forsaken continent.

इसलिये वहां दुराचार, व्यभिचार, गर्भपात और अनेक प्रकार के रोग और कष्ट अधिक हो गये हैं। इसलिये अब पादरी महोदय इसका उपाय बताते हैं कि—

Some Saint like Swami Vivekanand or Ram Tirath should again come from India and deliver America from Materialism and debauchery.

अर्थात् भारत से कोई सन्त स्वामी विवेकानन्द या स्वामी रामतीर्थ जैसा फिर आवे और अमरीका से प्राकृतिक पूजा और दुराचार छुड़ावें। अतः इस कथन से सिद्ध होता है कि अमरीका को चाहे मज़हब की आवश्यकता न हो परन्तु धर्म की आवश्यकता है जिसके लिये वह भारत की ओर टकटकी लगाये हुये है।

(२) जर्मनी को लीजिये—वहां भी प्राकृतिक उन्नति, कला कौशल का जाल बिछा हुआ है। हर हिटलर प्रति दिन अपना अधिकार और प्रभुत्व बढ़ाता जा रहा है। आज संसार में सब की ज़बान पर हिटलर का नाम है। जब रविन्द्रनाथ टैगोर जर्मनी में गये थे तो एक दिन प्रातःकाल दो जर्मन लड़कियों ने इन्हें आकर फूलों के गुलदस्ते भेंट किये और कहा कि चूंकि आप भारत के सपूत हैं हम आपको प्रेम से यह पुष्पमाला भेंट देती हैं। उन्होंने पूछा कि तुम भारत से क्यों प्रेम करती हो उन्होंने उत्तर दिया कि इसलिये कि भारत परमात्मा से प्रेम करता है। हमारे देश में तो इस क़दर कलाकौशल का जाल

बिछाया गया है कि परमात्मा के लिये कोई स्थान नहीं रहा। इसलिये जितने अत्याचार और आक्रमण हमारे देश में हो रहे हैं उनका कारण यही है कि परमात्मा का भय नहीं रहा।

In Germany there is no room for God. Tyranny of machine and machinery have caused our moral and spiritual death.

अर्थात् कलाकौशल के अत्याचारों ने हमारे सदाचार और आत्मिक अवस्था का नाश कर दिया है। इसलिये बर्लिन यूनीवर्सिटी का संस्कृत प्रोफ़ेसर महोदय गिलासीनिब डाक्टर टैगोर को अपने पत्र में लिखता है कि—

I long to visit India once in my life, because there I shall drink off the spiritual wisdom from the original fountain head.

अर्थात् मेरी हार्दिक कामना है कि एक बार भारत की यात्रा करूं। वहां जाकर ज्ञान के स्रोत (वेद) से अमृत के घूंट पीकर अपनी तृष्णा मिटाऊं। इस प्रकार जब शोपनहार ने उपनिषदों का स्वाध्याय किया तो इसने स्पष्ट लिख दिया कि—

In the whole world there is no study so elevating and beneficial as that of the upnikhads. It has been the solace of my life and it shall be solace after my death.

अर्थात् संसार भर में उपनिषदों के तुल्य कोई ग्रन्थ आत्मा को उन्नत करने वाला और लाभकारी नहीं। इन ग्रन्थों ने

ही मेरी आत्मा को शक्ति दी है और मरने के पश्चात् भी मुझे इन ग्रन्थों से शान्ति प्राप्त होगी। अतः जर्मनी से जो चीख व पुकार आती है कि यहां परमात्मा के लिये कोई स्थान नहीं। इसका परिणाम किस क़दर भयानक है कि वहां अत्याचार और अन्य जातियों को नष्ट करना और अपनी जाति के गौरव बढ़ाने के लिये दूसरों पर आक्रमण करना अधिक हो रहा है। इसलिये वहां विद्वान भारत की ओर ताक रहे हैं और अपने लेखों द्वारा अपने विचार प्रगट करते हैं कि भारत से ही हमें शान्ति और अमन प्राप्त हो सकेगा। इसलिये महोदय हिटलर ने भी स्वयं अपने भाषण में जो राज सभा में ६ जनवरी ३५ ई० को दिया स्पष्ट कहा कि ईसा मसीह यहूदी था हम यहूदियों का मत क्यों स्वीकार करें। हम आर्य जाति से हैं हमें आर्य धर्म को ही अपनाना उचित है।

तीसरा देश इंगलिस्तान है। कहा जाता है कि इसके राज्य में सूर्य भी अस्त नहीं होता है। इतना विशाल बरतानिया का राज्य है। वहां भी कलाकौशल, धन, विद्या की कमी नहीं। परन्तु महोदय एन्डरूज साहब (Rew. C. F. Andrews) इसके सम्बन्ध में लिखते हैं कि जब मैं १९२३ ई० में १९ वर्ष के पश्चात् भारत से अपनी मातृभूमि लंडन में गया तो वहां मैंने प्राकृतिक उन्नति में बहुत परिवर्तन देखा अर्थात् रात को दो दो बजे तक बाज़ारों और गलियों में मोटर, ट्रामकारों और गाड़ियों का इतना शोर व गुल है कि मैंने पहिली ही रात

को यह अभिलाशा प्रगट की कि भारत को लौट जाऊं क्योंकि वहाँ तो मैं शान्ति निकेतन में दो तीन घंटे एकान्त में ईश्वर भजन का आनन्द प्रतीत करता था। मैं दूसरे दिन राज्य शासन सभा के प्रधान लार्ड नार्थकाफ़ से जाकर मिला और उसे वधाई दी कि अब हमने जर्मनी पर विजय प्राप्त करली है। अब तो हमारे देश में शान्ति का राज्य होगा। उसने उत्तर दिया कि शान्ति का शब्द तो हमारे कोष से लोप हो गया है। अब महात्मा गांधी के असहयोग के प्रभाव से हमारे कारखाने बन्द हो रहे हैं और २२ लाख मज़दूर बेकार हो रहे हैं। इस लिये मुल्क में शान्ति कहाँ। वह स्पष्ट कहते हैं कि या तो हमें भोजन दो नहीं तो पार्लियामेंट को नष्ट कर देंगे। तत्पश्चात मैं महालाट पादरी हिज़होलीनेस राबर्ट वर्सा से जाकर मिला और उसे वधाई दी। उसने कहा कि यहाँ युद्ध की समाप्ती के पश्चात देश में व्यभिचार, चोरी डाके आदि अभियोग बढ़ गये हैं क्योंकि जनता के पास धन ही नहीं रहा। लोग अब गिरजा में कम आते हैं। जब मैंने इसका कारण पूछा तो उत्तर मिला कि जनता को पेट पालन करने के लिये इतना परिश्रम करना चाहिये कि इन्हें परमात्मा के नाम लेने में भी समय नष्ट न करना पड़े इसलिये इन्गलिस्तान में अब परमात्मा के लिये कोई समय नहीं।

In England there is no time for God.

इस लिये ईश्वर के ध्यान के स्थान में सारा समय निर्वाह

के लिये धन कमाने में लगे हुये हैं और दुराचार आदि अव-गुण अधिक हो रहे हैं लोगों का मज़हब पर विश्वास कम हो गया है। यह हैं महोदय एन्डरूज़ के विचार परन्तु वह अपने सम्बन्ध में लिखता है कि मेरे दिल पर यह अंकित हो गया है कि एक दिन पश्चिम की जातियों को भारत के आदर्शों पर आना पड़ेगा। हमारे पश्चिमी देशों की वर्तमान स्थिति में भारत के उद्देशों और उपदेशों के अनुसार नये सिरे से परिवर्तन करना पड़ेगा। भारत अब भी संसार का गुरू है मुझे अब अनुभव करने से पता लगा है कि मैं कैसा मूर्ख था कि अपने तईं गुरु और आचार्य समझता था। भारत की अध्यात्मिक विद्या अवलोकन किये विना भारत की निन्दा करता था मगर जब मैंने श्रद्धा और नम्रता से भारत की संस्कृति और अध्यात्मिक विद्या का स्वाध्याय किया तो मुझे भारत-माता के चर्णों में शिष्य बनकर बैठना पड़ा। अब मेरा अभि-मान जाता रहा और मुझे भारत के आगे सर झुकाना पड़ा इस प्रकार मैक्समूलर जो कभी वेदों को गडरियों के गीत कहा करता था। जब उसने श्रद्धा से स्वामी जी के वेदभाष्य को पढ़ा तो इसे भी वेअख्तयार यह शब्द कहने पड़े।

"Whatever sphere of human mind you may select for your study whether it be Science or Art, Religion or Philosophy, laws or customs, traditions or nursery tales, you will have to go to India whether you like it or not, because

some of the most valuable and undestructive materials are treasured up in India and India only.

चाहे आप मनुष्य के मस्तिष्क का कोई विभाग लें वैज्ञानिक हो या धन्धे का धर्म हो या पदार्थ विद्या या तत्वज्ञान, क़ानून हो या रिवाज, प्राचीन संस्कृति हो या गाथायें सब के लिये आपको भारत की शरण लेनी पड़ेगी क्यों कि अत्यन्त शिक्षा-दायक सामग्री इन सब विषयों पर आपको केवल भारत में ही मिल सकेगी और कहीं नहीं। अस्तु इससे सिद्ध हुवा कि वरतानया जहां से पुकार आती है कि ईश्वर के लिये कोई समय नहीं रहा वहां भी वैदिक धर्म की आवश्यकता है और वहां के विद्वान इसके लिये अत्यन्त आवश्यकता प्रगट कर रहे हैं।

चौथे देश का नाम फ्रांस है–जब टैगोर साहब फ्रांस की यात्रा पर गये तो महोदय वरगसन प्रोफैसर (Professor Burgason) Professor of Oriental Philosophy के पास ठहरे उसने बताया कि फ्रांस व्यभिचार और फैशन का दास बन चुका है (It has become the land of fashion and passion.) जब टैगोर ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि फ्रांस में किसी का ईश्वर की तरफ़ मन नहीं रहा है (because in France there is no mind for God) जब तक जनता भारत के तत्वज्ञान को अपने कर्तव्य में पालन नहीं करेगी तबतक फ्रांस की अशान्ति दूर नहीं हो सकती।

(२) महोदय जकालेयट (Jacooliat) ने जो भारत में फ्रांस सरकार की ओर से चंद्रनगर में हाईकोर्ट के जज नियुक्त हुये थे यहां से लौटने पर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम (The bible in India) है उसमें वह लिखते हैं कि—

The Veda is the word of eternal wisdom, the principle of principles as revealed to our fathers, the pure primeval doctrine and the sublime instruction. Astonishing fact! The Hindu revelation is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with modern Science.

(३) पैरिलाटी (Perrilotti) अपनी पुस्तक मध्यकाल का भारत में लिखता है कि मैं अब भारत में जाना चाहता हूं ताकि जीवात्मा के अमर होने का ज्ञान भारत के पंडितों से जाकर प्राप्त करूं क्यों कि ईसाई धर्म मेरी आत्मा को शान्ति नहीं दे सका।

(४) फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान प्रोफ़ैसर पैलसर साहब ने मदरास के मासिक पत्र सोशल रिफ़ारमर जून १६३४ में एक लेख मुद्रित कराया था। जो निम्न लिखता है।

O India will you not help us. Be sympathetic with us. We are your children. You were old, learned and wise before we existed. Our path is steep and thorny. Help us Mother India, we your vedic children are turning our gaze to our Motherland together.

By your teaching we can become the great regenerating and moralizing force of the world.

अर्थात ओ भारत ! क्या तू हमें सहायता नहीं देगा। हमारे साथ सहानुभूति प्रगट कर हम तेरे बच्चे हैं हमारे उत्पन्न होने से पूर्व तू वृद्ध, विद्वान और बुद्धिमान था। हमारा मार्ग कंटकाकीर्ण और कठोर है। ऐ भारतमाता ! हमारी सहायता कर हम आप के वैदिक बच्चे अपनी दृष्टि मातृभूमि की ओर संगठित रूप में मोड़ रहे हैं। आपकी शिक्षा से ही हम अपना पुनरुद्धार कर सकते हैं और संसार की सदाचार की शक्ति बन सकते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि फ्रांस भी भारत के तत्व ज्ञान और धर्म शिक्षा के लिये तड़प रहा है। प्राकृतिक उन्नति वहाँ की आत्माओं को शान्ति न दे सकी। विना धर्म के अधोगति को और अशान्ति को प्राप्त हो रहा है।

पाँचवा जापान को लीजिये—वर्तमान समय में जापान ने शिल्पकारी दस्तकारी और धन्धों में इतनी उन्नति करली है कि अब जापान संसार भर की मंडी वना हुवा है। जापानी लोग अभिमान से यहाँ तक कहते हैं कि In our country there is no work for God अर्थात् हमारे देश में परमात्मा के लिये कोई कार्य नहीं है। इस लिये आज हम देखते हैं कि जापान किस प्रकार से चीन पर अत्याचार कर रहा है। नि-हत्थे लोगों पर, बाल बच्चों और स्त्रियों पर हथियार चलाते

आते हैं इन्हें जंगली और असभ्य लोगों की तरह युद्ध किया आ रहा है। इस लिये प्रोफेसर तकासु लिखता है "भारत के तपस्वी और योगी जंगलों में ऐकान्त भ्रमण करके योग अभ्यास करते हैं। वहां से ही सभ्यता, विद्या और धर्म उत्पन्न हुये न कि हमारे कालिजों के गगन स्पर्शी भवन से। इस लिये भारतीय सभ्यता, अध्यात्मिक और आदिन्य है इसके मुक़ाबिले में हमारी सभ्यता प्राकृतिक है। वेदों और उपनिषदों के समय से टैगोर आदि के समय तक हम उस आत्मिक-सभ्यता का प्रचार देखते हैं। इसी सभ्यता ने महात्मा गांधी, महात्मा बुद्ध और टैगोर जैसी महान आत्मायें पैदा की। जिन्हें हम संसार भर का दिल, दिमाग़ और आत्मा कह सकते हैं। अमरिका और युरोप की सभ्यता संसार से अन्य सभ्यताओं और जातियों के समान मिट जायेगी। परन्तु भारत की सभ्यता अवश्य सर्वदा कायम रहेगी। निसन्देह यह भारत अब भी संसार को अपनी सभ्यता अभिमान से पेश करता है जिसपर वर्तमान समय के तत्व ज्ञानी, साम्यवादी और धार्मिक विचारों वाले गम्भीरता से दृष्टि डाले विना नहीं रह सकते। भारत जापान का देवगुरू है क्योंकि भगवान बुद्ध भारत में उत्पन्न हुवा उसी की शिक्षा ने भारत को सभ्य बनाया अब भी यदि जापान भगवान बुद्ध की शिक्षा पालन करे तो संसार भर में अमन और शान्ति का अगवा कहलाने का अधिकारी हो। इससे सिद्ध होता है कि जापान अब भी भारतीय सभ्यता के

लिये उत्सुक है और भारत के ही धर्म को न केवल आवश्यक समझता है किन्तु उसे शान्ति का साधन समझता है।

छटा देश रूस है जिसने कुल २० वर्ष में इस क़दर अद्भुत उन्नति करली है कि संसार भर के इतिहास में ऐसी मिसाल नहीं मिलती। शिल्पकारी, हवाई जहाज़ बनाना, विद्या, सदाचार और कृषि विद्या में रूस ने थोड़े से समय में संसार भर को चकाचौंध में डाल दिया है। वहां के प्रसिद्ध नेता लेनिन ने तो मज़हब को सर्वथा तिलाञ्जली देकर ईश्वर को अपने देश से निर्वासित कर दिया और कह दिया कि हमारे देश में ईश्वर की आवश्यकता नहीं In our country there is no need for God. परन्तु यह इसका कथन मात्र है क्योंकि इन्होंने धर्म को तिलांजली नहीं दी। मज़हब और मज़हब वालों के ईश्वर के रूप को तिलांजली दी। रूस में सदाचार का बड़ा सम्मान है। बाज़ारों में दुराचार उत्पन्न करने वाली पुस्तक या चीज़ नहीं बिकती। बालकों को सिनेमा नहीं देखने दिया जाता न वह सिग्रेट या शराब पी सकते हैं। हमारे सिद्धान्तानुसार सदाचार परमोधर्मः अर्थात् सदाचार परम धर्म है। इसके अतिरिक्त रूस की सरकार ने एक कमीशन बनाकर वेदों का अनुवाद रूसी भाषा में कराने की आज्ञा दी है। इस सभा के अध्यक्ष का नाम डा० बोलेनुर (Boulnger) है जिसने अपने भाषण में स्पष्ट कहा है--

It will be a sin on my part if I introduce

here the translation of the Vedas made by European scholars which is absurd and incorrect on the very face of it. I shall get it translated by Aryan scholars which will be interesting and useful for the Russian Public.

अर्थात् यदि रूस की जनता को वेद का अनुवाद युरोप के अनुवादकों के आधार पर दिया जावे तो जनता का शौक वेद पढ़ने की तरफ़ अधिक नहीं होगा क्योंकि यह अनुवाद मिथ्या, अपूर्ण और अशुद्ध व निकृष्ट है किन्तु मेरी सम्मति में वेदों की शिक्षाएं ऐसी उत्तम और उच्च कोटि की हैं और मैं पाप का भागी हूंगा यदि रूस की जनता को असत्य मार्ग पर डालू। मैं तो रूसी नवयुवकों को भारत में भेजकर आर्य लोगों से वेद का ज्ञान प्राप्त कराके उनसे रूसी भाषा में वेद का अनुवाद कराऊंगा ताकि जनता उनसे लाभ उठा सके। मैंने नमूने के तौर पर छः बड़े प्रसिद्ध देशों का प्रतिबिम्ब आपके सामने रक्खा है। चाहे इन देशों ने विज्ञान, सभ्यता और राजनैतिक विचारों में कितनी उन्नति करली है और परमात्मा पर उपहास किये हैं परन्तु बिना धर्म के उन्हें शान्ति नहीं मिली और वह वैदिक धर्म की आवश्यकता अनुभव करते हुए उसके लिये उत्सुक हैं।

व्याख्यान नं० २

वैदिक धर्म की विशेषतायें

यों तो प्रत्येक मत मतान्तर को मानने वाले अपने अपने मत की प्रशंसा करते हैं और अपने मन्तव्य को सबसे उत्तम और महान समझते हैं। परन्तु देखना यह है कि उनकी यह बात कहां तक सत्य है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सम्पूर्ण बनाना है अर्थात् शारीरिक, आर्थिक, मानसिक और धार्मिक अवस्थाओं को सम्पूर्ण करना। परन्तु जितने मतमतान्तर इस समय प्रचलित हैं वे सब इन बातों की ओर ध्यान नहीं करते। वैदिक धर्म में सब से पहिली विशेषता यह है कि वह मानसिक दासता से छुड़ाता है। तमाम मतमतान्तरों ने अपने २ संचालक को ईश्वर से भी ऊंचा पद दिया है। इसलिये वे मनुष्य पूजा के गढ़े में गिर गये हैं। दृष्टान्त मात्र मुसलमानों को देखिये। हज़रत मोहम्मद को अपने कलमे में ईश्वर के साथ सम्मिलित कर दिया है। यदि कोई ईश्वर को अपशब्द कहे तो इन्हें बुरा नहीं लगता परन्तु मोहमद साहब के विरुद्ध एक शब्द कहे तो कत्ल करने को तैयार हैं। यदि इसलाम में से मोहमद साहब का नाम छोड़ दिया जाय या उसे न माना जाय तो ऐसे व्यक्ति को काफर कहते हैं। यही अवस्था ईसाई, बुद्ध और ज़रदोस्त के मत की है। इन सब मतों में इन संचालकों ने अपना ऐसा प्रभुत्व जमाया है कि वास्तव में इन्हीं की पूजा

होती है। इन मतों ने मनुष्य को मानसिक दासता की ज़ंजीरों में जकड़ दिया है। परन्तु एक वैदिक धर्म ही है जो मनुष्य को मानसिक दासताओं से हटाकर केवल परमात्मा का सच्चा भक्त बनाता और मानसिक स्वतंत्रता की शिक्षा देता है। वैदिक धर्म में प्राचीन ऋषियों, मुनियों का सम्मान करना तो उचित है क्योंकि इन्होंने तप करके वेद उपदेशों को हमारे तक पहुंचाया परन्तु किसी ऋषि ने ब्रह्मा से लेकर स्वामी दयानन्द तक यह दावा या उपदेश नहीं किया कि जो न मानेगा या हमारी पूजा न करेगा या हमें प्रभुत्व न देगा वह वैदिक धर्मी न होगा या आर्य न कहलायेगा या काफ़र या नास्तिक होगा। उन्होंने तो यही उपदेश किया कि वेद के उपदेश से अपना कर्तव्य पालन करो।

दूसरी विशेषता वैदिक धर्म में यह है कि वैदिक धर्म ज्ञान का भण्डार है। वेद उपदेश करता है कि तुम ज्ञान के द्वारा ही मोक्ष और आनन्द का जीवन प्राप्त कर सकते हो। परन्तु शेष सब मतमतान्तर अन्ध विश्वास का उपदेश करते हैं। जो कोई शक करेगा वह काफ़र है। यदि आप शंका करें कि चांद के दो उङ्गली के द्वारा दो टुकड़े नहीं हो सकते या कि कोई मरा हुवा मनुष्य तीन दिन के पश्चात् क़बर से उठकर आकाश पर नहीं जा सकता तो आपको फौरन काफ़र के शब्द से सम्बोधित किया जावेगा। परन्तु वैदिक धर्म शिक्षा देता है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना

चाहिये। सब काम सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहियें। आर्य समाज के पहिले नियम में विद्या से ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता बतलाई गई है। यह विशेषता किसी मत में नहीं पाई जाती। अतः जहाँ संसार के अन्य मतमतान्तरों ने अन्ध विश्वास ईमान को सबसे ऊंचा दर्जा दिया, वैदिक धर्म ज्ञान अर्थात् विद्या प्राप्ति को ही प्रभुत्व देता है। मनुष्य का पशुओं से भेद भी इसी बात में है कि पशु विद्या और ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकते। मनुष्य ज्ञान के द्वारा अपने दुःखों, क्लेशों और कष्टों को निवारण कर सकता है।

तीसरे–वैदिक धर्म में तीसरी विशेषता यह है कि वह ईश्वरी ज्ञान को सम्पूर्ण बताता है। चूंकि परमात्मा सत्य और सम्पूर्ण है इसलिये इसका ज्ञान भी सत्य और सम्पूर्ण होना चाहिये। इसमें विकाश और परिवर्तन नहीं हो सकता। परन्तु अन्य मतमतान्तर वाले कई उपदेशों को बताते हैं कि वे रद्द हो गये और उनके स्थान में ईश्वर ने नया उपदेश किया। ईसाई लोग मूसा के उपदेशों को रद्द करते हैं और इन्जील में ईसा के उपदेशों को अनुकरणीय बताते हैं। मुसलमान हज़रत मौहमद के उपदेशों को जो क़ुरान में हैं सच्चा कहते हैं। इसमें भी कई उपदेश जो ईश्वर की तरफ़ से आये पीछे रद्द किये गये और कई आयात (उपदेशों) के सम्बन्ध में कहा जाता है कि शैतान ने हज़रत मौहमद की ज़बान पर डालीं जो पीछे ज्ञान होने पर रद्द करदी गईं। परन्तु वैदिक धर्म का निश्चय है कि ईश्वर का

वाक्य सत्य और सदैव समान है। कोई मनुष्य कितना ही विद्वान क्यों न हो जावे कभी सत्य में परिवर्तन नहीं कर सकता। दो और दो मिलकर हमेशा चार ही रहेंगे। इसलिये ईश्वरीय ज्ञान में न तो विकास होता है न परिवर्तन और वह सदा से एक दशा में है। यह विशेषता केवल वेद में पाई जाती है।

चौथी विशेशता वैदिक धर्म में यह है कि इसमें ईश्वर का स्वरूप सम्पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। मतमतान्तरों ने ईश्वर का स्वरूप अपने मन घड़न्त विचारों से बनाया है। तौरेत और बाइबिल में ईश्वर को मनुष्य के समान चलने फिरने वाला और वार्तालाप करने वाला वर्णन किया है। वहां साथ ही ईर्षा द्वेष से भरा हुआ, बदी का बदला लेने वाला भी वर्णन किया है। किसी ने ईश्वर को सातवें आकाश पर किसी ने चौथे पर बैठाया है। परन्तु वेदने ईश्वर के गुण ऐसे सम्पूर्ण विशाल विस्तृत किये हैं जो किसी मतमतान्तर में नहीं पाये जाते। आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर का स्वरूप तथा गुण यों वर्णन किये हैं। ईश्वर सच्चिदानन्द (सत्य-चित-आनन्द) निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अजर, अमर, नित्य, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वान्तरयामी, अनन्त, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है अस्तु ईश्वर के ऐसे विशाल स्वरूप को किसी मतमतान्तर ने वर्णन नहीं किया। यह वैदिक धर्म की ही विशेषता है कि जिसने ईश्वर का सम्पूर्ण स्वरूप जो विज्ञान तथा बुद्धिअनुकूल है वर्णन किया है।

(५) तमाम मतमतान्तर साइन्स (विज्ञान-पदार्थ विद्या) फ़िलसफ़ा (तत्वज्ञान) को मत से पृथक मानते हैं इसका विरोध करते हैं और कहते हैं कि इनका मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं। किन्तु विज्ञान और तत्वज्ञान के नेताओं और संचालकों को मज़हब के नाम पर वध किया गया गया और कड़े दण्ड दिये गये। परन्तु वैदिक धर्म की विशेषता यह है कि वह विज्ञान और तत्वज्ञान को धर्म के अंग प्रत्यङ्ग मानता है। वेद के अर्थ ज्ञान के हैं और ज्ञान में साइन्स व फ़िलासफी सब सम्मिलित हैं। ऋगवेद में सब पदार्थों का ज्ञान है। यजुर्वेद में कलाकौशल का ज्ञान है। अथर्वेद में साइंस आदि सब ज्ञान हैं। फिर इनके साथ चार प्रकार की साइन्स का नाम उपवेद है अर्थात् आयुर्वेद मैडिकल साइन्स (Medical Science) का प्रतिनिधि धनुर्वेद, शस्त्र विद्या का (Military Science) अर्थ वेद (Political Economy) का और सामवेद रागविद्या का प्रतिनिधि हैं। ऐसा ही तत्वज्ञान के ग्रन्थों का नाम दर्शनशास्त्र है और यह वेद के अंग कहलाते हैं। इनका नाम दर्शन ग्रन्थ इसलिये है कि इनके द्वारा हम ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं अर्थात् इसकी प्राप्ति कर सकते हैं। अस्तु वैदिक धर्म ने साइंस (विज्ञान) का कभी विरोध नहीं किया। परन्तु ईसाई और इस-लाम मत का सारा इतिहास साइन्स वालों को कष्ट देने इनका रक्त बहाने और खून की नदियां बहाने से भरा पड़ा है।

(६) वैदिक धर्म में छटी विशेपता यह है कि यह संसार

का उपकार करना सिखाता है वैदिक धर्म कहता है कि सब प्राणियों को मित्रता की दृष्टि से देखो। संसार को अपना कुटुम्ब समझो। हर एक मज़हब में इसके अनुयाइयों के साथ रियायत और सहायता करने की हिदायत है। मुसलमानों में मोमिन तो भाई हैं उनकी सहायता करो दूसरे काफ़िर हैं इनसे घृणा करो इन्हें लूटना मारना पुण्य है और इन्हें क़तल करने से स्वर्ग की प्राप्ति है। ईसाईयों में भी जो ईसा के अनुयाई नहीं इन्हें (heathen) या जंगली लिखा है। ईसा स्वयं कहता है कि मैं मोती कुत्तों के सामने फेंकने नहीं आया अर्थात मेरा उपदेश केवल इसराईल की सन्तान के लिये है न कि अन्य लोगों और जातियों के वास्ते। मगर वैदिक धर्म में संसार के उपकार में हर मतमतान्तर भिन्न २ जातियों और देशों के मनुष्य मात्र ही सम्मिलित नहीं हैं। किन्तु तमाम पशुकीट पतंग आदि सब सम्मिलित हैं। जहां अन्य मतमतान्तरों में पशुओं को मारकर खाना जायज़ है ईश्वर के नाम पर मुसलमानों की क़ब्र पर लाखों पशु तड़पा तड़पा कर कुरबान किये जाते हैं। ईसाई लोग मांस को अपनी ईश्वरी वस्तुओं में सम्मिलित करके गिरजा में यह रस्म अदा करते हैं और इस तरह से ईश्वर के नाम पर लाखों पशुओं की गर्दन पर छुरी फेरी जाती है। अमेरिका में तो अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये २४ करोड़ पशुओं को प्रति वर्ष वध किया जाता है, मछलियां और अन्डे इनके अतिरिक्त हैं जो प्रति दिन खाये जाते हैं।

मनुष्य स्वार्थ के लिये कितनी निर्दयता का अपराधी बन रहा है परन्तु वैदिक धर्म तो शिक्षा देता है कि संसार के तमाम प्राणियों से प्रेम करो। इनको अपना मित्र समझो और इस लिये उपदेश करता है कि प्रति दिन अपने नित्य कर्म में बलिवैश्व यज्ञ को करो अर्थात पशु पक्षियों, कीट, पतंग आदि को भोजन दो और अन्य मनुष्यों की पालना और रक्षा करने के लिये पितृ यज्ञ और अतिथि यज्ञ का करना आवश्यक बताया गया है। अतः वेद की यह शिक्षा संसार में अमन और शान्ति स्थापित करने का अमली (Practical) साधन है जो किसी मतमतान्तर में नहीं। बुद्धमत ने अहिंसा परमो धर्मः का उपदेश किया था परन्तु आज इसके अनुयाई ब्रह्मा, चीन, जापान में सर्व भक्षी बने हुये हैं और कहते हैं कि हम तो हिंसा नहीं करते। हिंसा और लोग करते हैं। हमतो बाज़ार से मांस लाते हैं जैसे चावल और आलू। बुद्ध ने हिंसा न करने की आज्ञा दी है न कि मांस खाने का निषेध किया है परन्तु वैदिक धर्म तो तमाम प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने और उनसे प्रेम करने की आज्ञा देता है जो कि इसका विशेष गुण है।

(७) वैदिक धर्म संसार के उपकार में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की हिदायत करता है। अपना शरीर हृष्टपुष्ट बनाना इसके साधन, ब्रह्मचर्य पालन करना, व्यायाम करना, निरामिश भोजन करना, प्राणायाम आदि क्रीड़ा करना, शुद्ध वायु भक्षण करना, अग्नीहोत्र करना ऐसी उत्तमता से

विस्तृत करके उपस्थित करता है कि आपको किसी मत-मतान्तर की पुस्तकों में ऐसे उपदेशों का वर्णन नहीं मिलेगा। गोया शारीरिक शिक्षा को धर्म का अंग और संसार का उपकार करने में सम्मिलित किया गया है चूंकि भिन्न भिन्न व्यक्तियों के समूह का नाम ही जाति और मनुष्य मात्र बनता है कोई मनुष्य या जाति आरोग्यता के विना उन्नति नहीं कर सकती। उपनिषदों में यहां तक उपदेश मिलता है कि बलहीन मनुष्य ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता और प्रार्थनायें ऐसी मिलती हैं कि परमात्मा तू बलवान है हमें भी बल दे तू वीर जवान है हमें भी वीरत्व दे। यदि हिन्दू जाति वेद के उपदेश पर अपना कर्तव्य पालन करती तो आज इस अधोगति को प्राप्त न होता। साथ में सामाजिक उन्नति को भी संसार के उपकार में सम्मिलित किया है गोया जब तक हम परस्पर संगठन न करें परस्पर, प्रेम सेवा और एक दूसरे को लाभ पहुंचाने के काय न करें सामाजिक उन्नति नहीं कर सकते। आहा वेद में कैसे साम्यवाद की शिक्षा है यही कारण है कि बोलशेविज्म और सोशलिज्म की शिक्षायें असफलता को प्राप्त हुईं क्यों कि वैदिक सिद्धांतों के विरुद्ध थीं परंतु सामाजिक उन्नति के साधन वेद में ऐसी निश्पक्षता और सरलता से दर्शाये हैं कि इन पर कर्तव्य पालन करने और उद्यत होने से हम संसार को स्वर्गधाम बना सकते हैं।

(८) आठवीं विशेषता यह है कि मनुष्य को अपनी उन्नति

पर सन्तुष्ट न होना चाहिये किन्तु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये। चूंकि परमात्मा ने मनुष्य को Inter-dependent being) (एक दूसरे के आश्रय पर रहने वाला) उत्पन्न किया है। पशुओं के समान व्यक्तिगत जीवन नहीं रखता किन्तु प्रत्येक मनुष्य समाज का अंग है। युरोप और अमेरिका में जो वर्तमान समय में शान्ति लोप हो गई है और एक दूसरे को नष्ट करने और वध करने पर तुले हुये हैं इसका कारण यही है कि वह केवल अपने देश और जाति की उन्नति चाहते हैं परन्तु यह नहीं अनुभव करते कि दूसरों की उन्नति के साथ ही हमारी उन्नति हो सकती है यह केवल वैदिक धर्म की विशेषता है जो कि अपनी निज की उन्नति को संसार भर की उन्नति का अंग बनाता है और इसने वैदिक संस्कृति में संसार को एक कुटुम्ब माना है और सब मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं।

(६) किसी मज़हब में ईश्वर के साथ सम्बन्ध का वर्णन साधारणतया तमाम मतमतान्तर मृत्यु के पश्चात मनुष्य को प्राकृतिक प्रलोभन का ही लोभ देते हैं। मुसलमान कहते हैं कि मुसलमानों को बहिश्त मिलेगी। जहां हूरें (अपसरा) और पवित्र शराब और फल आदि सामान विषयभोग के होंगे। ईसाई मत में ईसाइयों के सर स्वर्ण का मुकुट होगा और ईसा के दक्षिण हाथ वैठने का अवसर मिलेगा। न मानने वाले हमेशा के लिये महा घोर नरक में जावेंगे। ऐसा ही अन्य मतों

वाले कोई गोलोक, कोई ब्रह्मलोक, कोई इन्द्रलोक में ले जाते हैं। परन्तु वैदिक धर्म की विशेषता यह है कि वह जीवात्मा को परमात्मा से मिलाता है जिसका साधन योग है। इसीलिये कवि कहता है—

हर जगह मौजूद है, पर वह नज़र आता नहीं।
योग साधन के बिना, कोई उसे पाता नहीं॥

अतः ईश्वर प्राप्ती का कोई वर्णन करता है तो वेद ही करता है। अन्य मतवाले अंध विश्वास पर निर्भर हैं। वैदिक धर्म ज्ञान और योग साधन पर।

(१०) अन्य मतमतांतरों का आधार ईमान और संचालकों और परमात्मा की इच्छा पर मनुष्य का मोक्ष है अर्थात् परमात्मा जिसे चाहे क्षमा करे। ईसा या मोहमद साहब जिसके लिये सिफ़ारिश करे उसके पाप क्षमा होंगे। परंतु वैदिक धर्म में न्याय और पूर्ण न्याय है। कर्मों का फल अवश्य मिलेगा। इस लिये पुनर्जन्म का सिद्धान्त अद्भुत है कि अपने कर्मों का फल भोगने के लिये भिन्न भिन्न योनियों में जाना पड़ेगा। परमात्मा न्यायकारी है इसलिये प्रत्येक मनुष्य के साथ एक समान न्याय करेगा। यदि वह किसी मनुष्य संचालक या जाति की रियायत करे तो वह पक्षपाती कहा जावेगा।

(११) वैदिक धर्म में मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन 'सामाजिक जीवन पूर्णता से प्रगट किया गया है अर्थात् पहिले भाग को ब्रह्मचर्य आश्रम कहते हैं। मनुष्य के इस भागमें उसे विद्या,

तप और जितेन्द्रिय रहने का उपदेश है। दूसरे भाग का नाम ग्रहस्थ आश्रम है। इसमें दुनियावी कार्य करना, विवाह करके उत्तम सन्तान उत्पन्न करना, इसकी पालना करना, धन कमाना नेक कामों में लगाना, अधिकारियों को दान करना। तीसरे भाग का नाम वानप्रस्थ आश्रम है। अब दुनियावी कार्य को छोड़कर तप और विचार का जीवन व्यतीत करना। चौथे भाग का नाम सन्यास है। जीवन के इस भाग में त्याग, तप, सर्व उपकार, ईर्षा द्वेष रहित होकर निष्कामभाव से सब का हित चाहना। मनुष्य जीवन को कैसी उत्तमता से सम्पूर्ण बनाने का उपदेश है। जैकोलेट महोदय ने हमारे धर्म ग्रन्थ पढ़कर उस का तात्पर्य इन शब्दों से संकुचित किया है—

(1) To live is to learn. (2) To live is to love. (3) To live is to labour. (4) To live is to let live.

न केवल वैदिक धर्म मनुष्य के अपने जीवन को सम्पूर्ण बनाने की शिक्षा देता है परन्तु मनुष्य मात्र (सोसाइटी) को भी सम्पूर्ण ढंग से ऐसा विभाजित करता है कि तमाम मनुष्य मात्र अमन और शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सकें। इस प्रकार मनुष्य मात्र के चार भाग बनाते हैं। एक भाग को ब्राह्मण कहा है जिसका काम शिक्षा देना, उपदेश करना, नया आविष्कार करना और निष्कामभाव से विद्या द्वारा उपकार करना है। दूसरे भाग का नाम क्षत्री है जिसका उद्देश्य देश, जाति, मनुष्य, दुर्बल अनाथों, विधवाओं आदि सब की रक्षा

करना है। मनुष्य मात्र को अत्याचारों और अन्याय से सुरक्षित करना है। तीसरे भाग का नाम वैश्य है जिसका उद्देश्य व्यापार, कलाकौशल, कृषि, गऊ पालन आदि से धन पैदा करना, देश को समृद्धिशाली बनाना, दान करना और धन के द्वारा ब्रह्मचारियों, सन्यासियों और गरीबों की रक्षा और पालन करना है। चौथे भाग का नाम शूद्र है जो दो प्रकार के हैं। एक तो परिश्रमी। दूसरे वह जो हाथों के द्वारा घरेलू धन्धे और दस्तकारी को उन्नत करें जिनका मुख्य उद्देश्य सेवा करना हो मनुष्य मात्र के जीवन में अमन और शांति स्थिर रखने के लिये यह उत्तम विधि और प्रणाली है जो किसी मत में नहीं मिलती। अतः वैदिक धर्म में तप, त्याग, भोग, पुरुषार्थ, सदाचार, हर प्रकार की शिक्षा है। परन्तु हर एक के लिये समय और देश काल आदि सबका ध्यान रखना पड़ता है। कैसी उत्तमता और विशेषता पाई जाती है।

(१२) वैदिक धर्म आत्मिक और अध्यात्मिक ज्ञान और संसारिक ज्ञान की शिक्षा देता है। वेद में गाथायें, इतिहास, मिथ्या कथायें, देवमाला आदि नहीं। जैसे कुरान शरीफ़ में हज़रत मूसा, इब्राहीम आदि के क़िस्से, हज़रत मौहमद के युद्ध और बीवियों का वर्णन है। इस प्रकार तौरेत और अन्जील में पैगम्बरों के जीवन चरित्र और इनके इतिहासों का वर्णन है। वेद में तो ऐसे ज्ञान का ही वर्णन है जो मनुष्य को प्राकृतिक, आत्मिक और अध्यात्मिक सुख देने वाला है। इसलिये वेद

क़िस्से कहानियों से पृथक केवल हर प्रकार के ज्ञान का भंडार और कोष है।

(१३) वेद में सत्य और सदाचार को प्रधानत्व दिया गया है। जिसका आचरण अच्छा नहीं वह धर्मात्मा नहीं बन सकता। मुसलमान कहते हैं कि एक व्यक्ति जो शराब पीता है व्यभिचार करता है, जुआ खेलता है अन्य दुराचार करता है स्वर्ग में जा सकता है क्यों कि वह हज़रत रसुल पर ईमान रखता है। ईसाई कहते हैं कि तुम्हारे पापों का घड़ा हज़रत ईसा उठालेगा और तुम्हें बचा लेगा परन्तु वैदिक धर्म की विशेषता इसमें है कि जो मनुष्य सदाचारी है वही परमात्मा तक पहुंच सकता है गोया धर्म नाम है सत्य और सदाचार और सत्य व्यवहार का।

(१४) अन्य मतमतान्तर वाले ईश्वर का ज्ञान कुछ समय से मनुष्य को मिला है ऐसा वर्णन करते हैं; जैसे कुरान का उपदेश संसार में १३५७ वर्षों से और ईसा का उपदेश १६४० वर्ष से, यहूदियों का तौरेत ३५०० वर्ष से मूसा को मिला। परन्तु इस से पूर्व भी मनुष्य थे। वह बिना ज्ञान के क्या करते थे? इसलिये इससे भी पहिले मनुष्य परमात्मा के प्यारे थे। इसने इनको कोई ज्ञान दिया होगा। इसी का नाम वेद है। इस लिये मैक्समूलर अपनी पुस्तक Science of Religion धर्म की विद्या में स्पष्ट लिखता है—

If there is a God who has created heaven and earth, it will be unjust on his part if he

deprives millions of souls born before Mosses, of his divine knowledge. Reason and comparative study of religious declare that God gave His Divine knowledge to mankind from his first appearance on earth".

अर्थात् यदि ईश्वर ने जिसने पृथ्वी आकाश मनुष्य उत्पन्न किये तो वह अन्याय का दोषी होगा यदि मूसा से पहिले जो लाखों मनुष्य उत्पन्न किये इन्हें अपने ज्ञान से वञ्चित रखे। युक्ति और न्याय यह मानता है कि जैसे मनुष्य ने संसार में प्रवेश किया तब से परमात्मा ने उसे अपना ज्ञान भी दिया। इसलिये जेकोलेट महोदय भी वेद को ज्ञान का अनादि शब्द (word of eternal wisdom) स्वीकार करता है। अतः वेद की विशेषता यह है कि वह अनादि ज्ञान है और मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही यह ज्ञान मनुष्य को प्राप्त होता है।

(१५) वेद की विशेषता यह है कि वह परमात्मा को नियम पूर्वक कार्य करनेवाले सबको नियम की शृङ्खला में बंधित करने वाला मानता है अर्थात् युक्ति और तर्क को ऊंचा दर्जा देता है। इसलिये करामात मोज़ेज़ (Miracles) या सृष्टि नियम के विरुद्ध किसी कार्य को नहीं मानता। ईश्वर के सर्वशक्तिमान के अर्थ यह हैं कि वह अपने कार्य करनेमें किसी सामग्री या शक्ति पर निर्भर नहीं किन्तु उनके करने में स्वतंत्र है। अस्तु वेद स्वतंत्रता का उपदेश देता है। इस प्रकार से वैदिक धर्म में और भी कई विशेषतायें हैं। परन्तु मैंने यहां केवल १५ ही बातों पर

इसे समाप्त कर दिया है। अस्तु वैदिक धर्म का उद्देश्य मनुष्य को पुरुषार्थ, उन्नति करने, समृद्धिशाली बनने, पवित्रता का जीवन व्यतीत करने, उपकार, प्रेम, शान्ति और स्वतंत्रता का जीवन सम्पूर्ण करने और अन्त में मोक्ष प्राप्ति का उपदेश करता है अर्थात् Progress, Piety, Purity, Peace, Practical life and Perfection की शिक्षा देता है।

व्याख्यान ३

वास्तविक धर्म और उसके अंग प्रत्यंग

जनता ने धर्म के महत्व को पूर्ण तौर से नहीं समझा और मज़हब के जाल में फंसकर धर्म से बेमुख हो गये हैं। मगर मनुष्य वास्तव में धर्म के बिना क्षण भर भी नहीं रह सकता। क्योंकि कणाद जी ने वैशेषिक शास्त्र में धर्म का लक्षण वर्णन किया है कि जिससे हमारा संसार में और मरने के पश्चात् कल्याण हो। अब संसार में बताइये कौन मनुष्य है जो अपना कल्याण (सुख और शान्ति) नहीं चाहता। लोग सम्प्रदायिक झगड़ों में फंसकर धर्म के वास्तविक और मूल गौरव को भूल गये हैं। परमात्मा ने संसार में शब्दचार को बहुत महत्वपूर्ण बनाया है। देखो यह सारा जगत चार वस्तुओं पर निर्भर है।

अर्थात् आग, मिट्टी, हवा, पानी चार भूत ही सृष्टि का आधार है। (३) ज्ञान भी चार प्रकार का है (अध्यात्मिक, आत्मिक, प्राकृतिक, अधिदैविक) (४) ज्ञान के पुस्तक भी चार हैं जो चार ऋषियों को प्राप्त हुये (५) काल भी चार हैं (भूत, वर्तमान, भविष्य, अनादि) (६) हमारी अवस्था भी चार हैं (जागृत, सपना, सुषुप्ति, तुरया) (७) जीवन की अवस्थां भी चार हैं (बालक, नवयुवक योवन, वृद्ध) (८) चार आश्रम (९) चार वर्ण (१०) भक्ति चार प्रकार की है (देश भक्ति, जाति-भक्ति, राज्य भक्ति अर्थात् राज्य नियमों की पाबंदी, ईश्वर भक्ति (११) धर्म चार प्रकार का है (सामान्य, विशेष, अपित काल, परम धर्म) (१२) मनु के अनुसार धर्म के चार लक्षण हैं (श्रुति, स्मृति, सदाचार, जो परमात्मा को प्रिय लगे) (१३) जैसे मनुष्य शरीर के चार अङ्ग हैं यानी सर, बाज़ू, पेट, टाँग और पांव ऐसे ही धर्म के भी चार अङ्ग हैं अर्थात् धर्म का पहिला अङ्ग ज्ञान है जैसे सर या मुख के चार भाग हैं पिछला हिस्सा, दिमाग, पेशानी और मुख वैसे ही धर्म के पहिले अंग ज्ञान के चार भाग हैं अर्थात् शिक्षा, स्वाध्याय, विचार (खोज और तर्क), उन्नति (२) जैसे शरीर का दूसरा अंग बाहु है जो बल का प्रतिनिधि है ऐसा ही धर्म का दूसरा अंग बल है। जैसे बाज़ू के चार भाग हैं उङ्गलियां, कलाई, उडक और शाना, वैसे ही धर्म के दूसरे अंग बल के भी चार भाग हैं अर्थात् संगठन (उङ्गलियों को संगठित करने से ही उङ्गलियों या मुट्ठी में बल उत्पन्न

होता है। उङ्गलियों के जुदा रखने से बल पैदा नहीं होता)। सेवा हाथों का काम है दूसरों की सेवा करना) तीसरा काम करना अर्थात् दस्तकारी, काश्तकारी आदि तमाम पुरुषार्थ हाथ से किये जाते हैं। चौथा रक्षा करना दुर्बल, अनाथ, आर्त और अपने शरीर की। अतः संगठन, सेवा, रक्षा करना और कर्म करना यह धर्म के दूसरे अंग हैं। तीसरा अंग शरीर का पेट है जिसके दो भाग हैं यानी पेट और सीना। पेट का काम खाना पचाना और शेष तमाम अंगों को पहुंचाकर उपकार करना अर्थात् स्वार्थ न करके अपने पास न रखना किन्तु नाक, आंख, कान, सर, हाथ और पाँव सबको पहुंचाना। सीने के अन्दर दो चीज़ रहती हैं प्रेम और दया। ऐसा ही धर्म का तीसरा अंग यज्ञ है जिसके चार प्रत्यंग हैं गुणग्राही होना, उपकार करना, प्रेम और सब पर दया करना। शरीर का चौथा भाग पाँव है जो तप का प्रतिनिधि है। इसके भी चार भाग हैं और पांव भी चार गुण के प्रतिनिधि हैं अर्थात् पुरुषार्थ (चलना फिरना पुरुषार्थ पाँव से ही है) तप जैसे तप न पांव पादय। किसी से नम्रता प्रगट करनी हो तो उसके पाँव पर सर झुकाते हैं। चौथा पवित्रता और सदाचार के प्रतिनिधि हैं जैसे कहते हैं कि महाराज अपने पदार्पण से हमारा चौका या घर पवित्र करो। गोया धर्म के चौथे अंग सदाचार में चार प्रत्यंग हैं पुरुषार्थ, तप, नम्रता और पवित्रता। अतः अब धर्म के अंग प्रत्यंग निम्नलिखित हुयेः—

अंग	प्रत्यंग
१–ज्ञान	शिक्षा, स्वाध्याय, विचार (तर्क), उन्नति।
२–बल	आत्मिक, सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक बल (रक्षा करना, संगठन करना, सेवा करना, कर्म करना)
३–यज्ञ	गुण ग्रहण करना (निन्दा न करना), उपकार करना, प्रेम और दया करना।
४–सदाचार	पुरुषार्थ, तप, नम्रता (श्रद्धा भक्ति) और पवित्रता

इसी को सोलहकला कहते हैं कृष्ण भगवान में यह सब गुण थे इसलिये इन्हें सोलहकला सम्पूर्ण कहा जाता है। इस लिये वह योगीश्वर और धर्मात्मा थे।

स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के धार्मिक सम्मेलन में कहा था कि धर्म केवल मन्तव्य में नहीं है बल्कि कर्तव्य पालन में हैं Religion does not lie merely in creeds and conventions but lies in being and becoming. स्वामी दयानन्द जी धर्म की व्याख्या करते हैं कि जो पक्षपात रहित न्याय सत्य को ग्रहण असत्य का त्यागरूप आचरण है इसी का नाम धर्म इसके विपरीत अधर्म है। मनु महाराज ने धर्म के १० लक्षण वर्णन किये हैं अर्थात् धृति, क्षमा, दमन करना, चोरी न करना, सफ़ाई रखना, इन्द्रियों को वशीभूत करना, वेद के ही अनुकूल कार्य करना, विद्या में मन लगाना, सत्य व्यवहार करना, क्रोध न करना।

अतः वह कौन मनुष्य है जो धर्म के ऊपर वर्णित सोलह प्रत्यंग के बिना अपना जीवन व्यतीत कर सकता है या इन्हें

पसन्द न करता हो। हरएक जाति और मनुष्य की प्रबल इच्छा होती है कि सोलह गुणों से लाभ उठाये। इसलिये धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य मात्र के लिये स्वीकृत करने योग्य है। मनु महाराज ने धर्म के लक्षण क्रियात्मक वर्णन किये हैं। कणाद जी ने अध्यात्मिक और जैमिनी ऋषि ने स्वाभाविक अर्थात् सृष्टि नियम अनुकूल वर्णन किये हैं। मज़हब मनुष्य कृत होने से कृत्रिम है और भिन्न भिन्न परस्पर विरोधी होने से घृणित हो गया है। धर्म के लक्षण सब देश जाति और भिन्न प्रकृति के मनुष्यों के लिये समान और धारण करने योग्य हैं। मज़हब के मन्तव्य सब के लिये धारण करने योग्य नहीं। जैसे काफ़रों का लूटना और क़त्ल करना। धर्म में सदाचार आवश्यक है मज़हब में नहीं। धर्म मनुष्य के भीतर मनुष्यत्व फूंकता है। मज़हब पशुत्व डालता है। धर्म ईश्वर से मनुष्य का सीधा सम्बन्ध जोड़ता है मज़हब केवल ईमान को मुख्य रखता है। धर्म से जीवन परिवर्तन होता है, मज़हब से अंधा-धुन्ध विश्वास अधिक होता है। धर्म मनुष्य को स्वतंत्रता देता है, मज़हब मनुष्य को परतंत्र बनाता है। धर्म त्याग और उपकार सिखाता है, मज़हब पशुवध और भोग वाला। धर्म प्राणी मात्र से प्रेम सिखाता है, मज़हब अपने अनुयाइयों से सहानुभूति सिखाता है। धर्म एकता मज़हब सम्प्रदायिकता सिखाता है। धर्म एक ईश्वर की पूजा मज़हब साथ ही संचालक की पूजा अस्तु।

धर्म का आधार	मज़हब का आधार
१–शिक्षा, स्वाध्याय, तर्क, उन्नति	१–ईमान, अंधाधुन्ध विश्वास, अक़्ल को दखल नहीं, मनुष्य के द्वारा स्वर्ग प्राप्ती।
२–बल (आत्मिक, सामाजिक, शारीरिक) रक्षा, संगठन, कर्म करना, सेवा करना।	२–शारीरिक बल जिहाद और दूसरों को क़त्ल करने के लिये न कि रक्षा के लिये। आर्थिक बल दूसरों को लूटने के लिये और हिस्सा खुदा के नाम पर देने के लिये न कि दान और उपकार के लिये। सामाजिक बल दूसरी जातियों को नष्ट करने और जबरन अपने मज़हब में लाने के लिये। आत्मिकबल की दूसरे मज़हब में ज़रूरत ही नहीं यदि है तो दूसरों को तबाह करने के लिये
३–उपकार, सत्य ग्रहण करना, दया, प्रेम धर्म के चिन्ह हैं।	३–मज़हब के चिन्ह–बाहरी अलामत, तिलक लगाना, स्लीब लगाना यानी दाढ़ी रखना आदि चिन्ह हैं।
४–नम्रता, पवित्रता, तप और पुरुषार्थ धर्म के विशेष अंग हैं।	४–जो अपने २ सम्प्रदाय के चिन्ह नहीं रखता वह अपने अनुयाइयों की दृष्टि में घृणित और धर्म पर चलने वाला नहीं।

मज़हब में सदाचार के स्थान में पैग़म्बर या गुरू या संचालक पर पूर्ण विश्वास रखना गोया मानसिक दासता, पवित्रता के स्थान में अंधभक्ति। पुरुषार्थ, तप के स्थान में मिथ्या वैराग्य और ईश्वर या उसके दूत की इच्छा और सिफ़ारिश पर निर्भर है। इसलिये धर्म तो सबके धारण करने योग्य और मज़हब सबके त्यागने योग्य है। इसलिये जो मनुष्य धर्म के अंग प्रत्यंग पर कर्तव्य पालन करते हैं वही सच्चे अर्थों में धर्मात्मा या धर्म के अनुयायी हो सकते हैं। शेष सब सम्प्रदायिक झगड़े और वाद विवाद हैं।

व्याख्यान ४

युरोप और अमेरिका में गऊ पालन

जब से संसार में मनुष्य की उत्पत्ति हुई और जहाँ कहीं मनुष्य आबाद हुये मनुष्य के साथ गऊ उसकी आत्मिक, शारीरिक और मानसिक अवस्था का पालनपोषण करने के लिये और कुत्ता उसकी शारीरिक रक्षा करने के लिये चले आये हैं। गाय इंसान के लिये हर पहलू से मुफ़ीद और जीवन की रक्षा के लिये ज़रूरी भाग है। चुनांचे मैं इस व्याख्यान में निम्न लिखित दृष्टिकोण से कुछ बातें प्रगट करता हूं अर्थात् धार्मिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, शारीरिक और मानसिक दृष्टि से गाय कितनी उपयोगी है।

(क) धार्मिक दृष्टि से गाय की पूजा और पवित्रता प्राचीन समय में प्रत्येक जाति और देश में होती चली आई है।

(ख) पारसी धर्म में अब तक गाय की पूजा और सम्मान है। गाय को पवित्र समझते हैं। ज़िन्दावस्था में गोमेध यज्ञ को गोमेज़ यज्ञ कहा है। इससे तात्पर्य खेती करना और गऊ पालन करना लिया जाता है।

(ग) यहूदी मज़हब की धर्म पुस्तक ज़बूर अध्याय ५० आयत ४ में है "वह जो बैल वध करता है ऐसा पापी है जैसे एक मनुष्य का वध किया" अध्याय ६६ आयत ७-१० में लिखा है "मैं तेरे घर से बैल और बाढ़ से बड़ा न लूंगा क्यों कि जंगल के सारे पशु मेरे हैं क्या मैं बकरों का मांस खाता हूं और बैलों का रक्त पीता हूं।"

(घ) कुरान की सूरत उसरान में आता है "मुझे तुम्हारी कुरबानी नहीं पहुंचती केवल परहेज़गारी (त्याग और तप) पहुंचती है। सूरत यूसुफ़ का अनुवाद और व्याख्या मौहम्मद अशरफ लखनवी मौलाना ने इस प्रकार किया है।

"क्या हमने युसुफ़ को तुमसे जुदा तो समझा नहीं इसका बाइस क्या। मलिक ने कहा यह सबब इसका था कि गाय थी एक शख्स की बेबहा और एक उसका बच्चा था जो शीर खुवार। छुरी ले के याकूब ने एक वार किया सामने उसका बच्चा हलाल। हुवा उस घड़ी रंज उसको कमाल। नरहम याकूब ने कुछ किया। खुदा ने एवज़ उसके यह दुख दिया।

इसका तात्पर्य यह है कि याकूब से इसके पुत्र युसुफ़ का वियोग और अंधा होने का कारण यह है कि उसने किसी की गाय को लेकर गाय के बच्चे को उसके सन्मुख वध किया। ऐसे महान पाप के बदले ईश्वर ने उसे यह क्लेश और पुत्र वियोग दिया।

(ङ) मसीहा नबी की पुस्तक अध्याय १ आयत १० ईश्वर कहता है कि तुम्हारे वध किये हुये पशुओं से मुझे क्या काम। मेंडो को जलाकर पकाने की कुरबानी, मोटे बछड़ों की चरबी और बैलों का रक्त मैं नहीं पीता जब तुम प्रार्थना करोगे मैं तुम्हारी एक न सुनूंगा क्योंकि तुम्हारे हाथ तो लहू से भरे हैं।

२-ऐतिहासिक दृष्टि से (क) चालडिया नगर के खंडरात खोदने से ४३०० वर्ष पुरानी बैल की मूर्ति निकली है मन्दिर की दीवारों के पत्थरों पर गाय और बछड़ों के चित्र बने हुये और खुदे हुये पाये गये हैं इसी प्रकार असरीन, बैलोलनीन और हटी जातियों में भी गाय और बैल की पूजा हुवा करती थी जर्मनी के प्रसिद्ध पुरातत्व विद्या के निपुण महाशय स्पिस वर्ग लिखते हैं कि इन जातियों से पहिले भी आरमीनया, ईरान और टर्की में गाय की पूजा हुवा करती थी।

(ख) मिश्र में भी गाय की पूजा और सांड को देवता माना जाता था। देवी उईसिस के नाम पर गाय पवित्र समझी जाती थी उसी इस देवता के नाम पर बैल को पवित्र समझते थे। यहूदी और मिश्री लोग चांदी के बछड़े और सांड बनाकर उसकी पूजा करते थे।

(ग) बाबर बादशाह ने अपने पुत्र हुमायुं को एक पत्र वसीयत (स्वीकार पत्र) के तौर पर लिखा जिसका अनुवाद यह है "ऐ मेरे सुपुत्र अपने हृदय को पक्षपात और धार्मिक अंधविश्वास से पवित्र कर अर्थात् इनको हटा दे और हरएक मत के सिद्धान्तों के अनुकूल तैयार कर। विशेषकर गाय की क़ुर्बानी कदापि न करना। इसीसे हिन्दुओं को प्रभावित करेगा और प्रजा आपके ऐसे अहसान से गदगद प्रसन्न हो जावेगी।

(घ) अमीर काबुल की घोषणा १५ नवम्बर सन् १९२४ की। अफ़गानिस्तान की प्रजा को घोषणा दी जाती है कि इसलाम के बनाये उद्देश्य और विद्वानों के प्रस्तावों से यह आज्ञा दी जाती है कि इस राजधानी में गाय की क़ुर्बानी को बन्द किया जावे। इससे एक तो आर्थिक लाभ है दूसरे अन्य जाति के लोगों के दिल को ठेस न लगेगी। इसी प्रकार ६ जून १९०६ को अमीर अमानउल्ला ने देहली में जब शाही मस्जिद में ईद की नमाज़ पढ़ी तो गाय की क़ुर्बानी को बन्द किया।

(च) अकबर बादशाह ने १ जीउलहिज़ा सन् ९९५ हिजरी को गोकशी को बंद किया और हुक्म जारी कर दिया।

(छ) ३ जुलाई सन् १८०५ को लार्ड लेक के हुक्म से ब्रानफोर्ड साहब ने मथुरा में यह आज्ञा जारी की कि 'मथुरा और व्रज भूमि अत्यन्त पवित्र स्थान हैं यहां गाय की रक्षा और पालन आवश्यक है। इनको किसी प्रकार से हिन्सा न की जाय। इसलिये कोई क़ौम क़साब आदि मथुरा और इसके

इर्द गिर्द गोवध न करें। यदि कोई आज्ञा भंग करेगा तो उसे सख्त दण्ड दिया जावेगा। उसका यह अपराध कदापि क्षमा न किया जावेगा।

३–आरोग्यता और स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से (१) महोदय केनी (Keyne) अपनी पुस्तक गउवें समृद्धिशाली (Prosperity in Cows) में लिखते हैं कि दूध के एक प्याले में २॥ अन्डे, ४ औंस मांस, ८ औंस मटर के बराबर ताक़त है। दूध में प्रोटीन, रोगनयात, विटामिन, शक्कर, नमक, नाइट्रोजन तमाम चीज़ें जो मनुष्य की ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी हैं पाई जाती हैं।

(२) डा० मीचनकाफ़ प्रोफ़ेसर पासचर इन्सटीट्यूट फ्रांस अपनी पुस्तक मनुष्य की प्रकृति (Nature of Man) में लिखता है कि मनुष्य तीन सौ वर्ष तक ज़िन्दा रह सकता है यदि वह कुदरत के नियमों का पालन करे। मैं तमाम मनुष्यों को बलपूर्वक कहता हूं कि यदि दीर्घ आयु भोगना चाहते हैं तो वह दूध और उसके भाग मक्खन, दूध मलाई, लस्सी और पनीर को उपयोग में लाया करें।

(३) प्रोफेसर गेटी अपनी पुस्तक प्राचीन काल के ब्राह्मणों की बुद्धिमता (Wisdom of the Ancient Brahmans). में लिखता है कि क्या वजह है कि हम तीस वर्ष संस्कृत पढ़ने के बावजूद भी प्राचीन समय के ब्राह्मणों जैसे ग्रंथ रचना तो कहां इनके रचित ग्रन्थों को समझने की भी योग्यता नहीं रखते। आप ही उत्तर देता है कि उन्होंने दूध और फल पर

परवरिश पाकर सारा जीवन व्यतीत करके जंगल की शुद्ध वायु में बैठकर उन ग्रन्थों को रचा। हमारा भोजन मांस आदि वस्तुओं से तामसिक बना हुआ है। इसलिये हम इनकी बुद्धि-मत्ता को नहीं पहुंच सकते। वह सात्विक भोजन के उपयोग से मेधावी बुद्धि रखते थे।

(४) डा० हरज़न साहब कृषि विभाग का अध्यक्ष Director of Agriculture Department) अगस्त सन् १६३१ में मासिक पत्र कृषि में लिखता है कि दूध के उपयोग से आयु बढ़ती है और जीवन नाशककृमि नष्ट होते हैं। चुनाचे जिन देशों में दूध का उपयोग है वहां मृत्यु का नक़्शा निम्नलिखित है। मृत्यु प्रति सहस्र—

(क) इंगलिस्तान १२'५, फ्रांस ११'८, जर्मनी १३, अमरीका १५, जापान १४, न्यूज़ीलैंड ७, बल्गेरिया ६, हिन्दुस्तान ३१। सबसे अधिक मृत्यु भारत में ही है।

(ख) आयु का माध्यम-चूतानिया ५.७ वर्ष, अमरीका ५४, फ्रांस ५०, जर्मनी व जापान ४५, न्यूज़ीलैंड ६०, भारत २४ वर्ष कभी भारत में आयु सौ वर्ष और इससे भी अधिक होती थी अब २४ वर्ष भी मुश्किल से रह गई है।

(ग) बच्चों की मृत्यु प्रति सहस्र-अमरीका २७, इन्गलिस्तान ५८, इटली ७८, फ्रांस ८५, जर्मनी १०८, न्यूज़ीलैंड ११ और भारतवर्ष में १६४ है।

(घ) १०० वर्ष से अधिक आयु के मनुष्यों की संख्या;

बल्गेरिया जहाँ दूध दही का उपयोग सब देशों से अधिक है १३५० मनुष्य सौ वर्ष सेअधिक बड़े हैं. न्यूज़ीलैंड में ६१५, इंगलिस्तान १४६, रूस ४२१, अमरीका ३१५, भारत जिसकी आबादी ३५ करोड़ से अधिक है ८१८ है।

(५) हापकिन साहब आविष्कार कर्ता टीका ताऊन कहते हैं कि गाय का घी प्रयोग करने से ताऊन के कीटाणु मर जाते हैं। इसलिये ताऊन के दिनों में प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः दो चमचा खालिस गाय का घी स्तैमाल करने से ताऊन नहीं होता।

(६) औषध के तौर पर (अज़ मखज़नउल अदूवियात) गाय का दूध शीघ्र पाचन शक्ति वाला, वीर्य उत्पादक, रक्त शोधक, हृदय व दिमाग को पुष्टि देने वाला, शीतलता उत्पन्न करने वाला है। शरीर को मोटा व सुन्दर बनाता है। सीने के रोगों को निवारण करता है।

(ख) तहफतुल मोमीन पुस्तक में लिखा है कि कुष्ट रोग के लिये दूध लाभदायक है। आयु वर्धक और जिगर को पुष्टि देता है।

(ग) बुअलीसेना प्रसिद्ध वैद्य यूनान लिखता है कि गाय का दूध पाचन शक्ति वर्धक, तीव्र बुद्धि करने वाला, मिर्गी सूज़ाक और पाण्डु रोग के लिये अत्यन्त लाभदायक है और शरीर को सुडौल, सुन्दर बनाता है।

(घ) पुस्तक आरोग्यता और बल (Health & Strength) में आया है कि गाय का दूध सम्पूर्ण भोजन है। विषनाशक, शरीर

के अंगों के दर्द को हटाता है और जुकाम के लिये लाभदायक है।

(च) हदीस में आया है कि गाय का दूध सब से अच्छा भोजन है। मक्खन सब से उत्तम औषधि है और माँस रोग उत्पन्न करने वाला है।

(छ) मिरज़ा कादयानी ने अपने अखबार उलफ़ज़ल २७ अगस्त सन् १६२२ के अंक में लिखा कि मुसलमान विद्यार्थियों के मस्तिष्क की अवस्था ऐसी है कि वह विद्या प्राप्ति के लिये पूरे परिश्रम से काम नहीं लेते। इसका कारण अधिक माँस भक्षण है। उचित है माँस खाना छोड़ दें और नित्य स्नान किया करें। भैंस की अपेक्षा गाय का दूध पिया करें। प्रथम खलीफा कहा करते थे कि भैंस का दूध पीने से दिमाग़ और शरीर मोटे हो जाते हैं मगर गाय की आखें देखने से कुछ ऐसा मालूम होता है कि कुछ विचार कर रही हैं। यह बात स्पष्ट है कि जिस जानवर का गोश्त खाया जाता है उसके स्वभाव का प्रभाव भी पड़ता है। इस लिये इसलाम में दरिन्दों का गोश्त हराम कर दिया है जिससे उनके कुटिल स्वभाव का प्रभाव मनुष्य के दिल व मस्तिष्क पर न पड़े।

७—एक बार राममूर्ति ने विलायत में कहा था कि जो मल्ल योद्धा घी का अधिक उपयोग करते हैं वह मल्ल युद्ध में बहुत देर तक नहीं थकते। मांस खाने वाले जल्दी थक जाते हैं। इस लिये उसने यह घोषणा की थी कि यदि भारत से गऊ हत्या बन्द करदी जावे तो मैं अंजन को रोक दूंगा। अस्तु

गाय के दूध और घी से ही भारत विद्या, ज्ञान और शारीरिक बल में तमाम देशों का शिरोमणि था। अब दूध न मिलने से अधोगति को प्राप्त हो रहा है। दूध की कमी के कारण भारत में ५ सहस्र बच्चे प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं।

४—आर्थिक दृष्टि से देखा जाय तो भी गाय अत्यन्त लाभदायक और उपयोगी है।

(१) महोदय स्मिथ साहब अध्यक्ष कृषि विभाग लिखते हैं कि गो वध से भारत को प्रतिवर्ष १८ करोड़ रुपये की हानि पहुंच रही है Even purely from economical point of view it is good to have special regard for the cow hence cowprotection is necessary plank in the economical progress of India. Smith) अर्थात आर्थिक दृष्टि से उचित है कि गाय का विशेष तरह पर सम्मान किया जावे। गऊ रक्षा भारत की आर्थिक उन्नति के लिये एक आवश्यक साधन है।

(२) यदि आप एक गाय को पाल लेंवे और माध्यम निकालने पर यह माने कि वह ५ सेर दूध प्रतिदिन देती है तो दस वर्ष में उसने ३६५० दिन दिया। ५ सेर के हिसाब से कुल १८२५० सेर दूध हुआ। एक मनुष्य दो सेर दूध से अपना निर्वाह कर सकता है। इस प्रकार एक गाय ने ९१२५ मनुष्यों का पेट पालन किया। १० वर्ष में यदि ५ बच्चे गाय बने और ५ बैल बने तो ५ गाय ने ४५६२५ का पेट पालन किया और फिर इसकी सन्तान ने गोया एक लाख से अधिक आदमी

गाय से परवरिश पा सकते हैं और जो बच्चे बैल बने अगर वह ५०) रु० फ़ी बैल बेचे जायं तो २५०) रु० भी प्राप्त हुये। इसके विरुद्ध यदि गाय को वध किया जावे तो एक मन से अधिक मांस प्राप्त नहीं होता। यदि आध सेर मांस प्रति मनुष्य खावे तो गाय के वध करने से केवल ८० मनुष्य अपना पेट भर सकते हैं।

(३) अमरीका के कृषि करने वाले लोग गऊ पालन व रक्षा पर १० अरब डालर लगाते हैं। इनकी अधिक आय गाय के दूध से है। अस्तु दूध से आय अमरीका की कुल आय का २५ प्रतिशत है। गेहूं से ८ प्रतिशत, तरकारियों से ८ प्रतिशत, मुर्गियों, अण्डों से ८ प्रतिशत, मक्की से १५, कपास से ११ प्रति शत। ३० लाख कृषि करने वाले गाय की पालना करने से अपनी जीवका कमाते हैं और ७० हज़ार पुरुष दूध बकरी पालकर।

(४) भारत में लंगड़ी लूली गायों की परवरिश पर साठ लाख रुपया प्रति वर्ष व्यय होता है। परन्तु उत्तम नस्ल की गायों को अधिक करने, इनकी नस्ल बढ़ाने या अधिक दूध पैदा करने के साधनों पर कोई ध्यान नहीं देता। अब तक इन नाममात्र गउशालाओं पर ५० वर्ष में ३० करोड़ रुपया व्यय हो चुका है परन्तु आर्थिक दृष्टि से भारत को इससे कोई लाभ नहीं पहुंचा।

(५) यदि देखाजाय तो दूध सिवाय पानी के शेष तमाम पीने वाली वस्तुओं से सस्ता है जैसे शराब, लेमोनेड, अर्क़, शहद आदि सब वस्तुओं से दूध सस्ता है मगर सबसे अधिक लाभदायक है।

(५) भारतवर्ष व अन्य देशों की गउओं का मुक़ाबला—

(१) भारद्वाज गृह्यसूत्र में आता है कि प्रत्येक ब्राह्मण कुटुम्ब में १६ गाय, वैश्य कुटुम्ब में १२ गाय, क्षत्री कुटुम्ब में १० गाय और शूद्र कुटुम्ब में ४ गाय हुआ करती थीं। रामायण में आया कि राजा जनक ने सीता के विवाह पर एक लाख गाय दान की। उपनिषद् काल में राजे ब्राह्मणों को हज़ार हज़ार गाय दान किया करते थे।

महाराजा चन्द्रगुप्त के समय में भारत में ६२ करोड़ गायें थीं। अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने में एक पैसा सेर दूध था। अकबर के ज़माने में ४२ करोड़ गायें थीं। रुपये का ११ सेर घी और बारह आने मन दूध था। अब अंग्रेज़ी राज्य में जब कि सरकार ने पहिले जानवर शुमारी सन् १८६६ ई० में की तो उस समय भारत में दूध देने वाली गाय १८ करोड़ थी मगर अब ७० वर्ष के भीतर दूध देने वाली गाय पौने चार करोड़ रह गई है। अब ज़रा अन्य देशों से तुलना कीजिये।

(क) गाय की संख्या प्रतिशत मनुष्य पीछे अमरीका सौ मनुष्य पीछे ७५ गाय, डनमार्क ६७, कनाडा ८०, न्यूज़ीलैंड व आस्ट्रेलिया २५१, अरजैनटाइना, ४०० भारत २१। गोया हमारे देश में पांच मनुष्यों के पास एक गाय है।

(ख) प्रति मनुष्य कितना दूध प्राप्त होता है—अमरीका १० छटांक, इंगलिस्तान ५ छटांक, न्यूज़ीलैंड २० छटांक, डनमार्क १२ छटांक, जर्मनी ४ छटांक, हिन्दुस्तान १॥ छटांक।

(ग) कुल पशुओं में गाय की संख्या भिन्न भिन्न देशों में प्रतिशत—इंगलिस्तान में १०० पशुओं में अर्थात् (घोड़े, ऊंट, खच्चर, भेढ़, बकरी, गाय, बैल) ४० गाय हैं। फ्रांस में ४६, जर्मनी में ४६, डनमार्क ४२, हिन्दुस्तान में १०० जानवरों पीछे २० गाय अर्थात् कुल पशुओं का पांचवा भाग गाय हैं।

(घ) चरागाह अर्थात् गाय आदि के चरने के लिये भूमि भिन्न भिन्न देशों में कुल क्षेत्रफल के हिसाब से—

बरतानया ७४५ लाख एकड़ भूमि से २३०००० लाख एकड़ जर्मनी १२ करोड़ २२ लाख एकड़ में २६०००० लाख एकड़, न्यूज़ीलैंड ६२६ लाख एकड़ भूमि में २७ लाख एकड़, भारत ६२ करोड़ भूमि क्षेत्रफल में ३५२००० एकड़ चरागाह है।

(घ) गाय का दूध अधिक से अधिक अमरीका ५६ सेर, न्यूज़ीलैंड ४० सेर। दूध का माध्यम अमरीका १३ सेर, न्यूज़ीलैंड ११ सेर, भारत में औसत दूध फ़ी गाय १॥ सेर है।

(छ) अमरीका में जब कोलम्बस ने इसका खोज किया तो कोई गाय इसकी दृष्टिगोचर न थी परन्तु अब वहाँ सन् ३६ ई० में ४॥ करोड़ गाय विद्यमान हैं। डेनमार्क में १८७६ ई० में एक गउशाला थी जिसमें १२० गाय थीं। मगर अब १६३५ ई० में १३ हज़ार गउशालायें हैं जिनकी दूध आदि की आय २६ करोड़ रुपये वार्षिक हुई। वहाँ कुल मनुष्य संख्या २५ लाख है जिसमें २० लाख दूध देने वाली गाय हैं।

(ज) अमरीका में गउपति मण्डल की स्थापना सन् १८२८

Cow's Lord Association (गउपति मंडल) की स्थापना हुई। भाषण करते हुये सभापति ने कहा "एक ही उत्तम उद्देश्य के विचार से प्रेरित होकर मनुष्य की आदि माता गऊ की रक्षा करने वाले मण्डल का नाम हमने गउपति मडल रक्खा है। मनुष्य इससे अधिक ज़िम्मेवारी की आशा क्या करसकता है कि वह गाय का स्वामी और रक्षक बने जिसके दूध पर प्रति वर्ष करोड़ों बच्चों के जीवन का आधार है। जिसका उपयोग यौवन और वृद्ध अवस्था में भी लाभदायक और अनुगामी है प्रतिदिन पर्याप्त मिक़दार में दूध उत्पन्न करना, इसे संभालना और बच्चों के लिये सस्ते मोल पर देना एक ऐसी आवश्यक ज़िम्मेवारी और महान आदर्श है जिसके लिये यह मण्डल उचित रीति से अभिमान कर सकता है"। एक ही वर्ष में इस मण्डल के सभासद १० हज़ार बन गये। मण्डल की ओर से अधिक संख्या में गाय रखने वालों को पारितोषक किये जाने लगे। चुनाचे एक पुस्तक रची गई जिसका नाम गोपति सन्मार्ग रक्खा गया। इसकी भूमिका में इस प्रकार लिखा है "भारत में सुरक्षित भाषा संस्कृत में लिखे हुये वेद दुनिया की अत्यन्त प्राचीन पुस्तक से पता चलता है कि मध्य एशिया के ऊंचे स्थानों में रहने वाले राजा और सिपाही का नाम गोपति हुआ करता था। भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में निवास करने वाले प्राचीन गोपति लोग आर्य कहलाते थे। वह संसार भर की श्वेत वर्ण जातियों के पितामह अर्थात् वंश

चलाने वाले थे। पालतू गउओं के प्रथम स्वामी होने का अभिमान इन्हे प्राप्त हुआ था। वह गाय के दुग्ध को अमृत समझते थे। वह वध करने के स्थान में इन्हें पालते और मित्र बनाकर रखते थे। उन आर्यों की गाय के वंश से तमाम संसार की गाय हैं और वहां से ही गाय सारे एशिया, युरोप, अफ्रीका और अमेरिका में फैली हैं। अहा! कैसे सुन्दर शब्द हैं। जैसे भारत ने तमाम संसार को ज्ञान दिया वैसे ही गाय का वंश भी सारे भूमण्डल में फैलाया ताकि जनता इसके अमृत दूध से अपनी आत्मिक, मानसिक और शारीरिक अवस्था को उत्तम बनावें। धिक्कार है ऐसे मनुष्यों पर जो ऐसे पवित्र हित-कारी पशु को वध करके इसका और अपना सर्वनाश कर रहे हैं। अमरीका का प्रसिद्धमहोदय Keir Therns लिखता है—
"Life holds no nobler duty than to provide milk for our people and no higher honour than to be known as Lord of the Cows".

अर्थात् जीवन में इससे अधिक पवित्र कर्तव्य नहीं है कि मनुष्य मात्र को गाय का दूध पहुंचाया जावे और गो स्वामी होने से अधिक कोई और आत्म सम्मान का साधन नहीं है। इसलिये भारत में गो स्वामी का दर्जा सबसे ऊंचा समझा जाता था जिसका अपभ्रंश वर्तमान समय में गोसाईं शब्द है।

(ज) भारत में गऊ हत्या पांच प्रकार से हो रही है (१) भोजन के लिये (२) कुर्बानी के लिये (३) चमड़े के लिये (४)

गोश्त सूखा करके विदेश भेजने के लिये और (५) कुदरती मृत्यु। प्रतिदिन १२ हज़ार गायें वध होती हैं। प्रति वर्ष २५ लाख गाय की उत्पत्ति से अधिक हत्या होती है। गोरी सेना के लिये २३८००० मन मांस गाय का खपत होता है। प्रति गाय ३० सेर मांस निकलता है इसलिये ३ लाख गाय प्रति मास गोरों के मांस भक्षण के लिये वध होती हैं। सूखा हुआ मांस २२२२५ हंडरवेट विदेशों में जाता है। प्रति गाय आठ सेर सूखा मांस निकलता है अर्थात् १२ लाख १५ हज़ार गाय सूखे मांस के लिये वध की जाती हैं। सन् १९३६ में ४१४०० टन चमड़ा सात करोड़ रुपये का विदेशों में गया। गाय का वध निम्न लिखित है—क़ुर्बानी के लिये सौ में से ३ गाय, मुसलमान गाय का मांस १५ प्रतिशत खाते हैं। गोरे २ प्रतिशत, सूखा मांस ४० प्रतिशत गऊ वध होती हैं।

यह है भारत में गऊ रक्षा का फोटो और अवस्था, दीगर देशों के मुकाबले में। यदि हर एक हिन्दू यह प्रण करे कि मैं एक गाय को अपने घर में अवश्य पालूंगा और अपनी गाय या बछड़े को किसी अन्य जाति के पास न बेचूंगा तो भारत में सच्चे माने में गऊ रक्षा हो सकती है। परन्तु हिन्दुओं की मनोवृत्ति विचित्र है। वह लूली लंगड़ी गाय की पालना तो करेंगे परन्तु उत्तम वंश की गाय की पालना नहीं करेंगे। दूध बेचना तो पाप कहेंगे परन्तु गाय को मुसलमानों और क़साइयों के हाथ बेचने में संकोच न करेंगे। इसलिये जब तक हिन्दू

जाति में सच्चे दिल से गऊ रक्षा का विचार न हो यह जाति कदापि उन्नति नहीं कर सकती। महोदय केन सच लिखता है कि किसी जातिका आधार गाय है। Prosperity of a nation lies in cow protection. अस्तु यदि भगवान राम और कृष्ण के सच्चे भक्त कहलाना चाहते हो तो गऊ रक्षा करो।

व्याख्यान नं० (५)

भिन्न देशों की शिक्षा प्रणाली

पादरी मरडक साहब अपनी पुस्तक "भारत की आवश्यकतायें" में लिखते हैं कि भारत में अंग्रेज़ों के आने से पहिले पाठ विधि बहुत निकम्मी थी। मौलवी महिजद में बैठकर, पण्डित धर्मशाला या घर में बैठकर आठ दस विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा या कुछ पुस्तक पढ़ने की शिक्षा दिया करते थे। घंटा आध घंटा विद्यार्थियों को पढ़ाते बाकी समय उनसे निजकी सेवा कराते थे। हर एक विद्यार्थी का पाठ भिन्न भिन्न होता था सिवाय साहित्य की पुस्तक पढ़ने के गणित, इतिहास, भूगोल, या किसी और विषय की शिक्षा न होती थी। आठ दस वर्ष में विद्यार्थी तीन चार पुस्तकें पढ़ लेता था। परन्तु अंग्रेज़ी सरकार ने जमाअत बन्दी, निरीक्षण करने और परीक्षा लेने (Classification-Inspection-Examination) का तरीक़ा जारी किया और हर प्रकार के विषय पढ़ाने आरम्भ किये।

परन्तु फिर भी सरकार ने जो पाठ विधि निश्चित की है वह भारत में तीन आर (R) तक सीमाबद्ध है अर्थात् (reading, writing, reckoning) लिखना, पढ़ना, हिसाब करना। सरकार ने यदि स्कूलों और कालिजों में साइंस, फ़िलासफ़ी, बीजगणित, भूगोल आदि अनेक विषय प्रचलित किये हैं परन्तु इनका उद्देश्य केवल पठन पाठन तक है अर्थात् क्रियात्मक शिक्षा (Practical) कहीं नहीं दी जाती। विद्यार्थी साइंस या रेखागणित आदि कोई विषय पढ़कर इसके साधन से अपना निर्वाह कर सकें। केवल पुस्तक रटना ही सरकारी पाठ्यविधि का उद्देश्य है। सरकार का उद्देश्य ऐसी शिक्षा से सस्ते वेतन वाले कर्मचारी उत्पन्न करना था। अब भी भारत की शिक्षा प्रणाली के साथ चार अन्य देशों की तुलना करता हूं।

(१) जापान—इस देश ने ६० वर्ष में शिक्षा में इतनी उन्नति करली है कि किसी और देश ने नहीं की। इतने थोड़े समय में ६६.४ प्रतिशत लिखे पढ़े पैदा कर दिये। इस देश में (3 H) तीन एच की शिक्षा है अर्थात् (Head, Hand and Heart) दिमाग़, दस्त और दिल की शिक्षा। अस्तु जापान में मस्तिष्क की शिक्षा इस प्रकार है कि विद्यार्थियों के मस्तिष्क से इन्हें वस्तुयें खिलौने दिखाकर शिक्षा दी जाती है। इनको देखने और विचार करने की शक्ति को विकाश दिया जाता है। वाटिका, समुद्र और पर्वतों पर लेजाकर बालकों को कहा जाता है कि यहां की अद्भुत वस्तुएं देखो और हमें बताओ कि तुम

ने क्या कुछ देखा। जो वालक कि अधिक वस्तुयें वतायेगा इसे ५ शंतरे पुरस्कार मिलेगा। दूसरे को ४, तीसरे को तीन, चौथे को दो वाक़ी सवको एक एक। इस प्रकार से विद्यार्थी अपनी आंख और सोचने की शक्ति से काम लेते हैं और इनके मस्तिष्क का विकाश होता है। हमारे विद्यार्थियों के समान रटने और घोटा लगाने का काम नहीं।

दूसरी दस्तकारी की शिक्षा है जिसमें हर प्रकार के व्यवसाय धन्धे-कृषि आदि की शिक्षा आ जाती है। प्राईमरी के विद्यार्थियों को एक धन्धा, मैट्रिक के विद्यार्थियों को दो धन्धे सिखाये जाते हैं। खिलोने वनाना, वटन, काग़ज़, दियासलाई, चाकू, घड़ियां आदि १३४ प्रकार के धन्धे हैं जो जापान के स्कूलों में सिखाये जाते हैं। विद्यार्थियों की इच्छा पर है कि जो धन्धा वह सीखना चाहे वह सीखले इस लिये जापान ने दस्तकारी (व्यवसाय और घरेलू धन्धों) में इतनी उन्नति करली है कि आज संसार भर में जापान का मुक़ावला कोई देश नहीं कर सकता। जापान का सस्ता माल दुनिया भर की मन्डियों में विक्री हो रहा है। यह सब दस्तकारी की शिक्षा का परिणाम है और इसी ने बेकारी को दूर कर दिया है।

तीसरी प्रकार की शिक्षा दिल की है जिसका तात्पर्य यह है कि दिल को दृढ़ और निर्भय वनाना। बालकों को अंधेरी रात्रि में शमशान भूमि और जंगल में भेजा जाता है, दौड़ाया जाता है ताकि वह निर्भय हो जायं। तनतनाद बालक दौड़ते

हुये वन और शमशान भूमि में जाकर परची वृक्ष से उतार लाते हैं जो उस्ताद ने पहिले से वहाँ कील के द्वारा लटका रखी होती हैं। इससे विद्यार्थियों में निर्भयता और धीरज के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरा बालकों को साल भर में ३० कहानियाँ सुनाई जाती हैं जिनमें से दस वीरता की, दस देश भक्ति और सदाचार की और दस कहानियां राजभक्ति की होती हैं ताकि विद्यार्थियों के अन्दर बालक अवस्था से ही वीरता सदाचार और देशभक्ति के भाव फूंक दिये जावें जो आयु के साथ साथ इनका भी विकाश होता जावे। साथ ही चालीस प्रश्न उत्तर वहां के विद्वानों ने मिलकर ऐसे बनाये हैं जिनमें सारे जीवन के उद्देश और आवश्यकतायें आ जाती हैं वह बच्चों को कंठ कराये जाते हैं। दृष्टांत मात्र मैं चार पाँच प्रश्न उत्तर यहाँ उधृत करता हूं। उस्ताद बालकों से प्रश्न करता है- बालकों तुम्हारे संसार में आने का या जाने का क्या उद्देश है (1) What is the object of your life बालकों को उत्तर सिखाया जाता है To serve my country (अर्थात) अपने देश की सेवा करना। जिन बच्चों के भीतर ऐसे भाव डाले जावें वह बड़े होकर कैसे देश भक्त बन जावेंगे। मेरे देश में न तो जाती स्कूलों में न सरकारी स्कूलों में इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। (दुसरा प्रश्न) What is the object of your learning तुम्हारा शिक्षा पाने का क्या उद्देश्य है। हमारे लड़के तुरन्त उत्तर देंगे, नौकरी करना। परन्तु जापानी बालक

को सिखाया जाता है To improve my country अर्थात् अपने देश को उन्नत करना (समृद्धिशाली बनाना)। तीसरा प्रश्न उस्ताद पूंछता है। तुम अपने देश को कैसे समृद्धिशाली बनाओगे How will you improve your country. विद्यार्थी उत्तर देते हैं कि दस्तकारी तथा ईमानदारी के द्वारा By industry and integrety. इस समय जापान को वास्तव में दो वस्तुओं ने ही इस क़दर समृद्धिशाली और भाग्यवान बनाया अर्थात् दस्तकारी और ईमानदारी। चाहे आप जापान पर कितना ही दोष लगाओ कि चीन पर अत्याचार कर रहा है परन्तु आज तक जापानी जाति पर कोई यह दोष नहीं लगा सकता कि जापानी अपने आचार व्यवहार में बेई-मानी करते हैं। (चौथा प्रश्न) What are Your Jewels तुम्हारे भूषण कौन से हैं। self reliance, dignity of labour and patriotism अर्थात् हमारे तीन आभूषण हैं आत्मविश्वास, काम करने को लज्जा न समझना और देश भक्ति। जिस जाति के बालकों में ऐसे भाव उत्पन्न किये जावें वह क्यों न साठ वर्ष में इतनी उन्नति करे। (पाँचवा प्रश्न) What is your great desire तुम्हारी हार्दिक इच्छा क्या है। यदि हमारे विद्यार्थियों से यह प्रश्न पूछा जाय कि तुम क्या चाहते हो? कोई उत्तर देगा डिप्टी कमिश्नर बनना, कोई हाईकोर्ट का जज बनना कोई मिनिस्टर बनना, कोई एम.एल.ए. बनना, कोई सर बनना। परन्तु जापानी विद्यार्थी को क्या

उत्तर सिखाया जाता है To die for my country. अर्थात् अपने देश की रक्षा के लिये प्राण न्यौछावर करना। यही कारण है कि आज जापान ५ करोड़ की मनुष्य संख्या वाला देश ४५ करोड़ की आबादी वाले देश चीन को हड़प कर रहा है। किस के बल पर, अपने देश के नवयुवकों के बल पर। जिनका उद्देश्य अपने देश की रक्षा और उन्नति के लिये प्राण न्यौछावर करना है हमारे देश में बालकों के भीतर नौकरी करने अर्थात् Most obedient servant बनाने के भाव डाले जाते हैं। यह है जापान की शिक्षाप्रणाली का प्रभाव जिसने जापान को ६० वर्ष में उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया।

(२) अब लीजिये अमरीका की शिक्षा प्रणाली। यहां तीन एम (3 M) की शिक्षा का प्रधानत्व है अर्थात् Mineral education, mechanical and mercantile education अर्थात् धातू निकालने की विद्या, कलाकौशल की विद्या, व्यापार और कारोबार में सफलता प्राप्त करने की विद्या। अमरीका ने सबसे पहिले भूमि और पर्वतों के नीचे जो धातें सोना, चांदी, तेल आदि दबे पड़े हैं इनकी शिक्षा पर ज़ोर दिया जिस का परिणाम यह हुआ कि वहाँ सोना, चाँदी, तेल और कोयला इतनी अधिकता से बरामद होता है कि वहाँ राकफीलर तेल का बादशाह कहलाता है जो कि अरबपति है। भारत में भी मिट्टी का तेल धर्ती के नीचे विद्यमान है। पत्थर का कोयला भी है। परन्तु जब तक अमरीकन लोगों ने झरिया में जाकर

वहाँ की भूमि का निरीक्षण करके कोयला निकालना आरम्भ नहीं किया था तब तक झरिया का भूपति एक दरिद्र और कंगाल था; अब राजा बन गया है। इसलिये धातुओं की विद्या ने ही अमरीका को इतना समृद्धिशाली बना दिया।

दूसरी कलाकौशल की विद्या-मोटर और लारियाँ बनाने में अमरीका ने कितनी उन्नति की है। हैनरीफोर्ड के कारखाने में ७२०० मोटर तैयार होता है। दो लाख परिश्रमी इसके कारखाने में काम करते हैं। लाखों रुपया प्रतिदिन इसकी आय है। कलाकौशल के द्वारा ही अमरीका ने इतनी उन्नति करली है कि आज अमरीका संसार भर में धनाढ्य खण्ड समझा जाता है।

तीसरा अमरीका में व्यापार करने--अपने कारोबार में सफलता प्राप्त करने के साधन सिखाये जाते हैं जो तीन साल का कोर्स है। हमारे देश में व्यापारी का पुत्र व्यापार ही करेगा चाहे इसे व्यापार की विद्या कुछ भी न आती हो। हमारा व्यापार ईश्वर के आगे प्रार्थना करने पर या ज्योतिष की पोथी देखने पर है। अमरीका का व्यापार एजन्टों द्वारा तमाम संसार की उपज़ाउ वस्तुओं के विधान संग्रह करने और उनसे अनुमान करने पर है। हम क़िस्मत या भाग्य पर संतोष करते हैं वह अपनी विद्या और बुद्धि के द्वारा अनुभव करके लाभ उठाते हैं। अमरीका के नवयुवकों में पुरुषार्थ, तप और देश भक्ति फूंक दी जाती है। इसलिये वह अपने देश की उन्नति के लिये हर समय तत्पर रहते हैं। वह कृषि विद्या की पुस्तकें

और औज़ार आदि लेकर कृषि करने वालों को जाकर उनके खेतों में शिक्षा देते हैं, प्रयोग में लाना सिखाते हैं और अन्य प्रकार की शिक्षा के लिये चलते फिरते पुस्तकालय लेजा कर पुस्तक पढ़ने के लिये देकर देश और जाति की उन्नति करते हैं।

(४) अब लीजिये चौथा देश जर्मनी है यहां। पर तीन एन (3N) की शिक्षा है अर्थात् Natural, National and Nectral education अर्थात् सृष्टि नियम अनुकूल, राष्ट्रीय और रुहानी (आनन्द देने वाली शिक्षा)। पहिली शिक्षा से मुराद तीन साधन हैं अर्थात् खुली हवा में वृक्षों के नीचे चार दिवारी से बाहर मैदान में बैठकर शिक्षा पाना। दूसरा खेल कूद के द्वारा शिक्षा देना। ताश के पत्तों और फलों के द्वारा शिक्षा देना जिसे आजकल किण्डर गार्टन सिस्टम कहते हैं। तीसरा कुदरती चीज़ों यानी सृष्टि का ज्ञान मादी (प्राकृतिक शिक्षा देना) और उनसे लाभ उठाना।

दूसरा राष्ट्रीय शिक्षा अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अपनी जाति की मशीन का पुर्ज़ा समझे। देश और जाति के लिये मरे और जिये। बच्चों को यह बातें कंठ कराई जाती हैं।- (१) हर प्रकार के कारोबार में अपनी जाति को स्मरण रक्खो (२) जितना तुम विदेशी माल खरीदोगे उतना अपने देश को कंगाल बनाओगे (३) देश का धन बाहर न जाना चाहिये यहां ही रहना चाहिये (४) जर्मनी का कागज़, क़लम, स्याही उपयोग में लाओ (५) किसी अन्य देश का शराब और फल उपयोग में

न लाओ (६) जर्मनी कपड़ा और टोपियां उपयोग में लाओ (७) यदि जर्मनी की चाय खराब हो तो जर्मन उपनिवेशों की चाय पियो (८ अन्य देशों की खाने की वस्तु विस्कुट, मक्खन मत स्तैमाल करो। इस प्रकार की शिक्षा ने ही जर्मनी को इतना ऊंचा बना दिया है।

(५) रूस की शिक्षा प्रणाली—ज़ार रूस के समय तक शिक्षा का नियम पूर्वक प्रबन्ध रूस में न था। पीटर बादशाह के समय तक कुल ११० प्राइमरी स्कूल थे। इनमें राज्य भक्ति और धर्म शिक्षा दी जाती थी। जब बोलशेविक समय आरम्भ हुआ तो देश में क्रान्ति फैल गई और साथ ही शिक्षा का काम बलपूर्वक आरम्भ हुवा। विज्ञापन हुआ कि ८ वर्ष की आयु से लेकर ५० वर्ष की आयु तक सबको शिक्षा पानी अनिवार्य होगी। शिक्षा का उद्देश्य रूस में सदाचार, संगठित होकर कम्पनियां (फ़र्म) बनाकर काम करना, सभ्यता, संस्कृति को सुरक्षित करना और कृषि विद्या को फैलाना, Character building, Cooperating system, Culture system मास्को यूनीवर्सिटी के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष का कथन है कि हमने शिक्षा के द्वारा मनुष्यों को आरोग्य, बलवान, कर्तव्य पालन करने, स्वतंत्र विचार वाले और सदाचारी बनाना है। राजनैतिक शिक्षा दोनों प्रकार की अर्थात् Theoretical और Practical देनी चाहिये। संस्कृति की रक्षा के लिये राष्ट्रीय स्कूल स्थापित किये गये हैं जिनमें माध्यम राष्ट्रीय भाषा हो,

ग्रामी स्कूल परिश्रमियों के स्कूल, राजनैतिक स्कूल हर जगह स्थापित हो गये हैं। अब रूस में १८८ Technical College (धन्धों के महाविद्यालय), ६६३ सनअत के हाई स्कूल, कृषि विद्या के ६८ कालिज, ५३२ कृषि स्कूल हैं जिनमें हज़ारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इनके ५ वर्ष के प्रोग्राम अनुसार ६० हज़ार इंजीनियर, ३० हज़ार साइंसदां, ३५ हज़ार कृषि विद्या के अनुभवी और ४० हज़ार मनुष्य दूसरी विद्याओं के अनुभवी सन् ३७ तक तैयार किये गये। अस्तु २ अरब रोबल शिक्षा विभाग पर व्यय किया गया। यह है रूस में २० वर्ष के भीतर शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध और अद्भुत सफलता। भारत पर १७० वर्ष से अंग्रेज़ी राज्य है परन्तु अभी आठ प्रतिशत लिखे पढ़े हैं और वह बेकारी के कारण तड़प रहे हैं। जब भारत में स्वराज्य था तो राजे अपना धर्म समझते थे कि अपनी प्रजा को शिक्षित करें।

चुनाचे यहां की शिक्षा प्रणाली में तीन एम (3 M) थे अर्थात् सरलता, स्वार्थ रक्षा, सदाचार अर्थात् सादा जीवन (तपस्वी जीवन, न फैशन, न बूट छाता) भोजन में सादगी मिर्च मसाला, खटाई, मांस, नशे वाली चीज़ों से दूर रहना पड़ता था), सादा विचार, नम्रता, निर्भयता, स्पष्टता, निष्काम सेवा, मधुरभाषिता यह सब सरलता में सम्मिलित थे। स्वास्थ रक्षा इसका साधन ब्रह्मचर्य पालन, व्यायाम, प्राणायाम, सात्विक भोजन, शुद्ध वायु में रहना, शुद्ध जल का उपयोग यह स्वास्थ

रक्षा में सम्मिलित थे। सदाचार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था अर्थात् सत्य व्यवहार, ईमानदारी, परोपकार, अपना जीवन पवित्र रखना। यह बातें सदाचार में सम्मिलित थीं। वर्तमान समय में भारत की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को बेकार, रोगी और भ्रष्टाचार, फैशन ग्रस्त, सिनेमा ग्रस्त और ऐश ग्रस्त भोगवादी बना रही है। इस लिये आवश्यकता है कि जापान के समान यहां भी धन्धे और शिल्पकारी प्रचलित की जावे ताकि नवयुवकों में पुरुषार्थ, तप और देश भक्ति के भाव उत्पन्न हों और देश का सुधार तब ही होगा जबकि हमारे नवयुवक सदाचारी, परोपकारी और देश पर जाँनिसारी (मिटनेवाले) उत्पन्न होंगे। बस अब भारत में शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता है जिसके विना हमारा कदापि कल्याण न होगा।

व्याख्यान नं० ६

संगठन की आवश्यकता

आज दुनिया के लिये हिन्दुस्तान एक अचम्भे की बात बना हुवा है क्यों कि दुनिया की दो अरब आबादी का एक बड़ा भाग हिन्दुस्तानी हैं जिनका सर गुलामी के जूते तले है। जिन पर एक दूसरी कौम सात समुद्रों से चलकर जो यहां डेढ़ लाख की संख्या में हैं ३५ करोड़ आबादी पर हकूमत कर

रही है। बरतानियां जो चूहे की शक्ल के समान और भारत जो शेर बबर की तरह शक्ल रखता है। इस दशा में बरतानिया रूपी चूहा शेर रूपी भारत की ताक़त को कमज़ोर कर रहा है। भारत बरतानिया से १४ गुना, फ्रांस व जर्मन से छः छः गुना बड़ा है फिर भी पराधीन है। जापान और अमेरिका हिन्दुस्तानियों के इंसान होने में शंका करते हुये पराधीन होने का कारण पूंछते हैं। जिसका जवाब हम आज देना चाहते हैं। रानाडे ने किसी देश या जाति की उन्नति के चार साधन बतलाये हैं यानि (१) धन बल (२) ध्यान बल (३) धर्म बल (४) देही या बुद्धि बल। अब हम देखते हैं क्या यह चारों साधन और बल हमारे पास मौजूद हैं ताकि हम आज़ाद हो सकें।

(१) धन बल—भारत धन के लिहाज़ से मशहूर रहा है। असल में यही चीज़ थी जो दूसरी जातियों को यहां खींच लाई। रामायण में अयोध्या की अद्भुत उन्नति और समृद्धि-शाली का वर्णन आता है। सिकन्दर चार हज़ार खिच्चर सोने और जवाहरात के लूटकर ले गया। हर्ष वर्धन ने ४५ दिन तक गरीबों में धन लुटाया। अकबर की दौलत को कलीमखां पांच महीने तक एक हज़ार तराजू से तोलता रहा। आगरा के किले पर २६ करोड़ रुपया खर्च हुवा। नादिरशाह यहां से ५२ करोड़ ३६ लाख ६० हज़ार रुपया लूटकर ले गया। इस लिये हसपानिया के लोगों ने भारत को सोने की चिड़िया

कहा है। डेनमार्क वालों ने इसे वहिश्त के नाम से याद किया है। मैगस्थनीज़ जो यूनानी कौंसलर था चन्द्रगुप्त के समय में आया। वह लिखता है कि राजा ने ग्यारह दिन तक एक यज्ञ किया। जब यज्ञ समाप्त हो चुका तो राजा ने ५६ हज़ार आदमियों को शाही भोजन खिलाया। सब से पहिले ब्रह्मनों को भोजन खिलाकर इनको दक्षना के तौर पर पांच हज़ार सोने की थालियां, दस हज़ार चांदी के कटोरे भेंट दिये गये इसके बाद राजा का जलूस निकाला। राजा साहब सोने की पालकी में बैठा और उनके पीछे पचास राजे हाथियों पर सवार थे। हौदों की तारें सोने की थी। सन् १४६८ ई० में वास्कोडीगामा भारत में आया और राजा ज़मूरन के अमीरों, वज़ीरों की स्त्रियों को अपनी कांच की चूड़ियां एक पलड़े में रखकर और दूसरे पलड़े में उनके सोने को रखकर बराबर वज़न करके दीं। आजकल भी भारत में धन की कमी नहीं परन्तु हम धन को उपयोग में लाना नहीं जानते क्यों कि सर जान स्ट्रेची साहब अपनी लिखित पुस्तक 'भारत के मन्दिर और गद्दियां" में लिखता है—

(१) भारत मन्दिरों, गद्दीयों, मठों, मस्जिदों और गुरु द्वारों का देश है। दुनिया में सब से अधिक मन्दिर यहां हैं यहां के दो लाख बारह हज़ार मन्दिरों इत्यादि की आय ५६ करोड़ रु० वार्षिक है जो इनके पुजारी और पण्डे लोग खा जाते हैं।

(२) भारत में साधुओं, भिकारियों और गद्दिओं की संख्या ५६ लाख है। जिनका प्रतिदिन व्यय चार आने के हिसाब से वार्षिक ५१ करोड़ ६ लाख इनकी जेब में चला जाता है जो न प्रचार करते हैं और न अविद्या को दूर करने की कोशिश करते हैं और न ही देश जाति के काम आकर सोशल रिफ़ार्म का बीड़ा उठाते हैं।

(३) यहां ५२ लाख गाँठ रुई की तैयार होती हैं। ६ लाख गाँठ यहां उपयोग में लाई जाती हैं शेष सब विदेशों में कपड़ा तैयार होने के लिये जाती हैं। इसलिये भारत का हर साल ७० करोड़ रुपया बाहर चला जाता है।

(४) हर साल ३८ करोड़ रुपये की शराब बाहर से आती है, १५ करोड़ रुपये की यहां तैयार होती है। अतः ५३ करोड़ रुपया मिट्टी में मिल जाता है।

(५) गांजा, सुलफा, चरस पर ७ करोड़ रुपया वार्षिक व्यय होता है।

(६) तीन करोड़ रुपये की अफ़ीम, २२ करोड़ रुपये का तम्बाकू हर साल पिया जाता है और फिर भी हमारे जैन्टिल मैन ८ करोड़ रुपये के सिगार विदेशों से मंगवाते हैं क्योंकि वह तम्बाकू पीना अपना अपमान समझते हैं। घड़ी ९ करोड़ रुपये की, लोहे का सामान २६ करोड़ रुपये का। ५ लाख २४ हज़ार वेश्यायें यहां मौजूद हैं जिनकी वार्षिक आय ६२ करोड़ रुपये हैं। महकमा रेल ९३ करोड़, महकमा तार १८ करोड़,

आबयाना ५२ करोड़ सरकार वसूल करती है जो हमारी जेब से निकलता है। इस नये गुज़रे समयमें भी २ अरब ३४ करोड़ रुपये का सोना दूसरे देशों को जा चुका है।

फ़जूल रस्म रिवाज पर रुपया पानी की तरह बहाते हैं ताकि नाक न कट जाय। ज्योंहि लड़की पैदा हुई, गर्ल फीवर चढ़ गया। अब हमें ब्रह्मी लोगों की पैरवी करनी चाहिये। ब्रह्मी लड़के लड़कियाँ एक दूसरे को देखकर पानी छिड़क देते हैं यदि वह एक दूसरे के पानी को स्वीकार करें तो समझो शादी के लिये राज़ी हैं। फिर लड़का लड़की बुद्ध पुजारी को सवा रुपया दक्षणा देकर कुछ मन्त्र शादी के पढ़वा लेंगे, बस शादी हो गई, मां बाप को चिन्ता नहीं। अब वह घर आकर अपने मित्रों को एक समय का भोजन खिलायेंगे। गोया हमारे यहां धन की भी कमी नहीं किसी ने कहा है कि वनिये की कमाई, मकान या विवाह ने खाई। हमने अपनी आवश्यकताओं को बढ़ा रक्खा है। इसलिये गरीबी के दिन काटने पड़ते हैं।

(२) धानबल–भारत कृषि प्रधान देश है। इसकी ७३ प्रति शत आबादी खेती पर गुज़ारा करती है। इसमें गंगा सिन्ध के उपजाउ मैदान और कृष्णा कावेरी के दहाने पैदावार के लिहाज़ से दुनिया में प्रसिद्ध हैं। यहां हर प्रकार के फल फूल, सब्ज़ी, मेवा होते हैं क्योंकि यहां सब तरह की आवपाशी और जल-वायु मिलती है इसलिये यहां दुनिया की निस्बत अधिक अनाज पैदा होता है। इंगलिस्तान में तीन, अमरीका में सात, आस्ट्रे

लिया में नौ प्रकार का अनाज पैदा होता है। इसके मुक़ाबले भारत में तेरह प्रकार का अनाज उत्पन्न होता है और आठ प्रकार की दालें चना, चीना ज्वार, अरहर, मसूर इत्यादि की होती हैं जो और कहीं नहीं होती। कुल मिलाकर इक्कीस प्रकार का धान यहाँ होता है। परन्तु हमारे देश के ज़मींदार लोग अन पढ़ हैं वह कृषि औज़ारों में उन्नति नहीं करते। काश्तकारी (खेती) के हुनर से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं और खाद के फ़ायदे बिल्कुल नहीं जानते। भारत में एक एकड़ से दस मन गेहूं पैदा होती है, अमेरिका में ३२ मन और रूस में ४२ मन पैदा होती है। भारत में ऐक एकड़ से गन्ना १२५ मन लेकिन अमेरिका के लोग एक एकड़ से छः सौ मन पैदा करते हैं। जिसका परिणाम यह है कि समुद्र के किनारे के लोग आस्ट्रेलिया, कैनाडा की गेहूं जो आठ आने मन मिलती है वर्ताव में लाते हैं जो अपने देश से सस्ते हैं।

(३) धर्मबल—जिस क़दर आत्मिक ज्ञान इस समय भारत वर्ष में मिलता है और कहीं नहीं मिलता। पादरी बर्टन साहब ने 'वर्तमान समय का फिजी' में लिखा है "अब तक हिन्दुओं के पास वेद, रामायण, महाभारत, गीता के ग्रंथ मौजूद हैं। हिन्दुओं को और किसी धर्म ग्रंथ, मज़हब और इलहामी पुस्तक की आवश्यकता नहीं। तुम इनका सर तलवार और डाईनामाइट के ज़ोर से झुका सकते हो लेकिन धर्मबल से नहीं झुका सकते। इस समय भी भारत दुनिया की आत्मिक प्यास

बुझा सकता है और पैगाम देने का हक़ रखता है। क्योंकि महात्मा गाँधी को दुनिया आत्मिक गुरु कहते हैं।

(४) बुद्धिबल—(१) सर जगदीशचन्द्र बोस फ़ीज़ीकल साइंस में नोबिल पराइज़ (Noble Prize) ले चुके हैं। अमेरिका में एक घंटा दस मिनट इस विषय पर व्याख्यान दिया कि पौदों में जीवात्मा होती है और वह हमारी तरह महसुस करते हैं। दाखला टिकटों के द्वारा था, ३६ हज़ार रु० कमाया। जर्मनी के सब से बड़े बौटनी के विद्वान ने कहा कि साइन्स की दुनिया में जे०सी० बोस से बढ़कर इस समय दुनिया का कोई आदमी नहीं। वह एशिया का डारविन Darwin और दुनिया का सब से बड़ा बुद्धिमान मनुष्य है। जब पंजाब के शहर लाहोर में हिन्दुस्तान की सांईस अञ्जुमन ६ जनवरी १९२७ को हुई तो पंजाब के गवर्नर सर मेलकम हैली ने इस साईंस का पैग़म्बर और राजा का पद भेट किया और कहा कि बोसने भारत सर ऊंचा करदिया (२) फलासफी में ऐस० गुप्ता जो फलारैंस (इटली) की १९२६ की तमाम संसार के फलासफरों की मजलिस में सम्मिलित हुवा, जिसके लेक्चर को सुन कर फ्रांस के वर्गसन ने अपनी टोपी इनके कदमों पर रखदी और अपना गुरु माना २८ यूनीवर्सिटियों ने इसे आनरेरी तोर पर डिगरी दी।

(५) शारीरिक बल—जब जर्मन को लड़ाई की फ़तह की खुशी में गोरे लोग फूले न समाते थे तो इङ्गलिस्तान के प्रधान

के प्रधान मन्त्री लार्ड जार्ज ने हाउस आफ कामन्स में १४ नोम्बर सन् १९१९ ई० को कहा कि जब जर्मन बादशाह ने दूसरे दिन पेरिस के किले में बैठ कर खाना खाने का ऐलान किया तो हम हवास फाख्ता होगये। यह हिंदुस्तान गोरखों की हिम्मत थी कि जर्मनी के बढ़े हुए सीलाव को रोक दिया यदि भारत के सपूत सर्दी के दिनों में पानी की खाइयों में बैठ कर और सूखे चने चबा कर दुशमन का मुकाबला न करते तो हम कदापि जर्मनी को फतह न कर सकते। फ़तह का सेहरा हिन्दुस्तानियों के सर पर बंधना चाहिये।

(२) राम मूर्ती ने जो मांसाहारी नहीं–इंगलिस्तान जा कर अपने शारीरिक बल से धूम मचादी दो मोटरों को रोका। लोहे के संकल तोड़े, छाती पर पत्थर तुड़वाये और मस्त हाथी को आध घन्टे तक अपनी छाती पर बैठाये रखा तब गोरे खुश हुये और राज कुमार जार्ज पंजुम के भजीजे ने कहा कि हम आपकी वीरता पर बहुत खुश हैं परन्तु मजा तब है कि जब तुम हमारे चलते हुये आईल अंजन को रोको, राममूर्ती तय्यार होगया लेकिन पूछा कि तुम मुझे बदले में क्या दोगे जब पूछने पर कहा कि मैं कोई औहदा या जागीर नहीं मांगता बल्कि केवल एक आज्ञा लिखी हुई चाहता हूं कि भारत से गऊ हत्या बन्द हो ताकि फिर से भीम अर्जुन और मेरी तरह बल वान पैदा हों तो उसने यह आज्ञा देने से लाचारी प्रगट की तब राममूर्ती ने कहा, तुम्हारा अंजन भी रोकना काबू से बाहर है।

अतः भारतवासियों के पास मानसिक, शारीरिक, आत्मिक और आर्थिक बल मौजूद है केवल सामाजिक बल की कमी है इनमें संगठन की (organisation) स्प्रीट नहीं है। कोई ताक़त को एकत्रित करने वाला मनुष्य नहीं निकलता। इनमें संघठन करने का बिल्कुल ध्यान नहीं आता। इनका कन्धे से कन्धा मिला कर खड़ा होना असम्भव सा हो रहा है। हिन्दु मुस्लिम झगड़े चार ईंटों के मकान मन्दिर या मस्जिद के लिये और एक पेड़ की टहनी के टूट जाने पर होते हैं जानवरों की खातिर ईद पर झगड़े होते हैं। कहीं बाजा बजाने का झगड़ा कहीं हक़ूक़ पर तकरार, यह सम्प्रदायाय झगड़े मजहब के नाम पर धब्बा है। अपने देश वासियों की हत्यायें बढ़ रही हैं पहिले कम्यूनिज्म (communism) का प्रश्न था अब प्रावैशंयलं (प्रांत का) प्रश्न है यदि पेशावरी पिटें तो बंगाली कहते हैं हमें क्या। पंजावियों की खबर लेने को मद्रास तय्यार नहीं हिन्दु मुस्लिम संघठन कैसे हो। अब हिन्दू सर जोड़ने को तय्यार नहीं इनमें दिन पर दिन घृणा बढ़ती जारही है ब्राह्मण और अब्राह्मण काश्तकार और गैर काश्तकार का खयाल है ब्राह्मण और अछूत को घृणा दुनिया में प्रसिद्ध है। जात पात का भूत सर पर सवार है न इसको भगाते हैं और न अछूतपन को दूर करते हैं भला संघठन कैसे हो? जब हिन्दू चार भागों में बटे हुये हैं फिर चारों जातियों में उपजातियां हैं जो एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते हैं

जिनमें रोटी बेटी का सम्बन्ध नहीं ब्राह्मणों में ८९६ क्षत्रियों में ६२६ (आरोड़ों की जाति में ही ८०६ उपजातियां हैं) वैश्यों में १११५ और शुद्रों में १८०० जातियां हैं। एक के पिटने पर दूसरे कहते हैं हमें क्या। जब तक जात पात का वहम दूर न होगा कोई कानफ्रेन्स कामयाब न होगी चाहे लाख संघठन के रेजूलेशन पास करलो। यही कारण है अछूत उद्धार और शुद्धि की तहरीकें कामयाब नहीं होतीं।

दूसरा कारण संगठन न होने का यह है कि हम ऐसोसियेशन Association की आवश्यकता को नहीं समझते, इकट्ठे मिलकर काम नहीं करते, न ही कम्पनियां बनाकर काम करने का तरीक़ा आता है। यदि करते हैं तो कम्पनियाँ स्वार्थी लोगों के कारण फेल हो जाती हैं और दिवाला निकाल बैठती हैं। जिससे साख जाती रहती हैं। हम कम्पनियों में योग्यता नहीं देखते और अपने जानकार आदमियों को लेते हैं जो स्वार्थी बनकर उल्टा हानि पहुंचाते हैं। संगठन करो ताकि उन्नति कर सको। हमारा संगठन चिरस्थाई नहीं होता। जो आज़माइश में पूरा नहीं उतर सकता वह संतरे की मानिन्द होता है जाहिर में तो एक है लेकिन भीतर से इसकी फांकों की तरह अलग अलग हैं। तुम्हारा संगठन ख़रबूज़े की तरह हो जो बाहर से देखने में कई भाग में बटा हुआ दीखता है लेकिन भीतर से एक है। यही वेद की शिक्षा है। यही उपदेश परमात्मा ने दुनिया के आदि में ऋग्वेद के पहिले मंत्र में कहा

है। हमारा देश भिन्न वस्तुओं व ज़राये की भूमि का निचोड़ है हैवानात पौदे भिन्न भिन्न प्रकार के बहुत संख्या में हैं। इसलिये यह देश हर एक वस्तु में अपने ऊपर निर्भर है। मनुष्य की तमाम आवश्यकतायें यहां उत्पन्न हो सकतीं हैं किसी वस्तु का मोहताज नहीं। किसी ने कहा है कि असल में भारत संसार का अद्भुतालय है परन्तु संगठन न होने से अजब हालत में है। इसी तरह टाड साहब ने भी पृथ्वीराज की पराजय के पश्चात् यों लिखा—

"अब भारत फतह हो चुका, तलवार या अन्य प्रकार की ताक़त से नहीं वल्कि आपस की फूट, राजाओं की अय्याशी और प्रजा की आराम तलबी से"। संगठन के लिये आवश्यक है कि हम स्वार्थ की भावना को कुचल दें। आज अमीरों और गरीबों के घरों में ज़ेवर, ज़मीन, मकान दुकान के लिये झगड़े हैं। हम रामायण को तो पढ़ते हैं और हर वर्ष रामलीला करते हैं परन्तु राम और भरत की तरह त्याग नहीं दिखलाते जिन्होंने राज्य को फुटबाल समझकर ठुकरा दिया बल्कि इसके उल्टे अपने भाइयों को नीचा दिखाने के लिये नीच से नीच हथियार उपयोग में लाने से नहीं रुकते। तो क्या प्रेम से हरएक लड़ी में परोये नहीं जा सकते और कौनसा कठिन कार्य है जो संगठन से नहीं हो सकता। बस रोगी भारत की एक ही दवा है। आपस में मिलकर सोचना, काम करना और बैठना। यह वेद का उपदेश है जिससे मनुष्य उन्नति की राह पर चढ़ जाता है।

व्याख्यान नं० (७)

भगवान् कृष्ण की बांसुरी

फ्रेडरिक गोल्ड साहब अपनी पुस्तक "भारत का भविष्य" में प्रश्न उठाते हैं कि क्या वजह है कि संसार में अनेक जातियां उत्पन्न हुईं और समृद्धिशाली हुईं परन्तु इनमें से कई जातियों का अब नाम निशान भी नहीं मिलता। जैसे वैलोनिया, चल्डिया रोमन जातियां। परन्तु भारत की आर्य जाति पर अनेक आक्रमण हुये वह अब तक जीती जागती शक्ति विद्यमान है। आप ही इसका उत्तर देते हैं कि आर्य जाति के रक्षक ब्राह्मणों ने वीरपूजा को न भुलाया इन्होंने बगल में रामायण और महाभारत को लेकर बाज़ारों व गलियों में, दुकानों व घरों और मन्दिरों में कथा का रिवाज जारी रखा और आर्य जाति के रक्त के भीतर अपने पूर्वज वीरों की वीरता को ठंडा न होने दिया। जिसका परिणाम यह है कि भारत सैकड़ों वर्षों से दासता की बेड़ियां पहने हुये भी स्वामी दयानन्द महाराज तिलक, गांधी, सी आर दास जैसे भारत के सितारे अब भी उत्पन्न करता है। मैं आज आपके सामने भगवान कृष्ण की बांसरी का वर्णन करना चाहता हूं जिसकी बांसरी की धूम संसार भर के विद्वानों के हृदयों पर अंकित है यह बांसरी तीन प्रकार की है पहिली बाल्यावस्था में बजाई जिसे भूतक वंसरी भी कहते हैं जिसके सम्बन्ध में हरि वंश पुराण और श्रीमद्-

भागवत में वर्णन है कि इनकी वंशी को सुन कर मथुरा और गोकुल की गोपियां और ग्वाले अपने कारो बार को छोड़कर, भोजन खाना भूल कर इनके गिर्द एकत्रित होजाते थे। पक्षी अपने घोंसले से निकल कर, गऊएं अपना चारा छोड़ कर, बछड़े दूध पीना छोड़ कर टिकटिकी लगाये वंसरी की आवाज़ पर मोहित होते थे। यह वंसरी क्या थी साधू वासवानी जी (T. L. Waswani) के लेखानुसार प्रेम और संघठन (Law of love and unity) की वाँसरी थी। योगीराज कृष्ण की दृष्टि में तमाम मनुष्य और पक्षी एक समान थे। इनके समीप अछूत और निकृष्ट जाति के शब्द न थे। वह समानता के प्रचारक और प्रेम के अवतार थे इन्होंने अपनी मधुर और सुरीली वंसरी सुना कर नवयुवकों के दिल दिमाग़ को मुग्ध कर लिया था और ग्रामी नवयुवकों की शक्ति को संगठितकरके राजानैतिक और सामाजिक क्रान्ति उत्पन्न करदी। इस लिये कृष्ण के भक्तों को जो उनकी वांसरी की प्रशंसा करते हैं उनके लिये उचित है कि पहिले अपने अन्दर प्रेम और संगठन के गुणों को धारण करें और अपने भाइयों से राग द्वेष करना छोड़दें जिस तरह मुसलमान अल्लाह अकबर और या अली का नारा सुन कर अपने वैर भाव छोड़ कर एकत्रित होजाते हैं हिन्दुओं को उचित है कि भगवान कृष्ण के प्रेम की वंसरी के नाम पर तमाम ईर्षा द्वेष त्याग कर एक केन्द्र पर एकत्रित हो जायें इस लिये हमें भगवान कृष्ण की भौतिक वंसरी से प्रेम, भक्ति और संगठन करने की शिक्षा मिलती है।

दूसरी–अध्यात्मिक वंसरी श्री कृष्ण ने रण भूमि में बजाई थी जब अर्जुन ने युद्ध करने से यह कह कर इंकार किया कि मैं अपने गुरु, दादा, भाई और सम्बन्धियों को वध करके राज्य करना नहीं चाहता। उस समय श्री कृष्ण ने जो उपदेश उसे दिया वह दूसरी वंसरी है और उसका नाम गीता है। यह उपदेश कर्तव्य पालन का है जिसे Law of action—Karm कहते हैं। इस अवसर पर श्रीकृष्ण ने दो प्रकार का उपदेश दिया एक तो उत्तम ज्ञान का है अर्थात् आत्मा अमर है फिर मौत किसकी और मारने वाला कौन–दूसरा उपदेश कर्म काण्ड था। क्षत्री का धर्म युद्ध करना है। कर्म चार प्रकार के वर्णन किये। (१) निष्काम कर्म जो फल या बदले की नियत से न किया जाय, दूसरों के हित और उपकार के लिये हो। दूसरा कर्म हैं विशेष कर्म जैसे क्षत्री का धर्म कर्म है युद्ध करना। देश जाति, निर्बलों-अनाथों की रक्षा करना गोया अपना कर्तव्य पालन करना तीसरा साधारण कर्म जैसे खाना पीना नित्य कर्म करना चौथा कर्म जैसे लूटना बुरे काम करना दूसरों को दुःख देना। अस्तु श्रीकृष्ण भगवान ने गीता में कर्म के फिलसफे पर ऐसे विस्तार पूर्वक उपदेश किया है। आज संसार भर के विद्वान इस फिलासफी पर चकित और मुग्ध हो रहे हैं।

तीसरी पारमार्थिक बाँसुरी है जिसमें ज्ञानकांड का उपदेश युधिष्ठिर को दिया। जब युधिष्ठिर ने भीष्म का शान्ति पर्व

सुनकर भी राज्य करने से इंकार कर दिया तो कृष्ण ने इसे उपदेश देकर राज्य करने पर उद्यत किया। इसका नाम अनुशासन पर्व है (३) गीता में जो ज्ञान काण्ड है वह परिक्षिप्त प्रतीत होता है क्योंकि रणभूमि में ऐसे उपदेश की आवश्यकता न थी। भगवान कृष्ण ने मुक्ति का मार्ग, भक्ति मर्म और ज्ञान काण्ड वर्णन किये हैं। जब तक तीनों को मिलाया न जाय तब तक सुख और मोक्ष कठिन है। बाइबिल और कुरान दोनों केवल भक्ति मार्ग को वर्णन करते हैं। बुद्ध ने केवल कर्म मार्ग को लिया, शंकराचार्य ने केवल ज्ञान मार्ग को लिया। इसलिये ठोकरें खाईं और असफलता को प्राप्त हुये। मगर गीता में तीनों मार्गों को मिलाकर कर्तव्य पालन करना ही धर्म बतलाया है इसलिये यह उपदेश सर्व प्रिय है।

श्रीकृष्ण की प्रसिद्ध गीता की बंसरी आज युरोप में भी सुनाई दे रही है। पहिले पहल पादरी फिजडल ने लिखा कि चूंकि कृष्ण के अर्थ काले के हैं इसलिये वह मूल निवासी काले आदमियों का पूजनीय था। शनैः शनैः आर्यों ने इसे अपना लिया। डाक्टर लुज़न्डरु महोदय लिखते हैं कि कृष्ण का शब्द क्राइस्ट से निकाला गया है। पादरी ग्रेगोरी महोदय ने लिखा है कि कृष्ण ईसा की नकल और गीता में बाइबिल का उपदेश ही ब्राह्मणों ने चुरा कर उधृत कर दिया है परन्तु प्रोफेसर बोलने ने १७६१ में इन सब को रद्द कर दिया और लिखा कि कृष्ण ईसा से हज़ारों वर्ष पहिले हुआ है। इसलिये

ईसा कृष्ण की नकल है। जिन निष्पक्ष लोगों ने गीता को पढ़ा वह इस पर मुग्ध हैं जैसे जर्मनी का प्रसिद्ध विद्वान हेमोलेट गीता पर लिखता है—

Gita is the profoundest and deepest production that the world possesses. I feel full of feelings of gratitude that I am spared to read such a wonderful book.

अर्थात् गीता अत्यन्त गूढ़ और उच्चकोटि की पुस्तक है। जो संसार भर में प्रसिद्ध है। मेरे अहो भाग्य हैं कि मुझे ऐसी अद्भुत पुस्तक के पाठ करने का अवसर मिला है।

(२) बुरक साहब अपनी पुस्तक "जीवन का सन्देश" (Gospel of Life by Broak) में लिखता है।

Not only it fulfils every condition needful for becoming national asset of national life but is a screpture of future world religion. A gift of India's glorious past at the moulding of still more glories of future of mankind.

'न केवल गीता राष्ट्रीय जीवन की राष्ट्रीय सम्पति है किन्तु संसार के भविष्य काल के धर्म की पुस्तक है जो भारत के भूतकाल के महत्व को प्रगट करती है और मनुष्य मात्र के भविष्य के गौरव को साँचे में ढालने वाली है। व्यास जी अन्तिम श्लोक में लिखते हैं कि जहां योगेश्वर कृष्ण और अर्जुन हों वहां निश्चय रूप से सफलता प्राप्त होती है। इस

पर कई विद्वानों ने विद्वतापूर्ण व्याख्या की है जिसका सार मैं यहाँ भी देता हूं।

कृष्ण के अर्थ आकर्षित करने वाला अर्थात् धन और अर्जुन के अर्थ बुद्धि है। अर्थात जहाँ धन और बुद्धि दोनों उपस्थित हों वहाँ सफलता निश्चय रूप से हुवा करती है (२) कृष्ण के अर्थ कृषि करने (काश्तकारी) और अर्जुन के अर्थ दस्तकारी और व्यवसाय के हैं अर्थात् जहाँ कृषि और व्यवसाय दोनों में उन्नति हो सफलता वहाँ ही होती है (३) कृष्ण के अर्थ ज्ञान और अर्जुन के कर्म हैं। जहाँ ज्ञान और कर्म मिलकर काम करते हों वहाँ सफलता होती है। (४) कृष्ण के अर्थ योग और अर्जुन के अर्थ दृढ़ता के हैं। इस प्रकार से इन दोनों को मिलाने से सफलता प्राप्त होती है। कृष्ण की बांसुरी का उपदेश निम्नलिखित है—

(१) अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिये बद्ध हो जाओ (२) सबसे प्रेम करो (३) संगठित हो जाओ (४) कायरपन छोड़दो (५) उत्तम बल पैदा करो (६) योग साधन से मोक्ष प्राप्त करो। भगवान कृष्णको सोलहकला सम्पूर्ण अवतार समझा जाता है। वह सोलह कला कौनसी हैं। हमारे सनातनी भाई तो कहीं इसका प्रमाण नहीं दिखाते। परन्तु मैं यहां महाभारत से इनकी सोलह कला प्रगट करता हूं।

१–प्रेम और संगठन का प्रचारक जो अमली तौर पर इसने बांसुरी के द्वारा किया। २–अत्याचार को मिटाने वाला

जैसे कंस और जरासंध का नाश किया। ३-समानता का अवतार, ऋषियों का रक्षक और पोषक जैसे सुदामा से बर्ताव किया। ४-त्याग की मूर्ति-कंस को मार कर स्वयं राज्य नहीं किया इसके पिता को राज्य दिलाया। ५-सेवा-भाव का अवतार युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ में ब्राह्मणों के पग धोने की सेवा ली। ६-गऊ रक्षक-इसलिये आपका नाम गोपाल पड़ा। ७-अनाथों का रक्षक--मथुरा में सख्त तूफ़ान आने पर तमाम गरीबों को गोवर्धन पर्वत पर लेजाकर उनकी जान व माल की रक्षा की। ८-समृद्धिशाली राजा होते हुए भी अर्जुन का महारथी बनकर अपने कर्तव्य का पालन किया। ९-नीति में निपुण--इसकी नीति से ही अर्जुन युद्ध में बच रहा और द्रोणाचार्य और भीष्मपितामह का परास्त होना इसकी नीति का ही फल था। १०-स्त्रियों की पवित्रता का रक्षक--द्रौपदी की लाज कैसे आड़े समय में आकर रक्खी। ११--वीरता का अवतार--छोटी आयु में किस तरह कंस, पूतना, नाग और राक्षसों का वध किया। निर्भयता और वीरता यह दोनों इसके विशेष गुण थे। १२-ज्ञान का भण्डार गीता और अनुशासन पर्व महाभारत से इस की विद्वता और ज्ञान प्रगट होते हैं। १३-सत्य का सहायक और अधर्म का शत्रु। १४--योगीश्वर योग साधन सारे जीवन में करता रहा। १५--स्वतंत्रता और स्वराज्य का समर्थक था। १६--क्षमा भाव जिसने इसे तीर मारकर घायल किया न केवल उसे क्षमा किया किन्तु भाग जाने का उपदेश दिया ताकि इसपर

कोई आपत्ती न आवे। यह हैं भगवान कृष्ण की सोलहकलायें जिनके बल से इसकी इस क़दर पूजा और सम्मान होता है।

व्याख्यान नं० (८)

वर्तमान समय की बेकारी उसके कारण और उपाय

वर्तमान समय में दुनियां को चारों दिशाओं से बेकारी की चीख पुकार आरहा है। अमरीका जहां साइंस ने इतनी उन्नति की कि जहां रेलवे का टिकट मशीन देती है, खाना पकाना परोसना और खाने की रक़म वसूल करना यह बिजली का काम है वहां नव्वे लाख आदमी बेकार हैं। जर्मनी जिसने महा युद्ध के पश्चात् अनेक प्रकार की विष भरी गैस निकाली हैं और अब फिर यश और बल में बहुत उन्नति कर गया है वहां साठ लाख आदमी बेकार हैं। इङ्गलिस्तान जिसका राज्य इतना विशाल है कि इसमें सूरज अस्त नहीं होता है वहां छब्बीस लाख आदमी बेकार हैं। अस्तू कुल संसार में चार करोड़ अस्सी लाख आदमी बेकार हैं। परन्तु अकेले भारतवर्ष में डब्लू हन्टर साहब (W. Hunter) प्रधान अकाल जांच सभा (President famine commission) कहता है कि पांच करोड़ आदमी बेकार हैं। अन्य देशों में तो बेकारी है

परन्तु भारत में चार रोग हैं अर्थात् बेकारी, बेरोज़गारी, नादारी और बदकारी। इन चार प्रकार के रोगों ने भारत को हड्डियों का पिंजर बना दिया है। बेकारी तो वर्तमान समय में अधिकता लिखे पढ़े लोगों को है। कोई समय था जब शिक्षित लोगों को अच्छी नौकरी मिल जाती थी अब बी०ए० ऐम०ए० मारे २ फिरते हैं इन्हें बीस रु० की नौकरी भी नहीं मिलती कारण यह कि प्रतिवर्ष एक लाख के लगभग नवयुवक मैट्रिक बी० ए० और एम० ए० की परीक्षायें उत्तीर्ण करते हैं और सब नौकरी चाहते हैं। सरकार इतनी नौकरियाँ कहां से लाय परिणाम यह कि बेचारे भूखे मरते, आत्म हत्या करते हैं दूसरा रोग मेरे देश को बेरोज़गारी का है अर्थात् नये वकील डाक्टर और नये दुकानदारों के लिये कोई रोज़गार नहीं। नये ग्राहक मिलना अत्यन्त कठिन होगया है क्योंकि निर्वाह मात्र के लिये मुकाबला सख्त होगया है। तीसरा नादारी अर्थात् पास कुछ न होना। (दरिद्रता-गरीबी) यह अधिकतया है किसानों को जो बेचारे साला साल शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु में महनत और पुरुषार्थ करते हैं परन्तु इनको सिवाय भोजन खाने के कुछ नहीं बचता है हमेशा सर पर करज़ा और भूखे हैं। इस समय भारत के कृषी करने वालों पर ग्यारह अरब करज़े है जो उतरना असम्भव है यदि सरकार इनकी सहायता न करे। चौथा बदकारी अर्थात् दुराचार है छान्दोग उपनिषद् में कथा आती है कि राजा अश्वपती के दरबार में

चार साधू चले गये। राजा ने इनका सत्कार करके भोजन के लिये पूछा तो इनमें से उद्दालक ने कह दिया कि हम आपका भोजन नहीं खायेंगे। इसका तात्पर्य कि हम भोजन खाकर आये हैं, अब आपका भोजन न खायेंगे। राजा को सन्देह हुआ कि इनसे किसी ने मेरे सम्बन्ध में शिकायत की है। इस लिये मुझे अपराधी और पापी समझ कर मेरा भोजन स्वीकार नहीं करते। उस समय हमारे देश की भाषा संस्कृत थी। राजा ने दरबार में खड़े होकर कहा "न मेस्तेनो जन पदे न कद्रियो न मद्यपो" अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नहीं, कोई कृपण नहीं, जो धर्म के नाम पर दान न करता हो न कोई नशा पीता है न कोई ऐसा मनुष्य है जो अग्नि होत्र न करता हो, न कोई अशिक्षित है न व्यभिचारी जब व्यभिचारी पुरुष न हो तो व्यभिचारी स्त्री कहाँ। आ हा ! कैसा स्वराज्य, राम राज्य या स्वर्ग धाम भारत था। ज़रा वर्तमान समय की पड़ताल करें जब कि हमारी सरकार कहती है कि हमने भारत को सभ्य और शिक्षित देश कर दिया। सरकारी रिपोर्ट है कि भारतवर्ष में प्रतिवर्ष चोरी डांके और कत्ल इत्यादि के १३ लाख अभि· योग अदालतों में जाते हैं। इनके अतिरिक्त छोटी चोरियां ऐसी भी हैं जिनकी सूचना पुलिस या सरकार को नहीं होती। राजा कहता है कि मेरे राज्य में कोई नशा नहीं पीता परन्तु वर्तमान समय में सरकारी रिपोर्ट १९३६ की मुद्रित हुई है जिसमें महोदय मोरगन डाईरेक्टर जनरल नशा विभाग

(Director Excise Department) लिखता है कि भारत में प्रति वर्ष ३८ करोड़ रु. का विलायती शराब और १५ करोड़ रु. का देशी शराब कुल ५३ करोड़ रु. का शराब खतम होता है साथ ही वह लिखता है कि गांजा, चरस, पोस्त और भांग जो साधू लोग उपयोग में लाते हैं सात करोड़ रुपये का व्यय होता है। गोया साठ करोड़ रुपये के नशे खपत होते हैं। इसके अतिरिक्त तीन करोड़ रुपये की अफीम और चण्डू खपत होते हैं गोया ६३ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष नशों में नष्ट होरहा है। इसके अतिरिक्त तम्बाकू और सिगरट, सिगार जो प्रतिवर्ष खपत होते हैं, महात्मा गांधी नवजीवन समाचार पत्रों में लिखते हैं कि २२ करोड़ रुपये की प्रतिवर्ष खपत है गोया ८५ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष हमारा नशों और तम्बाकू की भेंट जाता है जिनसे इतना धन भी नष्ट होता है और साथ में धर्म भी नष्ट होता है क्योंकि संसार में कोई धर्म नशे पीने की आज्ञा नहीं देता। तम्बाकू या सिगरेट पीने से पेट में कुछ नहीं जाता है धुवां बन कर तम्बाकू उड़ जाता है गोया हम अपना २२ करोड़ रुपया इंजिन के धुवों की तरह फूंक करके उड़ा देते हैं।

राजा अश्वपति कहता है मेरे राज्य में कोई अशिक्षित नहीं परन्तु वर्तमान समय में सरकार वर्तानिया के राज्य में अभी आठ प्रतिशत लिखे पढ़े हैं, राजा अश्वपति कहता है मेरे देश में कोई व्यभिचारी या व्यभिचारणी स्त्री नहीं परन्तु मनुष्य गणना के विवरण में मुद्रित हुवा है कि भारतवर्ष में ५ लाख

२५ हज़ार वेश्यायें हैं जिनके पास यदि प्रति दिन एक मनुष्य व्यभिचार के लिये जाय तो वर्ष में १८ करोड़ मनुष्यों ने व्यभिचार किया इसके अतिरिक्त जो और व्यभिचार है इसका तो क्या कहना अस्तु— यह बदकारी हमारे देश में है। अब बतलाना चाहता हूं कि इन रोगों के कारण क्या हैं। इनके चार कारण हैं।

(१) देश द्रोह-अर्थात् अपने देश की वस्तुओं को उपयोग में न लाकर अन्य देश की वस्तुओं को अपनाना जैसे हमारे देश में ६५ लाख गाँठ कपास उत्पन्न होती है जिसमें से हम, १८ करोड़ की कपास विदेशों में भेजते हैं परन्तु इसके बजाय ७० करोड़ रुपये का कपड़ा विदेशों से हमारे देश में आता है. गोया हम ५२ करोड़ रुपया भी घाटा उठाते हैं और अपने देश के जुलाहों को बेकार भी बनाते हैं। जब ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने भारत का राज्य शासन ले लिया तो मनुष्य गणना करने पर १॥ करोड़ के लगभग जुलाहे भारत में थे परन्तु अब केवल ४१ लाख रहगये हैं गोया एक करोड़ जुलाहे बेकार होकर कुली और घास काटने वाले बन गये। इसी प्रकार हमारे देश में २८ करोड़ रुपये का लोहे का सामान मोटर लारियां, साईकल, गार्डर आदि आते हैं, ६ करोड़ रुपये की घड़ियां आती हैं, ८ करोड़ रुपये की दियासलाई, ६ करोड़ रुपये का चमड़े का माल, २६ करोड़ रुपये का रेलवे का सामान कुल २४० करोड़ रुपये का माल विदेशों से भारत में प्रतिवर्ष

आता है। यदि हम इन तमाम वस्तुओं का अपने देश में बनाने का प्रबन्ध करें तो हमारी बेकारी आदि चारों रोग दूर होजायें।

दूसरा कारण भिखारी हैं। हमारे देश में ५६ लाख भिखारी हैं जिनमें ४० लाख साधू के लिबासमें हैं। यदि प्रत्येक भिखारी प्रतिदिन तीन आने भोजनादि के लिये व्यय करे तो एक वर्ष में ४० करोड़ रुपया इन भिखारियों का व्यय होता है। हम ४० करोड़ रुपया नाश करते हैं और ५६ लाख मनुष्यों को बेकार भी बनाते हैं क्योंकि यदि हम उनको देना बन्द करदें तो कोई न कोई कार्य करके अपना निर्वाह करें। इन भिखारियों और साधुओं से देश को कोई लाभ नहीं। न तो यह विद्या पढ़ते पढ़ाते हैं न उपदेश करते हैं इसलिये देशके लिये हानिकारक हैं।

तीसरा कारण पुजारी और पण्डे हैं जो मन्दिरों और तीर्थों पर अपना अधिकार जमाये हुये हैं। भारत निवासियों का तीर्थों और मन्दिरों पर प्रति वर्ष ५.६ करोड़ रुपया खर्च होता है। यह पुजारी और पण्डे हमारा दान लेकर ही दुराचार में लगाते हैं। जापान की सरकार ने मन्दिरों का सुधार ऐसा किया है कि पुजारियों का वेतन नियत कर दिया है। मन्दिरों पर जो चढ़ावा होता है सरकार उसका प्रबन्ध करती है, उसमें से पुजारियों का वेतन और मन्दिरों की मरम्मत का व्यय निकाल कर बाकी रुपया अनाथों और गरीबों की शिक्षा पर लगाती है ताकि इससे देश में बेकारी और दरिद्रता न रहे। यदि हमारे देश के नेता भी मन्दिर सुधार का कार्य हाथ में लें

तो ५६ करोड़ रुपये में से १६ करोड़ रुपया पुजारियों के वेतन और मन्दिरों की मरम्मत का खर्च निकाल कर ४० करोड़ रुपये से सहस्रों धन्धों के स्कूल और व्यवसाय के कार्य किये जा सकते हैं जिनसे देश का दुख दूर हो जाय।

चौथा कारण--हमारे रिवाज कुरीतियां और अन्य फ़िज़ूल खर्चियां हैं। विवाह पर कितना रुपया व्यय होता है। आतिश-बाज़ी पर ३ करोड़ रुपया मुक़द्दमात पर २८ करोड़ रुपया प्रति वर्ष, सिनेमा थियेटर पर ६ करोड़ रुपया व्यय होता है। इस प्रकार मल्लयुद्ध, पर्व और त्यौहारों पर हमारा कितना धन व्यर्थ जा रहा है। अस्तु मैंने अपने देश के चार रोगों के चार कारण बताये हैं। यदि हम इन कारणों को दूर करदें जो हमारे अपने वश में हैं तो हमारे यह रोग दूर हो सकते हैं। सरकार हमें मजबूर नहीं करती कि आप विदेशी वस्तुयें उपयोग में लायें न विवाह और पर्वों पर या मन्दिरों पर व्यय करने के लिये प्रेरणा करती है। अतः यह कारण हमने स्वयं उत्पन्न किये हैं और यह हमारा ही काम है कि इन कारणों को संगठित होकर दूर करें। अब मैं बेकारीके दूर करनेके उपाय वर्णन करता हूं। मैंने संसार भर में एक देश देखा जहां बेकारी नहीं है। वह है जापान का देश। मैंने इसके सम्बन्ध में अपनी पुस्तक जापान दर्पण में लिखा है—

न बेकारी न बदकारी न भिखारी न बीमारी।
रहें खुशहाल यहां दिन रात जापानी नर व नारी॥

गोया जापान ने अपने देश से इन चार दुखों को दूर कर दिया है। इनका विस्तार पूर्वक वर्णन मेरी पुस्तक में हैं। परन्तु मैं यहाँ वर्णन करूंगा कि जापान ने किन साधनों से बेकारी को अपने देश से दूर कर दिया है। जापान के मेकाडोल (राजा) ने अपने देश में न केवल आरम्भिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया, किन्तु यह भी आज्ञा की कि प्राइमरी स्कूलों में बालकों को एक व्यवसाय सिखाया जाय और मैट्रिक के लड़के दो व्यवसाय सीखें। गोया प्रत्येक बालक बालिका के लिये व्यवसाय का सीखना अनिवार्य है। इसलिये जबकि जापानी प्रत्येक बालक बालिका एक व्यवसाय को सीखते हैं तो वह बेकार नहीं रह सकते। वह अपना निर्वाह स्वयं व्यवसाय के द्वारा कर सकते हैं। दृष्टान्त मात्र जापान में २० करोड़ रुपये के खिलौने तैयार होते हैं। यहाँ खिलौने स्कूलों के विद्यार्थी तैयार करते हैं। सरकार ने एक आर्थिक विभाग खोला हुआ है जिसका नाम है (Commercial and Industrial Department) स्कूलों के तमाम तैयार किये हुये माल को यह विभाग खरीद लेता है। विद्यार्थियों को अपनी बनाई हुई वस्तुओं का दाम मिल जाता है। सरकार इस माल को कुछ नफ़ा लेकर व्यापारियों के पास बेचती है और वह आगे नफ़े पर बेचते हैं। इस प्रकार विद्यार्थियों के व्यवसाय के कार्य करनेमें उत्तेजना और उत्साह उत्पन्न होता है। जापान में दस प्रकार के खिलौने बनाना सिखाया जाता है अर्थात् कागज़, लकड़ी, मिट्टी, पत्थर,

सिलोलाइड, रबर, मोम, बटन, लोहा और पीतल के खिलौने बालक तैयार करते हैं। ऐसे ही बटन बनाना, कागज़ व रंग तैयार करना, चाकू के दस्ते आदि १३४ प्रकार के हुनर जापानी स्कूलों में सिखाये जाते हैं। मैट्रिक का लड़का प्रतिदिन एक घड़ी तैयार कर लेता है जिस पर नौ आने लागत आती है। भारत आने तक ऐसी घड़ी पर महसूल, चुंगी व किराया जहाज़ मिलाकर तीन आने खर्च पड़ता है। गोया बारह आने में जापानी घड़ी भारत में पहुंचती है। यहां आकर तीन रुपये से लेकर पांच सात रुपये तक बिकती हैं। इस प्रकार मैट्रिक के विद्यार्थी साठ सत्तर रुपये मासिक घड़ियां बेचकर कमा सकते हैं। अस्तु मेरा तात्पर्य यह है कि जापान का कोई विद्यार्थी बेकार नहीं रह सकता चूंकि इन्हें एक व्यवसाय आता है। इसलिये इनके द्वारा वह अपना निर्वाह कर सकते हैं। जापान में ५८०० व्यवसाय के स्कूल हैं। १८०० कृषि विद्या के और १२०० शिल्पकारी के स्कूल हैं इस लिये लड़के इनमें शिक्षा पाकर अपने निर्वाह के लिये पर्याप्त धन कमा लेते हैं और किसी को बेकार बैठने का अवसर ही नहीं मिलता है।

कारखानों में अधिक विद्यार्थियों को काम करने का भी अवसर मिल जाता है मैंने अपनी पुस्तक में उन तमाम व्यवसायों के नाम देदिये हैं जो जापान में सिखाये जाते हैं। इस लिये अब आवश्यकता है कि हमारे नवयुवक जापान में जाकर वहां हुनर सीखें। वहां जाने का किराया कलकत्ता से

कुल ७५ रु० है २२ दिन का सफर है और वहां का मासिक व्यय पच्चीस तीस रुपये से अधिक नहीं है। सब वस्तुयें सस्ती हैं। वह लोग घरेलू धन्धे सिखाने में संकोच नहीं करते। वहां नेशनल कांग्रेस, सिंध मर्चेन्ट एसोसियेशन, भारतीयों की हितकारणी सभायें बनी हुई हैं जो नये प्रवेश करनेवाले विद्यार्थियों की यथा शक्ति सहायता करती हैं। इस लिये भारतीय विद्यार्थियों के लिये जापान में जाकर हुनर सीखने के लिये पर्याप्त क्षेत्र हैं मगर सबसे आवश्यक बात जिसने जापान को थोड़े समय में इतना समृद्धिशाली बनाया इसका कारण यह है कि जापान के बालकों को ४० प्रश्न उत्तर बनाये हुये कंठ कराये जाते हैं। इन प्रश्न उत्तरों में सारे जीवन के उद्देश और निचोड़ आजाता है। यह प्रश्न उत्तर वहां के बड़े अनुभवी विद्वानों ने मिल कर बैठ कर बनाये हैं। बच्चों के भीतर जो भाव बालक अवस्था में डाले जावें वही बड़ी आयु में विकास पाकर उनके जीवन के भीतर अंकित होजाते हैं। मैं यहां केवल पांच प्रश्न उत्तर आपके संमुख रखता हूं शेष आप मेरी रचित पुस्तक में देखलें।

प्रश्न १–तुम जापान में क्यों पैदा हुए Why are you born in Japan.

उत्तर–मातृ भूमि का नाम उज्ज्वल करने के लिये। To brighten the name of motherland.

प्रश्न २–तुम्हारा धर्म क्या है What is your religion.

उत्तर–स्वतन्त्रता । Liberty.

जिन बच्चों के भीतर यह भाव डाला जाय कि तुम्हारा धर्म स्वतंत्रता है वह बड़े होकर किसी जाति के पराधीन हो सकते हैं ?

प्रश्न ३–जापान की सम्पत्ति क्या है ? Where lies the wealth of Japan ?

उत्तर–इसके नवयुवक में In her youth.

प्रश्न ४-तुम्हारी भक्ति क्या है ? What is your devotion ?

देश भक्ति, जाती भक्ति और राज्य भक्ति Patriotism, Nationalism aud serve our King.

प्रश्न ५–तुम्हारे लिये बड़ा पाप क्या है ? What is the great sin for you ?

उत्तर-कायरपन, देश द्रोह । Cowardliness, to be traitor.

जिस देश के बालकों के अन्दर इस प्रकार से देश भक्ति, वीरता और व्यवसाय करने के विचार फूकें जावें वह देश क्यों न साठ वर्ष में इतनी उन्नति करे कि जिसका मुकाबला नौ गुना अधिक मनुष्य संख्या वाला देश चीन नहीं कर सकता। जिस देश में ऐसे भाव और विचार बालअवस्था से हृदयों पर अंकित किये जायें वहां बेकारी, बीमारी और बदकारी निवास नहीं कर सकते । अस्तु यदि हम भी जापान का अनुकरण करें तो कभी हम जापान से भी अधिक उन्नत और समृद्धशाली बन सकें ।

व्याख्यान नं० ६

विज्ञान तथा धर्म का समझोता

सत्रहवीं शताब्दी तक यूरुप और अमरीका में ईसाई मत का इतना प्रभव था कि साईंस की बात को पादरी लोग सुनने को तय्यार न थे। १६ फरवरी १६०६ को राबर्ट ब्रोनों (R. Bruno) को आग में जलाया गया चूंकि वह कहता था कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के गिर्द भ्रमण करती है। ऐसे ही रलिलो को १० वर्ष की जेल में डाला गया। इसने कहा कि सितारों में हमारी पृथ्वी के समान आबादी है और कई हमारी पृथ्वी से भी बड़े हैं। ऐसा ही अन्य वैज्ञानिक लोगों पर पादरी लोगों की ओर से बहुत अत्याचार किये गये। परन्तु फिर भी साईंसदां बड़े धीरज और गम्भीरता से कार्य करते हैं। अस्तु हैकिल ने जो पुस्तक संसार की पहेली (Reddle of the Universe) लिखी वह पाँच लाख के लगभग बिकी हुई। इस्लाम और ईसाई मत दोनों साईंस (वैज्ञानिक शक्ति) और फिलासफी (पदार्थ विद्या) का अत्यन्त विरोध करते रहे। महोदय ड्रेपर अपनी पुस्तक साईंस और धर्म का विरोध (Conflict between science and religion by Draper) में लिखते हैं कि opposition to philosophy was organised all over the Islamic dominions, the philosophers were executed and punished. अर्थात् तमाम

मुसलमानी राज्य में फ़िलासफी का घोर विरोध किया जाता और कड़ा दण्ड दिया जाता था। परिणाम यह हुआ कि ज्यों ज्यों लोग साईंस और फ़िलासफी में उन्नति करते गये मज़हब से घृणा करते गये और कहते गये कि अब मज़हब के स्थान में साईंस का राज्य होगा। १६१६ में ऐक कमीशन (जांच समिति) ने १५०० पादरियों को ४ प्रश्न पूंछे और उनसे इनका उत्तर माँगा, वह प्रश्न यह थे (१) क्या आप सच्चे हृदय से स्वीकार करते हैं कि ईसा कुमारी मरयम के गर्भ से उत्पन्न हुवा? ६५ प्रतिशत पादरियों ने नफ़ी में उत्तर दिया, ३ प्रतिशत ने उत्तर न दिया। (२) क्या आप मानते हैं कि ईसा मरने के पश्चात् क़ब्र से जी उठा? इसपर ७५ प्रतिशत ने लिखा कि हम ऐसा नहीं मानते। सात प्रतिशत ने उत्तर भी न दिया। (३) स्वर्ग नर्क अगर हैं तो कहाँ हैं। इस पर ८३ प्रतिशत पादरी स्वर्ग नर्क से इन्कार कर गये। ११ फ़ी सदी ने उत्तर भी न दिया। (४) क्या मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा रहता है? उत्तर में ६६ प्रतिशत ने जीवात्मा का अमर होना स्वीकार किया। अतः साईन्स ने इस प्रकार मज़हब की जड़ें खोखली करदीं। अतः साईन्स ने इतनी उन्नति की और आविष्कार किये कि धर्म और ईश्वर की सत्यता और शक्ति से भी इन्कार करने लगे। परन्तु टाइटानिक जहाज़ जो ८० हज़ार टन का बनाकर समुद्र पर चला गया इनके नष्ट होने और १०१ R हवाई जहाज़ जो लंदन से कराची को १६३० ई० में चला था इसके जल जाने से

साईन्सदाओं का अभिमान चकनाचूर हुवा और उन्हें मानना पड़ा कि मनुष्य की शक्ति से अधिक कोई नियंता शक्ति है जिसके सामने हमारी विज्ञान की शक्ति तुच्छ है। अतः अन्त में साईन्सदाओं की एक सभा वैठी जिसने ईश्वर और धर्म के सम्बन्ध में निर्णय किया और इसपर महोदय थामस (Thomas) ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम साईन्स व धर्म रक्खा। इसमें से थोड़े से विद्वानों की सम्मतियां उपस्थित करता हूं (१) सर अलवरलाज अपनी किताव में लिखते हैं कि यह संसार मशीन के समान नहीं है लेकिन एक चैतन्य शक्ति का चमत्कार है जो एक देव शक्ति का है। इस शक्ति को चैतन्य शक्ति (Intelligent energy) कहना उचित है। (२) महोदय (Instein) इन्सटेन जो यहूदी साईंस में महान अनुभवी हैं अपनी पुस्तक वैज्ञानिक जगत (Scientific World) में लिखता है—मैं ईश्वर पर विश्वास रखता हूं क्योंकि संसार नियम वद्ध है। जो लोग जगत को अकस्मात वना हुवा समझते हैं भूल में हैं। साईंस हमें वताती है कि जगत की उत्पत्ति की तह में अद्भुत बुद्धि व शक्ति काम कर रही हैं। (३) हल्डमैन (Haldman) प्रोफेसर फ़ीजिक्स (Physics) आक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी "कोई समय था सव साईंसदा समझते थे कि मनुष्य कीमयाई परमाणुओं का समूह है परंतु अब स्थिति में परिवर्तन आगया है। इस संसार के भीतर एक अनुपम बुद्धि

है जो कि तमाम देवलोक के प्रबंध और वनस्पति को एक तरतीब में बराबर रखती है। हम चाहे इसे किसी नाम से पुकारें परंतु वह चैतन्य शक्ति है। (४) सर आर्थर रेडनिघटन (Sir Arthur Rednighten) सृष्टि नियम इतिहास का पतन में लिखता है कि अब प्राचीन नास्तिकता की समाप्ति हो गई है। हम धर्म को तिलांजली नहीं दे सकते क्योंकि धर्म का सम्बन्ध हक़ और आत्मा के साथ है और साईंस का प्राकृतिक वस्तुओं के साथ। ज्यों ज्यों हम खोज करते हैं प्रतीत होता है कि यह संसार केवल प्रकृति का परिणाम नहीं है किन्तु इस की तह में एक महान शक्ति का हाथ है जिसकी बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म और सर्वव्यापक है। (५) प्रोफेसर दिलकसन अमेरिका निवासी का मत है कि केवल परमात्मा ही है जिसने संसार को संगठित कर रक्खा। है यदि उसकी शक्ति को पृथक करदें तो संसार माला के मनकों की तरह बिखर जावे।

इस प्रकार १९१६ ई० में साईंसदाओं की एक और सभा बैठी जिसका उद्देश्य परस्पर समझौता कराना था। साईंस ने धर्म के सिद्धांत स्वीकार कर लिये और धर्म ने साईंस के। वह यह हैं–धर्म ने तीन सिद्धांत उपस्थित किये (१) साईंसदां उस महान शक्ति को स्वीकार करें जिसे परमात्मा कहते हैं। साईंस ने मान लिया। (२) जीवात्मा को अनादि स्वीकार करें। (३) साईंस का उद्देश्य प्रकृति से उन्नति, परस्पर हित के लिये हो न कि तबाही के लिये। साईंस के तीन सिद्धांत

धर्म ने स्वीकार किये परन्तु मज़हब स्वीकार न कर सके। इस लिये वह साईंस के सामने फेल हो गया अर्थात असफलता को प्राप्त हुए अर्थात (१) प्रकृति को अनादि मानो। (२) धर्म युक्ति और बुद्धि की कसौटी पर पूरा उतरना चाहिये। (३) परमात्मा चैतन्य शक्ति है। वह (Personal) व्यक्तिगत दृष्टि-गोचर नहीं है। मज़हब यहाँ नहीं ठहर सकते।

तत्पश्चात् १९२७ की शिकागो कांफ्रेंस में तमाम मज़हब को एक सतर पर लाने के लिये चार सिद्धांत नियत किये गये (१) समानता (equality) अर्थात तमाम मनुष्य एक समान हैं। इस पर ईसाई और मुसलमान न ठहर सके क्योंकि वह काफ़िरों से घृणा करते हैं। (२) Harmonius development अर्थात् (शारीरिक सदाचार-सामाजिक) उन्नति एक समान हो। इस पर भी दुनिया के मज़हब न ठहर सके परन्तु आर्य समाज का छटा नियम इस सिद्धांत की पुष्टि करता है। (३) Sationalism अर्थात् साईंस और फ़िलासफ़ी धर्म का अंग हों न कि इससे पृथक। मज़हब यहां भी नहीं ठहरते परन्तु वैदिक धर्म साईंस को उपवेद और फ़िलासफ़ी को अंगवेद के नाम से पुकारता है।

Liberty मस्तिष्क स्वतन्त्रता धर्म का अंग हो। मज़हब मनुष्य को दासत्व सिखाते हैं परन्तु धर्म मनुष्य परस्ती से छुटाता है। धर्म का उद्देश यह है कि जिसके द्वारा हमें शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त

हो। अस्तु संसार के मज़हब साईंस के समझौते से परे हटते हैं परन्तु वैदिक धर्म साईंस को न केवल अपनाता है किन्तु धर्म और साईंस को मिला देता है अर्थात् एक माला में पिरो देता है। वास्तव में धर्म और साईंस का परस्पर सम्बन्ध अटूट है क्योंकि साईंस प्रकृति का ज्ञान देती है धर्म आत्मा का ज्ञान देता है (२) साईंस शारीरिक आनन्द और आरायश का सामान प्राप्त करता है जैसे साईंस से मनुष्य ने तार रेल हवाई जहाज़ मोटरादि सुख और आनन्द के सामान प्राप्त कर लिये हैं परन्तु इनसे आत्मा को शान्ति प्राप्त नहीं हुई, आत्मा की शांति और आनन्द भीतर से आता है बाहर के पदार्थों से नहीं मिलता। (३) साईंस में तमाम वस्तुओं का बनना बनाना, मिलाना पृथक करना अर्थात् (How) बताता है परन्तु धर्म हमें इनका कारण Why बताता है जैसे साईंस बताता है कि सृष्टि कैसे बनी, कब बनी, इसमें क्या २ वस्तुयें हैं परन्तु धर्म हमें बतायगा कि सृष्टि को किसने और क्यों बनाया। साईंस बताता है कि एक बच्चा अंधा पैदा हुआ, धर्म बतायगा कि बच्चा अन्धा क्यों पैदा हुआ (४) साईंस हमारे अनुभवों और दृष्टि का परिणाम है (Result of our experiments and observation) धर्म हमारी अन्दरुनी शक्तियों के विकाश का नाम है जैसे साईंस के बल से हम दूरबीन बना कर दूर की वस्तुओं को देख सकते हैं परन्तु धर्म हमें योग साधन बताता है जिसके द्वारा हम इन्द्रियों को वसीभूत करके अपनी आन्त-

रिक दृष्टि से दूर के सितारे और अन्य वस्तुयें देख सकते हैं जहाँ तक कि अभी साइंस नहीं पहुंचती है (५) साइंस का कार्य है आविष्कार करना और अविद्या दूर करना परन्तु इसका प्रयोग भोगवाद की ओर होरहा है। धर्म हमें सदाचार-प्रेम और परोपकार की शिक्षा देता है साइंस इन बातों से शून्य है (६) साइंस हमें सुख और दुख दोनों की तरफ लेजाता है साइंस द्वारा हम अपने भाइयों को नष्ट कर सकते हैं जातियों का नाश कर सकते हैं परन्तु धर्म हमें केवल सुख शांति और आनन्द की तरफ लेजाता है। (७) साइंस के नेता दुराचार और भोगवाद में अपना जीवन नष्ट कर सकते हैं परन्तु धर्म हमें त्याग तप जितेंद्रिय होने का उपदेश करता है और हमारे जीवन में परिवर्तन उत्पन्न करता है इस लिये उचित है कि धर्म और साइंस दोनों को मिलाया जावे और इनसे लाभ उठाया जावे। वैदिक धर्म तो साइंस को अपना अंग समझता है और इंसानी जीवन को सम्पूर्ण तब ही समझता है जबकि प्राकृतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान सम्पूर्ण हो। इसी का नाम मोक्ष या पूर्ण स्वतंत्रता है।

व्याख्यान नं० १०

उन्नति के साधन

बाली टापू में कमंद का नीति शास्त्र मिलता है जिसके अनुसार वहां के राजे राज्य शासन किया करते थे यह पुस्तक भारत में तो नहीं मिलती इसमें जाति की उन्नति और अवनति के चार साधन वर्णन किये हैं अर्थात् उन्नति के साधन भाषा, भोजन, भुजा और भक्ती। अवनति के कारण भेद (परस्पर की फूट), भय (कायरपन), भ्रम (तोहमात परस्ती) और चौथा भ्रष्टाचार वर्णन किया है। भाषा, वास्तव में किसी जाति की सभ्यता और संस्कृति का मंदिर है जिसमें लिखे हुये वाक्यों से हम अपने पूर्वजों, ऋषियों, विद्वानों और वीरों के विचारों और भावों को देख कर उनकी याद को ताज़ा कर लेते हैं। इनके स्वाध्याय करने से मुर्दा हड्डियों में जान आजाती है अर्थात् जाति में जागृति पैदा होती है भाषा की सहायता से हम पूर्वजों के अनुभव आदि बुद्धिमता से लाभ उठाते हैं इस लिये राज्य शासन करनेवाले अपने राज्यकी जड़ को दृढ़ रखने के लिये अपनी भाषा को प्रचलित करके देशी भाषा को नष्ट करने का यत्न करते हैं ताकि प्रजा के हृदयों से प्राचीन गौरव और पूर्वजों का सम्मान मिट जावे और फिर उन्नति करने का भाव उनके अन्दर उत्पन्न न हो क्योंकि संसार का राज्य विचारों और जज़बात पर निर्भर

है न कि तोप और तलवार पर, जो आनन्द रामायण महाभारत का असली भाषा में पढ़ने से आता है वह अनुवाद की हुई भाषा में आधा भी नहीं आता। वर्तमान समय के भारत निवासी अपनी भाषा को छोड़ करके नई हिन्दुस्तानी भाषा बना कर या कहीं रोमन लिपी जारी करके स्वराज्य प्राप्त करने के दावेदार बन रहे हैं और अन्य देशी भाषाओं को अपनाने में लज्जा नहीं समझते हैं। यह हमारी आधीनता और दासता के चिन्ह हैं। इस शरीर के साथ अपने मस्तिष्क को भी दास बना रहे हैं जब जर्मन का अधिकार लोरालानन पर होगया और वहां जर्मन भाषा स्कूलों में पढ़ाई जाने लगी तो जर्मनी की महारानी एक बार वहां गई एक पुत्री पाठशाला के निरीक्षण करने पर एक पुत्री की चतुराई देखकर बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि जो कुछ तू मांगे तुझे दिया जावेगा। उसने उत्तर में कहा कि जर्मन भाषा के स्थान में हमारे स्कूल में फ्रेंच भाषा प्रचलित की जाय ताकि हमारी संस्कृति नष्ट न होजावे। एकबार महोदय ग्लेडस्टोन राज्य मंत्री ने कहा था कि मैं इङ्गलिस्तान के राज्य की अपेक्षा शेक्सपियर के गानों को अधिक मूल्यवान समझता हूं क्योंकि यह हमारी सभ्यता का कोष हैं वर्तमान समय में हम अपनी २ धार्मिक और राजनैतिक सभाओं में और निज के पत्र व्यवहार में अंग्रेज़ी के प्रयोग में लाना अभिमान समझते हैं कांग्रेस में प्रधान लेख (भाषण) अंग्रेज़ी में हुवा करता है। अन्य देशी भाषायें पढ़ना

तो बुरा नहीं इनसे हमारी योग्यता और अनुभव अधिक होते हैं परन्तु जाति उन्नति के लिये अपनी भाषा में ही हम उन्नति कर सकते हैं। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस मरम को समझ कर अपनी प्रान्तिक भाषा गुजराती को त्याग कर राष्ट्रीय भाषा हिन्दी ग्रंथ रचे और अपने किये। अस्तु भाषा ही किसी देश और जाति की मुख्य उन्नति का पहला साधन है। दूसरा साधन भोजन है। भोजन में अनाज और धन दोनों सम्मिलित हैं क्योंकि अनाज भी धन के बिना प्राप्त नहीं होसकता। महोदय रोज़न अध्यक्ष कृषि-विभाग लिखते हैं कि भारत में २३ करोड़ एकड़ भूमि में कृषि की जाती है परन्तु हन्टर साहब (W. Hunter) दुर्भिक्ष समिति के प्रधान लिखते हैं कि पांच करोड़ भारतियों को भोजन नहीं मिलता। वह भारत जो कभी स्वर्णभूमि था आज भोजन के लिये मोहताज हो रहा है। कौनसा पाप है जो भूखा आदमी नहीं कर सकता। पंजाबी में कहावत है- 'पेटन पय्यां रोटयां, समें वाटां खोक्यां' अर्थात् जिसे खाने को न मिले वह कोई काम नहीं कर सकता। प्रत्येक संस्था की सफलता के लिये ऐसे वीरों की आवश्यकता है जो भोजन से निश्चिन्त हों। हमारे यहां भूमि की कमी नहीं परन्तु धन कमाने के साधन कम हैं हमारे देश में ७३ प्रतिशत लोगों का विर्वाह कृषि पर है परन्तु किसी ग्राम में सरकार ने कृषि करने वालों या इनकी सन्तान को कृषि विद्या सिखाने का प्रबन्ध नहीं किया इसी का

परिणाम यह है कि जहाँ हमारे देश में एक एकड़ भूमि में १० मन अनाज पैदा होता है अमरीका में ३६ मन और रूस में ४२ मन उत्पन्न होता है वहाँ की जनता खाद गोवर गोमूत्र की कदर जानते हैं। वह नये यंत्र और हल बना कर अधिक पैदावार करते हैं। हमारे कृषि करने वाले अविद्या के कारण किंचित मात्र भी उन्नति नहीं करते। अमरीका में बिजली के द्वारा साल में छः वार पैदावार करते हैं हमारे देश में दो बार से अधिक नहीं करते साथ ही हमारे देश में सरकार की ओर से व्यवसाय-धन्धे शिल्पकारी और दस्तकारी सिखाने का कोई प्रबन्ध नहीं है इस लिये हमारा तमाम धन अन्य देशों में वहाँ की वस्तुयें मंगाने में नष्ट होरहा है। इसलिये जब हमारे पास धन न रहा तो भोजन कहाँ से प्राप्त हो? अन्य देशों में सरकार की ओर से कृषि और दस्तकारी के बड़े २ विद्यालय हैं जिनमें बालकों को शिक्षा देकर धन कमाने के उपयोगी बनाया जाता है। परन्तु हमारे देश में पुस्तकें रटाकर बेकार बनाया जाता है अमरीका डेढ़सौ वर्ष में जापान साठ वर्ष में रूस बीस वर्ष में जो इतनी आश्चर्य जनक उन्नति कर गया इसका मूल कारण धन कमाने के साधन हैं जो इन देशों में जारी हुवे और इन्हें धनवान बना दिया। इसलिये अमरीका में एक मनुष्य की आय वार्षिक २०६४ रुपये है। मगर भारत में ३८ रुपये हमारे देश का ३४० करोड़ रुपया विदेशी चीज़ों के लिये बाहर जाता है इस लिये हम निर्धन हैं। पस संक्षिप्त रूप से

हमारी दरिद्रता का कारण निम्नलिखित है। (१) हमारे व्यव-साय का नष्ट होजाना। (२) कृषि में अधिक आदमियों का काम करना। (३) कृषि विद्या का प्रचलित न होना। (४) मौसमी रोगों मलेरिया प्लेग आदि का होना और स्वास्थ अच्छा न होना। (५। कृषि पर सरकार का कर अधिक होना। (६) नशा (शराब, अफयून, गांजा) का अधिक प्रयोग। (७) भिखारियों की अधिक संख्या। (८) पुजारी और पण्डों की अधिकता हमारा ५६ करोड़ रुपया मन्दिरों और तीर्थों की भेंट होता है। (६) वेश्याओं का व्यय प्रति वर्ष ६२ करोड़ रुपया। (१०) हमारी कुरीतियाँ और फिजूल खर्चियां जो विवाह आदि अवसरों पर करते हैं ऐसे और भी अनेक कार्य हैं जिन्होंने हमें निर्धन बना कर उन्नति करने से रोक रखा है।

तीसरा—भुजा अर्थात् शारीरिकबल है कहावत है जिसके पास बल है सब कुछ उसी का है। अंग्रेजी में कहावत है—might is right हिन्दू जाति हमेशा से वीरों की पूजा करती आई है। हिन्दू लोग नौ अवतार मानते हैं परन्तु प्रजा केवल दो अवतारों की पूजा करती है जो बहुत बलवान थे अर्थात् राम जिसने बड़े बलवान राक्षसों और रावण का वध किया और कृष्ण जिसने कंस और जरासंध जैसे बलवान अत्याचारियों का विध्वंस किया। हनुमान की पूजा भी इसलिये होती है कि वह महावीर और महाबलि था। इसी प्रकार युरोप और अमरीका में भी बलवानों का सम्मान है। मगर हिन्दू जाति

अब कुछ समय से बलहीन और कायर पड़ गई है जिसके कारण यह हैं—(१) छोटी आयु में विवाह हो जाना (२) स्कूलों में ब्रह्मचर्य की रक्षा का न होना (३) व्यायाम की ओर ध्यान न देना (४) अच्छा भोजन न खाना। भोजन को केवल पेट भरने का साधन समझना और उत्तम बल देने वाले भोजन का उपयोग में न लाना (५) बचपन में बालकों को भयभीत करना तथा उनके हृदय में भय की बातें डालना। इनका परिणाम यह है कि हमारी आयु का माध्यम घट गया है। चुनांचे न्यूज़ीलैंड में आयु का माध्यम ५८ वर्ष, नार्वे में ५५ वर्ष, अमरीका में ५२ वर्ष, हालैंड में ५५ वर्ष इंगलैंड व फ्रांस में ४८ वर्ष परन्तु भारत में जहां कि संध्या के मंत्रों में हम सौ वर्ष जीने की प्रार्थना करते हैं हमारा माध्यम आयु कुल २४ वर्ष रह गया है तथा हमारे शरीर दुबले पतले रोगग्रस्त रहते हैं। इनका उपाय यह है कि विवाह की आयु २५ वर्ष नियत होनी चाहिये। बच्चों को कुसंग से बचाया जाय, दूध की छाछ बच्चों को अधिक दिया जाय, इनका व्यायाम की ओर अधिक ध्यान दिलाया जाय, बच्चों, युवकों को फौजी क़वायद सिखाई जाय और वायु भक्षण की तरफ़ अधिक ध्यान दिया जाय। इन्हें रामायण और महाभारत से वीरों के चरित्र सुनाये जायं और जापानियों के समान निर्भय किया जावे।

चौथा साधन भक्ति है। यह तीन प्रकार की है अर्थात् देश भक्ति, जाति भक्ति और ईश्वर की भक्ति, हमने भक्ती का तात्पर्य

प्रतिमा, पत्थर पुस्तक, कब्र, वृक्षों नदियों के आगे सर झुकाना विशेष नाम को वार बार रटना और जाप करना भक्ति समझ रखा है वास्तव में यह भक्ति नहीं है जैसे मैंने ऊपर कहा पहिले देश भक्ति चाहिये अर्थात् अपने देश में वस्तुयें उत्पन्न करना इन्हें अपनाना और अन्य देशों में इन्हें बेचना। हम मानचैस्टर और लंका शायर की मलमल और जापानी माल पर मोहित होते हुये इन्हें अभिमान से उपयोग में लाते हैं केवल ८० करोड़ रुपये का कपड़ा प्रतिवर्ष हमारे देश में आकर विक्री होता है फिर भी हम भारत माता की जय बोलते हैं जापान में बच्चों को सिखाया जाता है कि तुम देश भक्त बनों इस लियं जापान का बच्चा बच्चा देश भक्त है। वह देश पर मर मिटने को तय्यार है हमें दास बनाना सिखाया जाता है। जर्मन में बच्चों को उपदेश दिया जाता है कि तुम अन्य देशों की वस्तुयें फल शराब आदि कभी उपयोग में न लाओ यहां तक कि चाय कलम काग़ज़ भी स्वदेशी उपयोग में लाओ अस्तु देश भक्ति वास्तव में अपने देश में अपनी आवश्यकतायें पूरा करने का नाम हैं और देश को विदेशियों से रक्षा करने का नाम है।

(२) जाति भक्ति अपने निज के हित पर न्योछावर करना अपने आपको जाति रूपी मनुष्य का पुरजा समझना, अंग्रेज़ों की उन्नति का कारण जाति भक्ति है। शहाजहां की पुत्री का इलाज करने वाले डा० बाटन ने बादशाह से कुछ नहीं मांगा किन्तु जाति हित के लिये कहा कि सूरत में हमारी कम्पनी

को चार कोठियां बनाने की आज्ञा दी जावे और हमारी कम्पनी के असबाब पर चुङ्गी को माफ़ किया जावे। इस जाति हित के कारण अंग्रेज़ों के पांव भारत में जम गये। जब तक हमारे अन्दर जाति भक्ति अर्थात् जाति संघठन नहीं होता हम कैसे उन्नति कर सकते हैं। हमें तो (caste system) जाति भेद ने ऐसा पतित कर दिया है कि हम परस्पर कभी मिल नहीं सकते। ब्राह्मण को अपनी जाति का अभिमान है, क्षत्री को अपनी जाति का, वैश्य को अपनी जाति का, फिर उपजातियों में कई जातियां दूसरी जातियों को घृणा की दृष्टि से देखती हैं। इस प्रकार हम कभी संगठित नहीं हो सकते। हमें तो जाति भेद और प्रान्तिक भेदों ने ही नष्ट कर दिया है। संगठन कैसे हो—संगठन तब ही हो सकता है जब कि हम जन्म जाति भेद को मिटाकर सब हिन्दू एक हो जायं और अपने सब वैदिक धर्मी भाइयों को हिन्दू भाई समझकर इनसे प्रेम करें। जहां अपने देश के भाइयों से प्रेम नहीं, अपने धर्म के भाइयों से प्रेम नहीं, एक सभ्यता और संस्कृति मानने वालों से प्रेम नहीं वहां ईश्वर से प्रेम भी नहीं हो सकता। इस लिये ईश्वर प्रेम से पहिले देश भक्ति और जाति भक्ति का होना आवश्यक है।

तीसरा ईश्वर भक्ति—भक्ति के अर्थ किसी के गुणों को जानना, इनसे लाभ उठाना और नम्रता प्रगट करना है प्रकृति की भक्ति की भक्ति के अर्थ इसके गुणों को जानना इनसे लाभ उठाना है अंग्रेज़ लोग वास्तविक अर्थों में गुणों की पूजा या

भक्ति करते हैं। वह रेल और कारखाने चला कर लाखों रुपया कमाते हैं। हम इसके आगे धूप जलाना और हाथ जोड़ना इसकी पूजा समझते हैं। अंग्रेज़ लोग सूर्य की रोशनी धूप और गर्मी से नाना प्रकार के लाभ उठाते हैं। वास्तविक अर्थों में सूर्य की पूजा करते हैं। हम सूर्य के सामने खड़े होकर इसके आगे सर झुकायें और पानी फेंकना पूजा समझते हैं। ईश्वर भक्ति ६ प्रकार की हैं इनके तीन तीन अंग हैं।

(पहिली) संध्या करना इसके तीन अंग है। स्तुति, प्रार्थना उपासना, स्तुति से तात्पर्य इसके गुणों को जानना और इन पर ध्यान करना। मुंह से केवल ओ३म् ओ३म् या रामराम करने से कुछ लाभ नहीं। जप करने से तात्पर्य इसके गुणों को जानना और विचार करना है। जैसे कुनेन का नाम जपने से ज्वर दूर नहीं होता, पहिले कुनेन के गुण जानना चाहिये फिर इसको उपयोग में लाना चाहिये। प्रार्थना के अर्थ हैं प्राप्त करने की इच्छा करना। जब किसी के गुण प्रतीत होजावें तो फिर मनुष्य उस चीज़को प्राप्त करने की अभिलाषा करता है प्रार्थना में उन गुणों की प्राप्ति की इच्छा की जाती है जो हमने परमात्मा में प्राप्त किये हैं। जैसे हम कहते हैं परमात्मन आप बलवान हैं, मुझे भी बलदें, आप ज्ञानवान हैं, मुझे भी ज्ञान दें। पस प्रार्थना करनेवाला परमेश्वर को अपने संमुख समझ, सर्व व्यापक समझ कर हर प्रकार से दुःखों और पापों से बच सकता है। तीसरा दरजा उपासना है जिसके अर्थ हैं प्राप्ती

यह उत्तम उद्देश है अर्थात् गुणों को अपने अन्दर धारण कर लेना इसी का नाम ईश्वर से मिलाप है। जिस तरह अग्नि के समीप लोहा रखने से इसमें अग्नि का गुण गरमी आजाता है ऐसे ही भक्त में ईश्वरी गुण आजाते हैं।

दूसरी प्रकार की भक्ति–स्वार्थ भक्ति कहलाती है वह भी तीन प्रकार की हैं।

(१) ईश्वर से धन-संतान आदि वस्तुयें मांगने के लिये, इसका नाम रटना और इसकी प्रशंसा करना।

(२) दिखाने की भक्ति–किसी को आते देख कर आंखें बन्द करलेना ताकि लोग समझें कि यह बड़ा भक्त है अर्थात् अपनी कीर्ति के लिये ईश्वर का भजन और नाम लेना।

(३) अपने व्यवहार और कारोबार को उत्तम चलाने के लिये लोगों के सामने ईश्वर का नाम जपते रहना। जैसे दुकान पर बैठे सौदे बेचते समय और दीगर कार्यों में करते समय ईश्वर का नाम लेते रहना ताकि लोगों पर अपना विश्वास जम जाय कि यह भक्त आदमी है।

तीसरी प्रकार की आन्तरिक भक्ति है जो हृदय से स्वयं ईश्वरी ध्यान की चेष्टा उत्पन्न हो। वह तीन प्रकार की है अर्थात् त्याग, तप, तितिक्षा अर्थात् वासनाओं और विषयों का त्याग कष्ट सहन करना। शरीर के अंगों को दृढ़ बनाना और बुरे विचारों से बचाना इसे तप कहते हैं। इन्द्रीय दमन को तितिक्षा कहते हैं अर्थात् दुख सुख में एक समान रहना।

चौथी प्रकार की भक्ति–परमार्थिक है दूसरों के हित के लिये जीवन लगाना इसमें भी तीन साधन हैं सेवा, प्रेम, परोपकार, जिस मनुष्य में यह तीन गुन पाये जावें समझो कि परमात्मा का सच्चा भक्त है। अध्यात्मिक है। उसमें वैराग्य–सावधानता और योग साधन होने चाहियें।

छटी प्रकार की भक्ति–सम्बन्धिक भक्ति है। (१) ईश्वर को पिता समझ कर उसको स्मरण करना। जैसे बालक माता की गोद में जाने से आनन्द अनुभव करता है वैसे हम भी जब परमात्मा को याद करें वह हम में सच्चा आनन्द प्रदान करेगा। (दूसरा) परमात्मा को सर्वज्ञ समझ कर इससे ज्ञान और आनन्द की प्राप्ति के लिये याचना करना। (तीसरा) उसे मित्र समझ कर प्रेम करना। क्योंकि जहां प्रेम है वहां निर्भयता होती है प्रेम बड़ाई छोटाई और अभिमान को दूर कर देता है। यह है सच्चे अर्थों में भक्ति।

उन्नति के चार साधन यह तो मैंने कमन्द की नीति शास्त्र से वर्णन किये हैं इसी प्रकार टी एल वस्वानी ने चार साधन उन्नति के सेवा, संगठन, सदाचार, और शिक्षा वर्णन किये हैं।

भारत के प्रसिद्ध विद्वान राणाडे ने हमारी अवनति के कारण निम्न लिखित वर्णन किये हैं।

(१ जाति अभिमान। (२) स्पृशयता का भूत। (३) बाल विवाह। (४) विधवा विवाह न करना। (५) मिथ्या वैराग्य।

(पुरुषार्थ न होना)। (६) सुकड़ना (दूसरों को अपने साथ न मिलाना) अर्थात् शुद्धि न करना वर्णन किया है। वास्तव में कमन्द की नीति शास्त्र से बताये हुये कारण विशाल हैं इनमें सब आजाते हैं।

व्याख्यान नं० ११

भारत ही संसार का जन्मदाता है

पश्चिम के इतिहासकारों और लेखकों ने भारत की सभ्यता मिटाने के लिये ऐसे अनर्गल और भ्रम डालने वाले ग्रंथ रच दिये कि जिन्हें पढ़कर भारतियों के हृदय में अपनी मातृभूमि से प्रेम न रहे। चुनांचे इतिहासों में लिख दिया कि आर्य लोग मध्य एशिया से प्रस्थान करके भारत में आये और यहां के मूल निवासियों भील, गोंड़, सन्थाल आदि जातियों को पहाड़ों में भगाकर और मारकर उनके देश पर अपना अधिकार जमा लिया। हमारे नवयुवक ऐसी निराधार बातें पढ़कर अपने पूर्वजों और मातृभूमि का सम्मान क्या करेंगे परन्तु निष्पक्ष विद्वानों ने जिन्हें राजनीतिक बातों से सम्बन्ध नहीं है बड़े खोज और न्याय के साथ ऐसे विचारों को मिथ्या और भ्रम डालने वाला सिद्ध किया है। चुनांचे महोदय. जैकोलेट भूतपूर्व चीफ़ जज सुप्रिम कोर्ट चंद्रनगर और महोदय वानशोडर प्रोफ़ेसर संस्कृत केल यूनीवर्सिटी (जर्मनी)

ने जो पुस्तकें लिखीं हैं उनमें उन्होंने सिद्ध किया है कि तमाम संसार को आर्य लोगों ने प्रस्थान करके जाकर आबाद किया। हम इन दोनों पुस्तकों अर्थात Bible in India और Pre-historic antiquity of the Aryans (आर्यों की अत्यन्त प्राचीनता) से कुछ प्रमाण यहां उधृत करते हैं ताकि जनता को पता लग जावे कि आर्य लोग मध्य एशिया से आये या संसार को आबाद करने वाले थे।

(१) शोंडर महोदय लिखते हैं कि अत्यन्त प्राचीन काल में भारत से कुछ जातियों के समूह उत्तर पश्चिम को प्रस्थान कर गये।

पहिले जो पहाड़ी देश दृष्टिगोचर हुवा। अपगन उपजाति के खत्रियों ने वहां डेरा लगा दिया। यह जाति चंद्रवंश जाति की एक शाखा है जिसका वर्णन महाभारत में आया है। इन्होंने देश का नाम अपगनस्थान रक्खा। अरवी में प को फ से बदलते हैं इस लिये जलवायु के प्रभाव से देश का नाम अफगनस्थान पड़ गया ग दीर्घ करने से अफगानिस्तान बन गया।

(२) बाकी लोग कुछ पश्चिम को आये। करात जाति के लोग दूसरे देश में ठहर गये अपनी जाति के नाम पर देश का नाम करात रक्खा र का ल से परिवर्तन हो जाता है इस लिए देश का नाम कलात पड़ गया। चूंकि यह लोग बड़े ऊंचे बल वाले थे इस लिये जब बहुत फैल गये तो सारे देश का नाम

बलउचस्थान रक्खा जो कि ज़रा शब्द मिलाने से बलोचिस्तान बन गया। इन दोनों देशों के लोग पठान कहलाते हैं जो संस्कृत के पुष्टान का ष उड़ाने से पुठान से पठान बन गया।

(३) शेष लोग आगे बढ़े कुछ जातियों के समूह अगले देश में ठहर गये। चूंकि इनमें सब लोग सम्मिलित थे इसलिये देश का नाम आर्यस्थान रक्खा 'स्थ' लोप करने से आर्यन रह गया। आर्यन से ईरान बनगया। यहां के सब नगरों के नाम संस्कृत के अपभ्रंश हैं जैसे बुखारा (भूखारा), समरक़न्द (समरखण्ड), सरिस्तान (शिवस्थान), असफहान (अश्वस्थान) से है।

(४) राजा तिखा की सन्तान के लोग आगे बढ़े इन्होंने एक देश देखा जिसका नाम तखान रखा अपभ्रंश होकर तूरान हुआ। अब इसे तुर्किस्तान कहते हैं। सर आस्टिन ओरोदल (Austin Oral Orclologist) कहता है कि दुर्गापाल ने चीनीतुर्किस्तान में राज्य स्थापित किया। राजा रुद्राच्त के तीसरे पुत्र लोकेन्द्र ने जो प्रयाग का राजा था तुर्किस्तान में बहुत बड़ी भारी राजधानी बनाई। प्रोफेसर मूमर को तुखारी भाषा में एक पुस्तक मिली है जिससे सिद्ध होता है कि यह लोग आर्य थे। कर्नल टाड ने लिखा है कि राजा तरु के लड़कों ने इसे जाकर आबाद किया। पुस्तक दबिस्तान मज़ाहिब में लिखा है कि Upto 56 B. C. the People of Bukhter were all Hindus and so the Natives of अफ़गास्तिान, सिस्तान

निरावल, काखरस्थान और शूडान Were the followers of Hinduism अर्थात् ईसा से ५० वर्ष पूर्व वाखतर के लोग हिन्दू थे और ऐसा हो अफ़गानिस्तान, जातुलस्तान, काफ़र-स्तान और सूडान के सब लोग आर्य थे।

(५) जो आर्य लोग ईरान से गुजर कर युरोप को गये। इन्होंने इससे अगले देश का नाम आर्यवाह रखा जिसका नाम अपभ्रंश अरबिया होगया जो वहां ठहर गया। वहां अच्छे घोड़े देखकर देशका नाम अर्वस्थान रखा। वं का व से परिवर्तन होने से अरबिस्तान बनगया।

(६) जो लोग उत्तर पश्चिम को गये उन्होंने आर्मीनिया देश आबाद किया। वहां मतानो (मतरानी सूर्यवंशी) उपदेहटी (खत्री) के पुराने लेख निकले हैं जो विनकोलर महोदय ने निकाले हैं। इन लेखों में इन्द्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं का वर्णन आता है।

(७) ऊपर का देश रूस जिसे रशिया भी कहते हैं आर्य लोगों ने आबाद किया। कर्नल टाड अपनी पुस्तक राजस्थान के इतिहास में लिखते हैं कि साईबेरिया दो प्रसिद्ध जातियां समोडी मरिच्चूडी सामवेदी और चन्द्र वंशी का अपभ्रंश हैं पुस्तक ऐशया पालीकलाटा में वर्णन है कि मध्य ऐशिया के आर्यों ने इस देश को जाकर आबाद किया। चन्द्रवंशी लोगों ने रूस में जाकर राज्य वहां स्थापित किया बाक् नगर में हिन्दुओं के दो बड़े मन्दिर कल्याणराव और गोबिन्दराव थे। अर्व ईरान

और आर्मीनिया से हिन्दू लोग पैदल चल कर इन मन्दिरों को तीर्थ समझ कर दर्शन करने जाया करते थे।

(८) जापान के पुराने मन्दिरों में एक स्वस्तिक का चिन्ह मिलता है। वुद्ध मत तो अब तक वहां सब से अधिक फैला हुआ है जापान की प्राचीन लिपी संस्कृत से सर्वथा मिलती जुलती है। शिशु मत क्षत्री धर्म की शाखा है।

(९) कई जातियों के समूह ने थल मार्ग से प्रस्थान किया तरशिठप जिसे आर्जाति व्रत कहते हैं। यह तो भारत से मिला हुआ था इससे पृथक न था। कैलाश पर्वत पर जो तिव्वत का एक पहाड़ है शिवजी का निवास था। तिव्वत के दो चश्मे मान-सरोवर और रावस्तरोर अब तक हिन्दुओं के तीर्थ माने जाते हैं पहिले सूर्य की उत्पत्ति भी तिव्वत में हुई।

(१०) यहां से कुछ लोग चीन को गये चीन का नाम हमारे शास्त्रों में सेन देश आता है। आसाम और उत्तर ब्रह्मा से भी यहां जाने का मार्ग था ईसा से दोसौ वर्ष पूर्व चीनी पुस्तकों में भारत की गाथायें मिलती हैं राजा अशोकने वहां अपने प्रचारक भेज कर वुद्धमत जारी किया चीन से कितने ही यात्री भारत में आये और ज्ञान प्राप्त करते रहे। भारत से ७५ से लगभग प्रचारकों ने चीन में जाकर प्रचार किया जिनमें से कुमरजीव, धर्मपाल, गोतमसिंह, धर्म रक्षा, अनन्तसिंह बहुत प्रसिद्ध हैं, इन्होंने ही देश को वसाया और अपने साहित्य को वहां फैलाया था।

(११) इन्डो चाईना इस देश का नाम हमारे ग्रन्थों में चम्पा देश लिखा है वहाँ अनकोरावाट का मन्दिर जिसका पता ऐक फ्रांसीसी खोजक ने लगाया हिन्दुओं का बनाया हुआ अब तक विद्यमान है। इसका नाम फिर कम्बोदिया फिर अनाम अब इन्डोचाईना है। यहां संस्कृत के बहुत ग्रन्थ थे जो फ्रांस के लोग उठा कर लेगये अब वहाँ फ्रांस सरकार का राज्य है। बुद्ध धर्म का केन्द्र रह चुका है चीन और भारत के मार्ग में मध्य में यह देश है। इसको शताब्दि के आरम्भ में आर्य लोगों ने आकर आबाद किया और अपना राज्य अधिकार जमा लिया। यहाँ का प्रथम राजा श्रुतवर्मा था तत्पश्चात् भूवर्मा राजा ने यहां बड़े अद्भुत मन्दिर बनवाये जिसको आज भी लोग देख कर चकित होते हैं। यहां खमीर जाति के खत्री लोग आबाद हुये और उन्होंने ही विशाल राज्य फैलाया।

(१२) स्याम–इस देश के मन्दिर तमाम हिन्दू नमूने के हैं ब्राह्मण यज्ञ करते हैं राजाओं का पदाधिकार राम है। वर्तमान समय के राजा का नाम सुखोदयराम सप्तम है मंदिरों के पदाधिकार सेनापति, मन्डलाधीश आदि हैं। पहिले यहां की राजधानी का नाम अयोध्या था। सन् १७६६ में ब्रह्मा के राजा ने आक्रमण करके इसे विध्वंश कर दिया यहाँ की भाषा में ४० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। नगरों के नाम रामपुर, लवपुर विजयपुर, राजपुर, और धर्मपुर हैं। मनुष्यों के नाम धर्मशक्ति अनुरक्त, यमराज, बलदेव आदि हैं। पुस्तकालयों में अनेकों

संस्कृत के ग्रंथ हैं। यहाँ की सभ्यता, पर्व आदि भारत के समान हैं। देश की भूमि के पांचवें हिस्से में मन्दिर हैं। बुद्ध भगवान के अनेक मंदिर हैं। जर्मी साहब लिखते हैं कि हिंदुओं ने ईसा से ६५ वर्ष पूर्व यहां स्वर्ण लोक बसाया था। २० वर्ष पश्चात् सुखादय नगर बसाया कई मन्दिरों में प्राचीन ऋषियों के चिह्न बने हुये विद्यमान हैं। कई सिक्के निकले हैं। जिन पर भारतीय नाम के राजाओं के नाम लिखे हैं। और कई मंडियां, राजधानियां भारतियों की यहाँ हैं।

(१३) मलाया, जावा, बोर्नियो टापू सब हिन्दुओं के आबाद किये हैं। राफल साहब ने लिखा है कि जावा वास्तव में द्विज-आवा शब्द था अर्थात् द्विज लोगों का उपनिवेश। वहां अबतक हिन्दुओं के मन्दिर मिलते हैं। राम, कृष्ण, विष्णु और महादेव की मूर्तियां कई स्थानों से मिलती हैं। काठियावाड़ के राजा शिवकुमार वर्मा ने इन टापुओं को आबाद किया। जावा में रामायण का मन्दिर अब तक विख्यात है जो शिल्पकारी का अद्भुत नमूना है। महोदय वर्डउड ने लिखा है कि इस मन्दिर के समान भूमण्डल पर कोई मंदिर नहीं है। वहां संस्कृत ग्रंथ रामायण, महाभारत और बाली टापू में सत्तार श्लोकी गीता अबतक मिलती हैं। इन लोगों के नाम रसमरिवाज भी हिंदुओं से मिलते हैं। लोग अबतक भारतीय सभ्यता का मान करते हैं।

(१४) ब्रह्मा पाली पुस्तकों में उस देश का नाम स्वर्ण भूमि है परन्तु राजाओं के सिक्कों में तमर द्वीप नाम आता है।

पहिले पहल कपिलवस्तु के एक राजा ने ईरावती के तट पर एक शहर आकर बसाया जिसका नाम वर्तमान समय में इंकारी है फिर एमन देश नगर बसाया जिसका अब नाम थाटूर है। दक्षिण के लोगों ने आकर हंसावती शहर आबाद किया जिसका नाम अब पेगू है। उत्तर भारत के बहुत लोग आसाम के मार्ग से वहाँ पहुंचे और इस दुनिया को आबाद किया फिर बुद्ध धर्म वहाँ फैलना शुरू हुआ और सारा देश बुद्ध मत का अनुयायी होगया। अबतक वहां बुद्ध मत का ज़ोर है। परन्तु संस्कृत ग्रन्थ हिन्दुओं की सभ्यता और हिन्दू धर्म के चिन्ह भी अबतक वहां मिलते हैं। अब थाटू के खण्डरात खोदने से ३ बुत निकले हैं इनमें दो विष्णु की मूर्तियाँ हैं एक शिवजी की है। यह प्रतिमा अलवरा के प्रतिमा से मिलती है। जिससे सिद्ध होता है कि ब्रह्मा को जाकर हिन्दुओं ने ही आबाद किया इसका नाम ब्रह्मदेश है। अतः मैंने एशियाखण्ड के तमाम देशों के नामों से सिद्ध कर दिया है कि यह सब आर्य जाति, उसके पूर्वजों के अपभ्रंश सस्कृत के नाम हैं इनके रस्मरिवाज़ और सभ्यता से भी पता मिलता है कि भारत में ही यह लोग अपने साथ सभ्यता और संस्कृत ले गये और वहां जाकर फैलाई।

अफ्रीका—एशिया से प्रस्थान करने पर अफ्रीका आता है। करनेल विलफोर्ड महोदय एशियाटिक रिसर्चिज़ में लिखते हैं कि अफ्रीका उस समय दो बड़े भाग में विभाजित था मध्य में सागर था जिसे अब महा गैरआबाद थल (Great Desert)

कहते हैं। पूर्वी भाग का नाम कुश द्वीप था जो राजा राम के पुत्र कुश की प्रजा ने जाकर आबाद किया। पश्चिमी भाग का नाम श्याम द्वीप था जो भगवान कृष्ण की प्रजा ने जाकर बसाया। वायु पुराण में विस्तार से वर्णन है कि सिन्ध के लोगों ने वहां जाकर अपने राजा के नाम पर एक देश बसाया जिसका नाम प्रजापत था। चूंकि बाहर की भाषा में त नहीं होता ट होता है इसलिये वह इसे प्रजापट पढ़ने लगे। अपभ्रंश होकर ईजिप्ट हो गया चूंकि यह कौरववंशी थे इसलिये राजधानी का नाम कौरो रखा जो बिगड़ कर के रोबन बनगया। प्रोफेसर ग्रेगोरी साहब अपनी पुस्तक (Hydrographies) में लिखते हैं—

Not only the land of Egypt and continents bordering on the Nile but even the whole Africa itself and formerly the appellation of Arya from the numerious settlements of Aryans established there. अर्थात्—न केवल मिश्र का देश किन्तु तमाम देश जो नील नदी के तट पर है और तमाम अफ्रीका नाम पहले आर्य देश था। क्योंकि आर्य लोगों ने ही अनेक उपनिवेश आबाद किये। अर्थात् प्राचीन समय में तमाम अफ्रीका का नाम आर्य देश था, क्योंकि आर्य लोगों ने वहां जाकर उपनिवेश बसाये तेरहवीं शताब्दी तक यही नाम रहा फिर अफरीकानस यात्री ने वहां जाकर अपने नाम पर इसका नाम अफरीक़ा रक्खा। वास्कोडीगामा जो भारत में अफ़रीका के मार्ग से भारत में

आया अपनी यात्रा की पुस्तक में लिखता है कि अफ्रीका के पूर्वी तट पर तमाम हिन्दू उपनिवेश थे वहां के लोग रामायण और महाभारत की कथाओं से वाकिफ़ थे। कई नगरों के प्राचीन नाम जैसे श्यामसुख, कुटिलकेश, अमरछवि, सोमगिरी कर्दमस्थान, पद्मस्थान, चन्द्रस्थान, गुप्तस्थान, शंखवर्धन, निषाद पर्वत, रूपवतीपर्वत, विख्यात हैं। इनकी भाषा संस्कृत से मिलती और रस्मरिवाज भी हिन्दुओं से मिलते हैं मसानी जाति के लोग अब तक फल दूध पर निर्वाह करते हैं।

(३) यूरुप खण्ड–प्राचीन समय में यूरुप इतना अधिक आबाद न था, जितना अब है उस समय में फ्रांस-इङ्गलिस्तान रूमानिया सब दलदल और जंगल थे। आर्य लोगों ने दक्षिण और मध्य यूरुप को जाकर आबाद किया निम्नलिखित देश आर्यों ने आबाद किये।

(१) यूनान जिसे अंग्रेज़ी में ग्रीक कहते हैं हरविलासशारदा अपनी पुस्तक हिन्दुओं का महत्व (Hindu Superiority) में लिखता है कि प्रान्त गढ़वाल के गढ़ी लोगों ने जाकर इस आबाद किया इसका नाम गढ़ीका रखा जो बिगड़ कर ग्रीक बन गया। यूनान के सब से पहिले राजा का नाम मेनू था जो मनु का अपभ्रंश है। मेक्समूलर अपनी पुस्तक भाषा विज्ञान (Science of languages) में लिखता है कि यूनान के तीनों देवता जलापस, पलये (संस्कृत पेले) और ऊशर (ईश) के अपभ्रंश हैं। हावेल महोदय अपनी पुस्तक में आर्यों

का प्राचीन राज्य शासन में लिखते हैं कि भारत के लोग वहां जाकर अधिक संख्या में आबाद हुये और अपना धर्म शास्त्र व सभ्यता साथ लेजाकर फैलाया। महोदय यूकास ने एक पुस्तक यूनान में भारत (India in Greece) में अब तक प्रमाणों से सिद्ध किया है कि भारत के लोगों ने ही जाकर यूनान को आबाद किया। यूनान का इतिहास भारत के इतिहास भारत के इतिहास का एक अंग है।

(२) इटली—इसका पूरा नाम अतालया है जो आदित्यालया से बना यानी सूरजवंशियों का स्थान। जेकोलेटसाहब के लेखानुसार सूरजवंसियों ने इसे जाकर आवाद किया। आदित्यालया का लोप करने से अतालया रहगया। चूंकी सुर्य वंशियों के प्रसिद्ध राजा का नाम राम था इस लिये राजधानी का नाम राम रखा जो विगड़ कर रोम बनगया। सामने पर्वत का नाम सीता रखा जो अब सेटा कह कर पुकारते हैं।

(३) इटली से कुछ लोग ब्राह्मण जाति के पहाड़ों को चीरते हुये आगे पहुंचे इन्होंने एक देश आबाद किया ब्राह्मण को संस्कृत में मर्शा, शर्मन और शिरोमणी कहते हैं शरोडर साहब लिखते हैं कि संस्कृत में कई स्थलों पर श को ज पढ़ते हैं अस्तू शरमण से जर्मन और शिरोमणी से जरमनी वन गया। इसका समर्थन करते हुये मैक्समूलर भी वेद अनुवाद की भूमिका में originally the Germans are Brahmans hense they have tendency in learning Sanskrit literature.

अर्थात् जर्मन लोग आर्य हैं क्योंकि इन्हें संस्कृत साहित्य पढ़ने का पैतृक संस्कार है। ऐसा ही डाक्टर Wise ने स्वामी दयानन्द को १८८३ में लिखा है 'हमें भारत से सहानुभूति है क्योंकि हमारे पूर्वजों का झूला वहां झूलता है We have natural sympathy with India where the cradle of our ancestors stand. अब Her Hitler ने जो जर्मनी का अध्यक्ष है स्वीकार किया है कि हम आर्य वंश से हैं हम ईसाई धर्म को त्याग कर आर्य धर्म को ग्रहण करेंगे। अब मैं कई दीगर यूरुपी देशों के नाम यहां संक्षिप्त मात्र देना चाहता हूं जो संस्कृत के हैं जैसे—आस्ट्रया वास्तव में राष्ट्रया देश था। स्वेडन वास्तव में स्वधन था अर्थात् योद्धा लोगों का देश। आयरलैंड आर्यखण्ड, स्विटज़रलैंड राष्ट्रयखण्ड, उस समय में इंगलिस्तान अभी समुद्र में था, हस्पानिया, पुर्तगाल भी आबाद न थे, फ्रांस दलदल पड़ा था। अतः युरोप के उन देशों को जो प्राचीन समय में आबाद होने योग्य भारतीयों ने जाकर आबाद किये और अपनी सभ्यता फैलाई। हालैंड भी उस समय अभी समुद्र की तह में था।

अमरीका का नाम पाताल देश था। रूस से गुज़र कर आर्य लोग अबलासका से इस खण्ड में जाते थे। समुद्र के किनारे किनारे के देश आर्य लोगों ने जाकर आबाद किये। उस समय न्यूयार्क आदि पूर्वी प्रान्त सर्वथा भयानक जंगल थे आर्यों ने सबसे पहिले मेक्सिको देश आबाद किया जहां कि

चांदी सारी दुनिया की आधा पैदा होती है इसलिये आर्यों ने इसका नाम 'माक्षिका' रखा। माक्षिक के अर्थ चांदी के हैं जो अपभ्रंश होकर माक्सीका और इससे मेक्सिको बनगया वहाँ के प्राचीन मन्दिर भारत के मन्दिरों के नमूने हैं। महोदय पोकाक लिखते हैं कि:—

The resemblance of civilisations has proved that Indian civilisation produced a great effect on America and from the very ancient times America and India were Knit in a common tie.

(२) पीरू का नाम परनपुर था वहाँ सोना अधिक होता था वहाँ के राजा 'इन्का' (Inca) कहलाते थे जिसके अर्थ सूर्य के हैं। वह सूर्यवंश थे और सूर्य का चिन्ह अपने शिखर पर रखते थे। वहाँ एक मेला मनाया जाता है जिसे रामा सितवा कहते हैं जो राम सीता का अपभ्रंश है। वहां की माया जाति की सभ्यता सब भारत का निचोड़ है। अस्तु मैंने संक्षिप्त मात्र सिद्ध कर दिया है कि भारत ने ही सारे संसार को जाकर आबाद किया। दूसरे व्याख्यान में सिद्ध करूंगा कि भारत ने संसार को ज्ञान दिया और सभ्यता सिखाई।

व्याख्यान नं० १२

संसार के नवयुवकों की विशेषतायें

मरडक महोदय का कथन है कि यदि आप किसी जाति को उन्नत करना चाहते हो तो अपने विचारों को इसके नवयुवकों के भीतर फूंक दो क्योंकि उन नवयुवकों को भविष्य में जाति के नेता बनना है। इसलिये जाति की सम्पत्ति इसके नवयुवक ही हैं इसलिये मैं भिन्न भिन्न देशों के नवयुवकों के विशेष गुण आपके सम्मुख रखता हूं ताकि हमारे नवयुवक भी इन गुणों से लाभ उठायें और उनका अनुकरण करें।

(१) जर्मनी के नवयुवकों के विशेष गुण हैं:—सादा जीवन, देश भक्ति और स्वार्थ त्याग १–जर्मन बच्चों को उस्ताद उपदेश करते हैं हर प्रकार के व्यवहार में अपने देश के लोगों को मुख्य समझो २–जितना तुम विदेशी माल उपयोग में लाओगे उतना ही तुम्हारा देश गरीब हो जावेगा ३–अपने कारखानों को अन्य देशी मशीनों से अपवित्र न करो ४–किसी अन्य देश की खाने पीने की वस्तुयें शराब, चाय आदि को उपयोग में न लाओ ५–लिखने में जर्मन कागज़ कलम और स्याही का उपयोग करो। यह है जर्मन में देश भक्ति।

(२) रूस के नवयुवकों के विशेष गुण—समानता (सब को अपने समान समझना, बड़ाई छुटाई की घृणा न हो). सदाचार (नवयुवक न सिगार पीवें न सिनेमा देखें इनका आचरण

आदर्श हों), पुरुषार्थ और तपस्वी जीवन होना; काम करने से जी न चुराना।

(३) इटली के नवयुवकों की विशेषतायें प्रत्येक नवयुवक सिपाही है। फ़र्द शनाश (कर्तव्य का पालन करने वाला) स्वतन्त्रता के लिये मर मिटने वाले।

(४) अमरीका—उत्तम ज्ञान के लिये उत्सुक, प्राकृतिक उन्नति (Mechanical, Mineral and Mercantile education) के लिये उत्सुक हैं। अपने देश से सच्चा प्रेम और हित रखने वाला है अर्थात् नियंत्रण (Discipline) की क़द्र करता है।

(५) जापान के नवयुवकों की विशेषतायें—दस्तकारी में निपुण होना, देश पर सब कुछ न्यौछावर करना आत्मविश्वास।

(६) भारत के नवयुवकों की विशेषतायें जबकि भारत स्वतंत्र था और उन्नति के शिखर पर पहुंचा हुआ था तीन थीं अर्थात् सरलता, समानता, स्वतंत्रता। परन्तु वर्तमान समय में इसके यह तीन गुण हैं स्वार्थ, फ़ैशन परस्ती और पुरुषार्थ-हीन होना। जिस प्रकार इटली को एक नवयुवक मुसोलिनो ने जो लुहार का काम करता था अब फिर ऊंचा कर दिया है। जिस तरह एक जर्मनी के नवयुवक हर हिटलर ने जर्मनी को उन्नति के शिखर पहुंचा दिया है। जिस प्रकार कमालपाशा एक नवयुवक ने टर्की को फिर समृद्धिशाली और उन्नतिशील बना दिया। ऐसा ही भारत को यहां के नवयुवक ही अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का अनुकरण करके उठा सकते हैं। भारत वीरों का देश है। यहां के वीर अर्जुन, कर्ण, भीम,

भीष्म, हनुमान, भगवान राम, भगवान कृष्ण अन्य जातियों के वीरों से कई दर्जे उच्चकोटि के थे। अतः अब भी भारत के वीर ही भारत का सर ऊंचा कर सकते हैं और करेंगे।

व्याख्यान नं० १३

भारत दर्पण

(१) भारत का क्षेत्र फल १६ लाख वर्ग मील या १०१ करोड़ एकड़ ज़मीन है। वर्तानियां ६२ करोड़ एकड़ ज़मीन, यूरोप २ अरब ४० करोड़ एकड़, अमरीका १ अरब ६० करोड़, वर्तानियां से १५ गुना बड़ा है ६७७ रियासतें हैं ७ लाख गांव ६ हिस्सा आबादी गांव में ३१ शहर ऐसे हैं जिनकी आबादी एक लाख से अधिक है। १७७ मनुष्य प्रति वर्ग मील निवास करते हैं शहरों में आबादी ५ करोड़ २४ लाख रहायश मकानात ६७ लाख।

(२) भारत की आय प्रति दिन प्रति मनुष्य ६ पैसा।

(३) मध्यम आयु-न्यूजीलेन्ड ५८ वर्ष, नाखेहालेन्ड ५५ वर्ष, अमरीका ५०, फ्रांस ४५॥ वर्ष इटली ४७ वर्ष इंगलिस्तान ५१ वर्ष, जापान ४५ वर्ष, भारत २५ वर्ष।

(४) बच्चों की मृत्यु प्रतिशत-- इङ्गलिस्तान ७·५, फ्रांस ८·५, जर्मनी १०, न्यूज़ीलेण्ड ५, इटली १६, भारत २८।

(५) ७० वर्ष से बड़ी आयु के मनुष्य प्रतिशत फ्रांस ४·६,

इटली ३·७, आस्ट्रेयाहंगरी ६, जर्मनी २·८, भारत १·७।

(६) शिक्षा, जर्मनी व अमरीका ९९ प्रतिशत जापान ९६·४, इङ्गलिस्तान ९६, फ्राँस ९४, भारत ८।

(७) जबानें बड़ी मशहूर १२, बोलियां ४४१, म्युनिसिपल कमेटी ५७४७।

कुल दुनिया की आबादी १८४७५०००००, यूरोप ३७ करोड़, चीन ४५ करोड़, भारत ३५ करोड़ ४० लाख, अफ़रीका २० करोड़, अमरीका १६ करोड़।

(१०) कुल पशू २१ करोड़ ८० लाख ६० हज़ार इनमें बकरियां। १९४७०००० घोड़े, खच्चर गधे, ३७४७०००, गाय दूध देने वाली ४२५०००००, बैल ४३५०००००।

(११) सरकारी वार्षिक आय २ अरब ७२ करोड़ ७९ लाख ८० हज़ार थी जिसमें महसूल चुंगी २३ प्रतिशत, रेल १६ प्रतिशत, मालगुज़ारी १५ प्रतिशत, नशोंसे ९ प्रतिशत, इन्मटैक्स ७ प्रतिशत कुल कुल सर्कारी व्यय, वैतन सिविल के मुलाज़मान का २२ करोड़ २६ लाख रुपया। अंग्रेज़ अफ़सरों का ६॥ करोड़ रुपया।

(१२) रेलवे लाइन ४२८५९ मील, आमदनी एक अरब १६ करोड़ रुपया। खर्च ५६ करोड़ रुपया, बचत में ४५ करोड़ रु०, आमदनी टैलीफौन से ११ करोड़ ३० लाल, डाकखानों से ५७॥ करोड़, लिफ़ाफे ५६ करोड़ १० लाख वर्ष में व्यय हुये। मनीआर्डर ४ करोड़ ५ लाख के हुये। मुलाज़मान डाकखाना १३२००० हैं।

(१३) व्यापार १९३५ में ४ अरब ३० करोड़ रुपये का हुआ, गेहूं एक करोड़ टन पैदा हुये, और चावल ५ करोड़ टन पैदा हुये।

(१४) समाचार पत्र–मद्रास ३०९, बम्बई ३१४, बंगाल ६८२ यू०पी० ६२६, पंजाब ४२५, बिहार १३६, कुल २८०० अमरीका में २२७२४ निकलते हैं।

(१५) विधवाओं की तादाद ५ वर्ष की आयु तक १५१३९, १० वर्ष की १०२२९३, १५ वर्ष २७९१२५, २० वर्ष ५१७५६८, कुल संख्या २ करोड़ ७ लाख ५० हज़ार ७१ हैं।

(१६) अपाहज–दीवाने ९२८७७, गूंगे, बहरे १५६४२५, अन्धे ४६९५३५, कोढ़ी १०२५१३, तपेदिक के बीमार २३ लाख के लगभग हैं।

(१७) ऊन की पैदावार–मिश्र ६८ लाख टन, ब्राज़ील १२ लाख टन, अमेरिका ६ करोड़ १४ लाख टन, मेक्सीको ६१ लाख टन, भारत २४ लाख हन्ड्रेडवेट।

(१८) भारत के किसानों पर कर्ज़ा १० अरब रुपया है। इङ्गलिस्तान है ३ अरब ४१ करोड़।

(१९) लाहौर में पशु वध १९३५ में गाय ५६५३, बैल, भैंस बछड़े मिलाकर १२८८१। भेड़ें एक लाख ४० हज़ार, बकरियां ६० हज़ार कुल २११८५१ लाहौर छावनी के जानवर। परिन्दे और मछलियां इनमें सम्मिलित नहीं हैं।

(२०) भारत में शक्कर की पैदावार १९३१ में १० लाख

७२ हज़ार ५०० टन थी। सन् १९३७ में सात गुना हो गई अब ३५६ कारखाने खुल गये हैं। गन्ना फ़ी एकड़ १५ टन पैदा होता है। जावा में ४५ टन पैदा होता है।

(२१) पहाड़ों की चोटियां इन्डीज़ २८६० फिट, एल्पस १५२८० फिट, काफ २५ हज़ार फिट, ओराल २० हज़ार, हिमालया ३० हज़ार फिट।

(२२) बड़े नगरों की आबादी बम्बई ११ लाख ६१ हज़ार कलकत्ता १२ लाख ४१ हज़ार, मद्रास ६॥ लाख, लाहौर ४ लाख, देहली ३५७०००, अमृतसर ३६४०००, कराची २॥ लाख, कानपुर २१६०००, बनारस २१७०००, लखनऊ १॥ लाख, आगरा दो लाख ५ हज़ार, इलाहाबाद १७२०००, पूना १६२००० पटना १५३०००, अहमदाबाद ३१००००, मुलतान, मुरादाबाद, बरेली एक लाख १० हज़ार के लगभग है।

(२३) निम्न लिखित १८ पुराण हैं–१ मारकण्डे, २ भागवत ३ गारेव, ४ अग्नी, ५ भविष्य, ६ ब्रह्म देवरत, ७ ब्रह्माण्ड, ८ शिव, ९ विष्णु, १० वराह, ११ लिराग, १२ पद्म, १३ कोरम, १४ मत्स, १५ ब्रह्म, १६ वामन, १७ असकन्द, १८ गरुड़।

(२४) गीता २५, पिंगल, सत्याग, मनकी, बोद्ध, चक्षु, हारेत, वारतर, अशर, हंस, अनू, ब्रह्म, अशनावकर, ईश्वर, उतर, देवी, गनेश, बम, राम, शाश्वत, अर्जुन।

(२५) रामायण ११ हैं–अध्यात्म, अद्भुत, चम्पू, आनन्द, वालमीकि, हमान नुनाटक, रामविजयी; तुलसीकृत, वशिष्ठ

रामायण, बालरामायण, महात्म रामायण। मलाया में मकानत राम, श्रीराम, रामशासन, रामनीति हैं। इसके अतिरिक्त राम का जीवन चरित्र, रघुवंश, हरिवंश, दशरथ चातक, रामउपख्यान, सेतूहिन्द, रघुविलास, ब्रह्माण्ड विष्णु, पद्म, असकन्द पुराण, और रामविलास में भी आता है।

(२६) शराब ५३ करोड़ रुपये का अर्थात् ३८ करोड़ रुपये का विलायती और १५ करोड़ का देशी यहां प्रति वर्ष खपन है ७ करोड़ रुपये का चरस, गाँजा, पोस्त, भंग, और ७ करोड़ रुपये की अफीम, पैदा होती है जिसमें से ४ करोड़ की दूसरे देशों में जाती है। और ३ करोड़ की भारत में खपत है। ६ करोड़ रुपये की चाय खरच होती है। २२ करोड़ रुपये का तम्बाकू भारत में पैदा होता है। ८ करोड़ रुपये के सिगरेट और सिगार देसी और विलायती व्यय होते हैं। कुल एक अरब रुपया हमारा नशा और तम्बाकू उड़ा लेते हैं।

(२७) आतिशबाज़ी पर तीन करोड़ रुपया वार्षिक व्यय होता है। ११ करोड़ रुपया सिनेमा और थेट्रीकल कम्पनियों के तमाशों पर खर्च होता है।

(२८) मुक़दमे बाज़ी पर २८ करोड़ रुपया, वकीलों को जो कुछ मुकद्मे वाले जिन्स देते हैं वह इससे अतिरिक्त है। अहलकारों को रिश्वत और गवाहों को अदालत के खर्चे के अतिरिक्त जो दिया जाता है वह भी इसके अतिरिक्त है।

(२६) वेश्याओं की संख्या ५ लाख २४ हजार है। इनकी

आय प्रतिवर्ष ६२ करोड़ रुपया है और आतशक व सूज़ाक पर १० करोड़ रुपया डाक्टरों की आमदनी है। इसमें वैद्य और हकीमों की आमदनी सम्मिलित नहीं है।

(३०) ५६ लाख साधू और भिखारी हैं। इनका खर्च प्रति वर्ष ४० करोड़ रुपया है। मंदिरों और मठों की संख्या २११९०८ है। तीर्थों और मन्दिरों की आमदनी ५६ करोड़ रुपया है। जो खर्च लोगों का रेल व सवारी का है वह इससे अतिरिक्त है।

(३१) लोहे का सामान, मोटर लारियां, गरडर आदि २६ करोड़ रुपया, कांच का माल ४ करोड़ रुपया, कपड़ा ७० करोड़ रुपया, पीस गुडस १८ करोड़ रुपया रेलवे का सामान १४ करोड़ रुपया, रेशम जापानी ६ करोड़ रुपये, बूट डासन इत्यादि ६ करोड़ रुपया, दूसरा सामान चमड़े का ५ करोड़ रुपया, साबुन इत्यादि ३॥ करोड़ रुपया, शीशे का सामान १ करोड़ रुपया, कोयला ३४ करोड़ रुपया, चाकू छुरियां व दीगर सामान लोहा ७ करोड़ रुपया, चूड़ियां ८५ लाख रुपया, ताश १३ लाख रुपया, रंग ६ करोड़ रुपया कुल माल दूसरे देशों का ३४० करोड़ रुपये का भारत में आता है।

(३२) बड़े राज्याधिकारियों अर्थात् राज्य मंत्रियों का वेतन जापान ७५० रुपया, जर्मनी १२४५ रुपया, कनाडा २३०० रुपया, इंगलिस्तान ३५०० रुपया परन्तु भारत में ४० हजार वाइसराय का वार्षिक वेतन और अन्य आवश्यकताओं का खर्च मिलाकर लगभग चार लाख रुपया बनता है।

(३३) किसानों की संख्या १८७१ की मनुष्य गणना में ५६ प्रतिशत थी, १८६१ में ६१·६, १९०१ में ६४·५, १९११ में ७०·६ १९२१ में ७१·६ और १९३१ में ७३·९ हैं।

(३४ किसानों की आमदनी प्रतिवर्ष जर्मनी ६८० रुपया, जापान ३०४ रुपया, अमरीका १९३१ रुपया, कनाडा २०२५, इङ्गलिस्तान १८०१, भारत में ३१ रुपया।

(३५) भारत के किसानों पर कर्ज़ा—आसाम २२ करोड़, मद्रास १५० करोड़, बंगाल १०० करोड़, यू०पी० १२६ करोड़, पंजाब १३५ करोड़, बिहार उड़ीसा १५५ करोड़, बम्बई ८१ करोड़ कुल ११ अरब रुपया है।

(३६) कृषि करने के लिये भूमि प्रति किसान इंगलिस्तान २६ एकड़, अमरीका ८७ एकड़, कनाडा १४ एकड़, जर्मनी १२ एकड़, भारत ३॥ एकड़।

(३७) सरकार प्रति किसान

	क्या वसूल करती है	क्या देती है यानी इन पर व्यय करती है
बम्बई	६–११–०	१–४–६
पंजाब	४– ७–८	१–३–२
मद्रास	३– २–३	०-१५-०
बंगाल	२– ५–९	०–८–५
बिहार	२– ७–२	०–६–३
आसाम	३– १–७	०-११-०
मध्यभारत	२– १–७	०–९–०

बिहार के ज़मीदार किसानों से २१ करोड़ रुपया वार्षिक लेते हैं इसमें से १॥ करोड़ रुपया सरकार को लगान देते हैं बाकी सब आप मज़े उड़ाते हैं।

(३८) पांच वर्ष की आयु के बच्चों की मृत्यु प्रति हज़ार इङ्गलिस्तान ६६, अमरीका ६४, जापान १०५, भारत २७५ है।

(३९) पशु संख्या	१०० एकड़ पीछे	१०० मनुष्यों पीछे
न्यूज़ीलैंड	१६०	२७१
दक्षिण अफ़रीका	११६	१३४
अर्जनटाइना	५०	१६२
आस्ट्रेलिया	३७	१७२
हिन्दुस्तान	५६	४३

व्याख्यान नं १६

विकासवाद और ईश्वर ज्ञान

संसार में दो विचारों के लोग हैं, एक ईश्वरीय ज्ञान मानने वाले दूसरे शनैः शनैः उन्नति को मानने वाले, फिर पहिले विचार के लोगों के दो भाग हैं एक तो वह जो कहते हैं कि परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में जिस तरह मनुष्य और पशुओं के शरीर के अंग प्रत्यङ्ग सम्पूर्ण दिये वैसे ही आत्मा की रहनुमाई के लिये अपना ज्ञान भी सम्पूर्ण दिया, दूसरे भाग वाले लोग कहते हैं कि परमात्मा आवश्यकतानुसार अपना

ज्ञान मनुष्यों को देता है और फिर इसे रद्द करता है और अधिक करता आया है अन्त में जब मनुष्य को योग्य देखा तो अपना ज्ञान सम्पूर्ण दे दिया। इस विचार के मुसलमान और ईसाई हैं। पहिले विचार को मानने वाले वैदिक धर्मी कहलाते हैं। यह तो धार्मिक लोगों के विचार है। वैज्ञानिक विचारवाले लोग कहते हैं कि मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में जंगली था और जंगली पशुओं के साथ मिलकर रहता था। जानवरों के शब्दों का अनुकरण करके बोलना आरम्भ किया और शनैः शनैः अपनी बोली बनाली और इसके द्वारा अपने विचार प्रगट करने लगा। इसी प्रकार वर्तमान उन्नति तक पहुंचने के लिये इसे लाखों वर्ष लगे। वैदिक धर्मी लोग कहते हैं कि जिस तरह परमात्मा ने मनुष्य का शरीर आरम्भ से सम्पूर्ण बनाया वैसे ही इसे भाषण शक्ति भी आरम्भ से दी चूंकि भाषण और विचार परस्पर निर्भित हैं। इस लिये विचार शक्ति भी आरम्भ से मिली। इस बात का अनुभव करने के लिये कि मनुष्य की प्रथक भाषा कौनसी है। कई बादशाहों ने इङ्गलिस्तान, इटली और भारत में तजुरबे किये तो पता लगा कि वह पशुत्व की तरह हूं हां करते थे। इससे सिद्ध हुवा कि भाषा मनुष्य को आहिस्ता उन्नति करने से नहीं मिली। परन्तु जिस प्रकार माता बच्चे को जो शब्द उच्चारण कराती है वही बच्चा बोलता है। ऐसे ही परमात्मा ने भाषा भी मनुष्य को दी इसपर मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक भाषाओं की विद्या में बलपूर्वक दो युक्तियां

दी हैं। (१) यदि भाषा मनुष्य को परमात्मा की ओर से आरम्भ में न मिलती तो किस तरह वह मिलकर बैठते और अग्नी के अर्थ आग या प्रकाश तजवीज़ करते बस जब भाषा परमात्मा की ओर से मिली तो फिर विचार भी इसकी ओर से आरम्भ में मिलने चाहियें। विचार ही ज्ञान कहलाते हैं। (२) दूसरी युक्ति वह यह देता है कि यदि परमात्मा ने जिसने सृष्टि को उत्पन्न किया तो वह बड़ा अन्याई होगा। यदि मूसा से पहिले लाखों मनुष्यों को जो पैदा हुये अपने ज्ञान से वंचित रक्खे। युक्ति और बुद्धि स्वीकार करती हैं कि परमात्मा ने मनुष्य को जैसे इसी सृष्टि में उत्पन्न किया साथ ही ज्ञान भी दिया कि वह अपना जीवन शान्ति और उत्तमता से व्यतीत कर सके। जिन वैज्ञानिक लोगों का विचार है कि मनुष्य ने विचार और भाषा शनैः शनैः प्राप्त किये इनपर शंका यह है कि अफ्रीका आदि देशों के जंगली लोग क्यों न शनैः शनैः उन्नति कर गये जबतक वह सभ्य लोगों के संसर्ग में नहीं आये। वह किन्चित मात्र भी उन्नति न कर सके। इस लिये पतंजलि महाराज ने परमात्मा को मनुष्य का प्रथम गुरु माना है। यदि मनुष्य शनैः शनैः विकास कर सकता तो पशु भी इस प्रकार विकास कर जाता। विकासवादी लोग वैज्ञानिक और प्राकृतिक उन्नति के अतिरिक्त कोई और उन्नति नहीं कर सकते। हम देखते हैं कि मनुष्य ने अपनी गति में उन्नति करली है। अपने आराम के सामान प्राप्त करलिये और कला-

कौशल में आश्चर्यजनक उन्नति कर गया। परन्तु अध्यात्मिक रूप से वह विकास के स्थान में पतित हो रहा है। क्योंकि शिक्षा और विज्ञान की उन्नति के होते हुये सदाचार, परोपकार और प्रेम में पतित हो रहे हैं।

(२) विज्ञान के सिद्धान्त परिवर्तित होते रहते हैं परन्तु ईश्वरीय सिद्धान्त सत्य के आधार पर हैं जो सम्पूर्ण अटल और परिवर्तन रहित हैं। अस्तु जिन मतमतान्तरों के लोग यह मानते हैं कि कुछ उपदेश रद्द हो गये इनके स्थान में नये उपदेश परमात्मा ने दिये और फिर अन्तिम पुस्तक देदी इन पर शंका होती है कि क्या ईश्वर का पहिला ज्ञान अपूर्ण और अशुद्ध था? क्या सर्वज्ञ परमात्मा को पता न था कि मेरा यह ज्ञान अपूर्ण है? यदि वह ऐसा जानता था तो वह सर्वज्ञ परमात्मा नहीं कहला सकता। दृष्टान्त मात्र—जब ईश्वर ने आदम को वृक्ष का फल खाने से रोका परन्तु इसने शैतान की प्रेरणा से ईश्वरीय आज्ञा को भंग किया तो क्या ईश्वर को पहिले मालूम न था कि आदम मेरी आज्ञा को भंग करेगा? यह उसकी सर्वज्ञता पर धब्बा आता है। साथ ही उसने आदम को ऐसा सम्पूर्ण क्यों न बनाया कि वह शैतान के धोखे में न आवे? आदम को दुर्बल बनाना भी परमात्मा पर दोष आता है। आदम निर्दोष ठहरता है क्योंकि जब उसे पूरा ज्ञान ही न मिला तो वह स्वर्ग से क्यों निकाला गया? और फिर आदम की स्त्री के चुप के बदले तमाम संसार की स्त्रियों को दण्ड

देना अन्याय नहीं तो क्या है ? यदि ईश्वर का ज्ञान सत्य है तो फिर तौरेत को रद्द करके वाइबिल और फिर इसे रद्द कर के कुरान क्यों दी और फिर क्या प्रमाण है कि इसे रद्द करके और पुस्तक न देगा ? इसलिये हर एक पहलू से ईश्वर पर दोष आता है।

विकासवाद के सिद्धान्त पर वर्तमान समय के वैज्ञानिक उपहास कर रहे हैं और इसे सर्वथा अप्रमाणिक और अनिश्चित सिद्धान्त सिद्ध कर रहे हैं। अब हमें देखना है कि संसार के मतमतान्तर ईश्वरीय ज्ञान की कसौटी पर ठहर सकते हैं या नहीं। मनुष्य प्राकृतिक वस्तुओं का ज्ञान तो अनुभव से शनैः शनैः प्राप्त कर सकता है परन्तु आन्तरिक शक्तियों (आत्मा, मन) का ज्ञान बिना किसी और व्यक्ति या शक्ति की सहायता के प्राप्त नहीं कर सकता। प्रारम्भिक मनुष्य को इस के जीवन की सम्पूर्ण उन्नति और उसे चलाने के लिये सम्पूर्ण ज्ञान और ज्ञानदाता की आवश्यकता है। यह ज्ञान आत्मिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक हर प्रकार का सम्पूर्ण होना चाहिये। इसलिये हम ऐसे सम्पूर्ण ज्ञान को संस्कृत में वेद कहते हैं और इसके देने वाले को ईश्वर। स्वामी जी ने ईश्वरीय ज्ञान के दस सिद्धान्त बताये हैं जिन पर सिवाय वेद के संसार की कोई पुस्तक ठहर नहीं सकती वह निम्नलिखित हैं–

(१) ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में हो अर्थात् जब

मनुष्य की उत्पत्ति हो ताकि प्रत्येक मनुष्य को शान्ति और सुख मिले। परन्तु अन्य मतमतान्तरों का ज्ञान छः सात सहस्र वर्षों पर समाप्त हो जाता है।

(२) ईश्वरीय ज्ञान किसी सम्प्रदाय, वंश या विशेष जाति के लिये पक्षपात प्रगट न करे किन्तु तमाम मनुष्यों के लिये एक समान लागू होना चाहिये। अर्थात् परमात्मा के सब अमृत पुत्र हैं। उसकी चुनी हुई या अधिक प्यारी जाति इसराईल नबियों के समान नहीं।

(३) ईश्वरीय ज्ञान में किसी मनुष्य का जीवन चरित्र या प्रशंसा न हो अन्यथा वह इतिहास बन जावेगा।

(४) ईश्वरीय ज्ञान, विज्ञान, फिलासफ़ी (तत्वज्ञान, पदार्थ विद्या) से विरुद्ध न हो क्यों कि साइंस तो प्राकृतिक वस्तुओं के ज्ञान का नाम है और फिलासफी शुद्ध और ऊंचे विचारों का ज्ञान। अतः यह ईश्वरीय ज्ञान के अंग हैं न कि इससे पृथक या विरोधी।

(५) ईश्वरीय ज्ञान ऐसी भाषा में होनी चाहिये जो किसी विशेष देश या जाति की न हों। वह ऐसी भाषा में हो जिस का सीखना सब के लिये एक समान हो।

(६) ईश्वरीय ज्ञान ऐसे मनुष्यों द्वारा मिलना चाहिये जो सदाचारी पवित्र विचारों वाले और सम्पूर्ण विद्वान हों।

(७) ईश्वरीय ज्ञान हर प्रकार से सम्पूर्ण हो अर्थात छः प्रकार का हो आध्यात्मिक (आत्मा और मन को शान्ति देने

वाला) (२) प्राकृतिक (प्रकृति की वस्तुओं के उपयोग का ज्ञान देने वाला) (३) शारीरिक (शरीर को हृष्ट पुष्ट रखने का ज्ञान) (४) मानसिक (मस्तिष्क की शक्तियों का ज्ञान) (५) सामाजिक अर्थात् दूसरे मनुष्यों और प्राणियों के साथ शान्ति से रहने और संगठित होकर लाभ उठाने का ज्ञान। (६) राजनैतिक अर्थात् संसार में प्रबन्ध के साथ जीवन व्यतीत करने और ऐसे नियमों में रहने का ज्ञान जिनसे कि संसार की शान्ति में बाधा न पड़े। (७) ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करने का प्रत्येक मनुष्य अधिकारी हो। किसी के लिये कोई बाधा न हो (८) ईश्वरीय ज्ञान विना किसी प्रलोभन, उत्तेजना, दण्ड भय आदि के मनुष्य के जीवन के लिये लाभदायक और हितकारी हो (९) उस में अन्ध विश्वास या किसी व्यक्ति की प्रधानता न हो अर्थात् मनुष्य-पूजा या व्यक्तिगत आधार इसमें न हो। ईमान के स्थान में ज्ञान, अन्ध विश्वास के स्थान में युक्ति हो।

व्याख्यान नं० १५

हमारे पर्व व त्योहार

फ्रेड्रिकगोल्ड साहब अपनी पुस्तक 'भारत का भविष्य' में लिखते हैं कि संसार में अनेकों जातियां समृद्धिशाली और उन्नतिशील पैदा हुईं परन्तु कुछ समय के पश्चात ऐसी मिट गईं कि अब उनका नाम खण्डरों या लेखों या इतिहासों में ही

मिलता है परन्तु यह आर्य जाति जिसका आरम्भ का खोज करना कठिन है इतने आक्रमण सहते हुये और कई जातियों की आधीनता सहते हुये भी अबतक विद्यमान है इसके कारण तीन हैं १—जब इनके ग्रन्थ जलाये गये और नष्ट किये गये तो इन्होंने अपने धर्म ग्रन्थों को कंठ कर लिया और उनकी रक्षा करली २-कथा की प्रणाली चलाकर ब्राह्मणों ने बाज़ारों, मंदिरों गलियों और दूकानों पर बैठकर कथा को जारी रखा। कथा सुनकर हिन्दुओं के अन्दर अपना धर्म और इससे प्रेम बना रहा। ३—पर्व और त्यौहार ऐसे बनाये कि इन पर संगठित हो सके और विद्वानों, साधुओं से उपदेश सुन सकें और उनके जीवन चरित्र से शिक्षा ग्रहण कर सकें।

आर्यों के पर्व त्यौहार तीन प्रकार के हैं १—शारीरिक रक्षा के लिये अर्थात् आरोग्यता के लिये, बीमारियों से बचने के लिये। ऋतु त्यौहार जैसे वसंत पंचमी, लोहडी, वैसाखी, होली, दीपावली आदि इन पर बड़े बड़े यज्ञ किये जाते हैं। जिससे पिछली ऋतु की अशुद्ध वायु के स्थान में शुद्ध वायु को स्थान दिया जाय और महामारी आदि रोगों से जनता को सुरक्षित किया जावे।

दूसरे भिन्न भिन्न वर्णों के त्यौहार जैसे व्यास पूजा यह त्यौहार ब्राह्मणों का है जो विद्याध्ययन करने के लिये ऋषितर्पण भी कहलाता है। क्षत्रियों का त्यौहार विजय अष्टमी और विजय दशमी हैं। जबकि क्षत्री लोग अपनी वीरता के कारनामे

जनता को दिखाकर जाति को अपने बाहुबल से सुरक्षित करें।

तीसरा दीपावली यह पर्व वास्तव में वैश्य लोगों का है। इस अवसर पर वैश्य लोग अपने वर्ष का हिसाब समाप्त करके घरों की सफ़ाई करते हैं। विदेशों से लौटकर वहां की नई वस्तुयें लाकर प्रदर्शित करते थे। ताकि लोग देखकर व्यौपार के लिये बाहर जायं और पुरुषार्थ करके धन कमा लायें। शूद्रों का त्यौहार होली है, अर्थात् इस अवसर पर सब लोग प्रेम से मिलते थे।

तीसरे वीर पूजा के पर्व हैं जैसे भगवान कृष्ण, भगवान राम, स्वामी दयानन्द का बोधोत्सव और निर्वाण दिन। वैदिक सिद्धांत अनुसार हम निम्न त्यौहारों को अब मनाते हैं:—

(१) रक्षा बन्धन—इसके नाम श्रावणी उपाक्रम, ऋषितर्पण, सलूनों और रखड़ी हैं। इसका मुख्य उद्देश विद्याध्ययन करना था ऋषि तर्पण इस लिये कहते हैं कि इस अवसर पर ऋषि लोग ज्ञान देते थे और ऐसा करने से वह प्रसन्न होते थे। रक्षा बन्धन नाम राजपूती काल में देश जाति और निर्बलों की रक्षा के लिये पड़ा। सलूनों इस लिये पड़ा कि ऋषि सलूनों ने वेद अध्ययन करने के लिये उस दिन से प्रथा चलाई थी। साथ ही आर्य वीरों को बहिन कष्ट के समय हाथ पर एक तागा बाँधती थीं कि वह अनाथों और अबलाओं की रक्षा करें। क्षत्री के अर्थ दुर्बलों की रक्षा करने के हैं। यह एक प्रकार का प्रतिज्ञा चिन्ह था जो हर वर्ष चेतावनी देने के लिये स्मरण कराया जाता था।

(२) होली-इसका दूसरा नाम नवाग्नेष्टि है। नवीन अन्न उत्पन्न होने पर पहिले ईश्वर के समर्पण किया करते थे। कोई मनुष्य विना यज्ञ किये अनाज नहीं खाता था। जो अर्द्ध पका अनाज भूनकर तैयार किया जाता है उसे होलिक कहते हैं। हिन्दी में होला कहते। हैं ऐसे अनाज द्वारा जो यज्ञ किया जाता है उसे होलिक यज्ञ कहा जाता है। इससे विगड़कर होली बन गया। यह यज्ञ अर्द्ध पके अनाज की ऋतु में किया जाता है। अब भी लोग नये अनाज चने, जौ, गेहूं आदि की वालें होली में डालते हैं। पहिले घी शक्कर से होली का पूजन करते हैं फिर नया अनाज होली में भूनते हैं। कुछ परिक्रमा करते हुये अग्नि में डालते हैं कुछ घर ले जाते हैं। मुहल्लों में हवन होते हैं ताकि कोई रोग न फैले। प्राचीन समय में रोम के लोग भी कृषि देवता की पूजा करते थे और वड़ी खुशी मनाते थे। सामाजिक दृष्टि से यह ऐसा त्यौहार है कि इस अवसर पर नीचे ऊंचे का सवाल मिट जाता है। वास्तव में यह पवित्रता का त्यौहार था परन्तु इसे विगाड़कर अपवित्र कर दिया है। पौराणिक कथा के अनुसार प्रहलाद भक्त को पिता हरनाकुश परमात्मा की भक्ति करने से रोकता था। बहुत कष्ट देकर उसे मारना चाहता था आखिर हरनाकुश की बहिन जिसका नाम होलका था उसे गोद में लेकर आग में वैठ गई परन्तु आग में वह जल गई और प्रहलाद सुरक्षित रहा।

(३) शिवरात्री-हिन्दू लोग इसे शिव पूजन का त्यौहार

मनाते हैं परन्तु आर्य समाज इसे ऋषि वोधोत्सव के नाम से मनाता है। अर्थात् ऋषि दयानन्द को सच्चे शिव का ज्ञान हुवा। ऋषि दयानन्द ने उस दिन अपने भीतर सच्चे शिव की प्राप्ति की लग्न पैदा की। जिसका परिणाम यह है कि आज तमाम संसार के मतमतान्तर अपने विचारों को स्वामी जी के सिद्धान्त अनुसार व्याख्या कर रहे हैं।

(४) जन्माष्टमी–भगवान कृष्ण के जन्म दिन मनाने का पर्व है। भगवान कृष्ण ने संसार से अत्याचार मिटाया, अन्धकार मिटाकर गीता के द्वारा ज्ञान का दीपक दिखाया और निर्बलों की रक्षा की। उन्होंने तीन प्रकार की बांसुरी वजाई, प्रेम, संगठन, कर्म काण्ड और ज्ञान काण्ड की। गोया उसने वताया कि जबतक मनुष्य तीनों मार्ग भक्ति, कर्म और ज्ञान तीनों कामों को न करे उसका कल्याण नहीं हो सकता। साथ ही अपने बाहुबल से कंस और जरासन्ध जैसे अत्याचारियों को मारा, नीति से पाण्डवों की जीत कराई। इस लिये भगवान कृष्ण का जन्म दिन मनाया जाता है ताकि उस दिन उनके चरित्र को अपने जीवन में अंकित किया जावे।

(५) रामनवमी–भगवान राम का जन्मदिन मनाया जाता है जिसने अपना आदर्श जीवन उपस्थित करके हिन्दु (आर्य) जाति को ऊंचा किया। दुष्टाचारी रावण का वध किया। स्त्री जाति की रक्षा की। न्याय और धर्म को फैलाकर मर्यादा पुरुषोत्तम का पद प्राप्त किया। उनके जीवन से हम निम्न शिक्षा

ग्रहण कर सकते हैं–(१) पिता की आज्ञा पालन करना (२) आत्मविश्वास (३) धैर्य (४) त्याग भाव, भरत के कहने पर भी राज्य को ठोकर मारना। लंका को विजय करने पर भी कोई सोना, सम्पत्ति या जवाहिरात न लेना (५) अत्याचार का नाश करना (६) पतित लोगों को गले लगाना जैसे शिबरी के बेर खाना और निषाद को गले लगाना (७) जनता की सम्मति का मान करना।

(६) दीपावली–यह त्यौहार राजाओं के विजय का दिन है। वैश्यों के साल अन्त होने और प्रदर्शनी करने का दिन है। आर्य समाज के लिये स्वामी दयानन्द के निर्वाण का दिन है। स्वामी जी ने मृत्यु के प्रश्न को अपने जीवन से सिद्ध करके दिखाया कि वह भयानक चीज़ नहीं किन्तु हंसते हुये प्राण छोड़ दिये, यह कहकर "हे प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो"। दीपावली पर चिराग जलाने का तात्पर्य यह है कि अज्ञान की अमावस समाप्त करो और अब ज्ञान के दीपक जलाकर संसार से अज्ञान को भगा दो।

(७) वीर अष्टमी तो क्षत्रियों के लिये ऐसा ही पर्व है जैसे वर्तमान समय में Olympic Games खेले जाते हैं। ताकि वीर लोग व्यायाम करके अपने देश से वीरता को नष्ट न होने दें।

(८) विजय दशमी वह दिन है जबकि भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त की। इसलिये हिन्दू जाति यह दिन बहुत उत्साह से मनाती है। इस प्रकार और भी कई पर्व हैं और पाक्षिक यज्ञ हैं परन्तु अब इनकी प्रथा घटती जाती है।

व्याख्यान नं० १६

आर्यसमाज ने क्या किया ?

आर्य समाज ने इस थोड़े से समय में निम्नलिखित महान कार्य करके संसार भर में धार्मिक क्रांति उत्पन्न करदी है।

(१) वेदों की रक्षा और इनका प्रचार। स्वामी दयानन्द जी से पहिले वेद भारत से लोप हो चुके थे। जर्मनी से मंगवा कर छपाये। जो वेद एक हज़ार रुपये में भी न मिलते थे स्वामीजी ने पांच रुपये में कर दिये। जिन वेदों के पढ़ने का अधिकार सिवाय ब्राह्मणों के किसी को न था वह आप भी न पढ़ते थे। आर्य समाज ने शूद्र से ब्राह्मण तक, बालक से बूढ़े तक, इनका पढ़ना आरम्भ कराया। पाठशालाओं, स्कूलों और गुरुकुलों में वेद मंत्र पढ़ना, इनके अर्थ करना, वेदों को छपाकर समाजों, पुस्तकालयों में रखवाया। भाष्य करके युरुपीय विद्वानों की सम्मतियों में परिवर्तन कर दिया। जो पक्षपाती पश्चिमी विद्वान वेदों को चरवाहों के गीत कहते थे अब इन्हें संसार भर की उत्तम पुस्तकें मानने लग गये।

(२) गुरुकुल कालिज और स्कूल खोल कर वैदिक सभ्यता और वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित कर दिया। अब ५६ गुरुकुल १२ कालिज ४१ हाईस्कूल खोल कर विद्या फैलादी है और जनता पर आर्य समाज के महत्व का प्रभाव अंकित कर दिया है।

(३) संस्कृत के हस्तलिखित ग्रंथ खोज करके इन्हें एकत्रित करना और वैदिक आन्दोलन सभा बना कर इनके अनुवाद करना और जनता तक इन्हें पहुंचाना।

(४) संस्कृत भाषा जो भारत में बनारस, नदिया आदि शहरों में कुछ ब्राह्मणों की पैतृक सम्पत्ति रह गई थी, जिसे मृत भाषा कहा जाता था उसे पुनर्जीवित किया और कई स्थानों पर संस्कृत पाठशालायें खोलकर और अपनी अन्य संस्थाओं में इसे जारी करके इसका प्रचार किया। गुरुकुलों में तो प्रधानता संस्कृत को ही दी जाती है। परन्तु कालिजों और स्कूलों में भी इसका प्रचार कर दिया है। अब हिन्दू जाति के सहस्रों नवयुवक शास्त्री, तर्कशिरोमणी वेदतीर्थ, काव्यतीर्थ आदि अनेक उपाधियां प्राप्त कर रहे हैं और तमाम जातियों में संस्कृत का प्रचार बढ़ गया है

(५) आर्य समाज से पहिले फारसी, उर्दू का प्रचार अधिक था। आर्य समाज ने अपने स्कूलों में हिन्दी को प्रधानता देकर हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने में बहुत सहायता दी है। रात्री पाठशालायें खोलकर नवयुवकों को हिन्दी सिखाने का प्रयत्न किया। लड़कियों को तमाम पाठशालाओं में शिक्षा केवल हिन्दी में दी जाती है। हिन्दी साहित्य को अधिक करने में आर्य समाज ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है।

(६) आर्य समाज ने कालिज और स्कूल खोल कर अविद्या के नाश करने में बहुत कार्य किया है। आठवें नियम का पालन

किया है जितने कालिज और स्कूल आर्य समाज के आधीन हैं उतने भारत में किसी सभा या सोसाइटी के पास नहीं हैं। आर्य समाज का दस बारह लाख रुपया प्रति वर्ष इन पर व्यय होता है। विद्यार्थियों में देश भक्ति और जाति भक्ति के भाव उन्नत कर दिये हैं।

(७) अनाथों की रक्षा के लिये- जो पहिले ईसाई और मुसलमान बन जाते थे। बड़ा काम किया पहिले पहल आर्य समाज ने अनाथालय फीरोज़पुर खोला। अब आर्य समाज के पास १५० के लगभग अनाथालय हैं जिनमें हज़ारों अनाथों को शिक्षा देकर रोटी कमाने के योग्य बनाया जाता है और मुशलमान ईसाई बनने से बचाया जाता है।

(८) विधवाओं की रक्षा-विधवाओं पर हिन्दू जाति ने जो अत्याचार किये और कररही है इससे तंग आकर अक्सर विधवायें मुसलमानों के घर आबाद करतीं और हमारी दुशमन सन्तान पैदा करतीं या ईसाई बन जाती थीं मगर आर्य समाज ने विधवा आश्रम खोल कर सैंकड़ों विधवाओं को अपने धर्म से पतित होने से बचाया। आर्य समाज ने दयानन्द सालवेशन आर्मी खोल कर भी बहुतसी विधवाओं की रक्षा करली है।

(९) ब्राह्मणों ने स्त्रियों के लिये शिक्षा का द्वार बन्द कर दिया था और लिख दिया था कि स्त्री और शूद्र को मत पढ़ाओ मगर आर्य समाज ने सबसे पहिले पुत्री पाठशाला स्थापित कीं पंजाब में तो शायद ही कोई आर्य समाज होगी जिसके

पास पुत्री पाठशाला न हो। अब आर्य समाज ने कन्या महा-विद्यालय, कन्या कालिज, कन्या गुरुकुल खोल कर घर घर शिक्षा फैलादी है और लड़कियों को धर्म शिक्षा देकर वेद मंत्र उच्चारण करने और पढ़ने का अधिकार दे दिया है।

(१०) हिन्दु जाति एक तालाब की तरह थी जिस में से पानी निकलने का मार्ग तो था आने का रास्ता न था। इसलिये दिन पर दिन संख्या घट रही थी। यदि कोई हिंदू किसी कारण से पतित हो जाता तो फिर उसे वापिस न लेते थे। यदि कोई अन्य धर्मी वैदिक धर्म में आना चाहता तो इसके लिये द्वार बंद था। परन्तु आर्य समाज ने सबके लिये द्वार खोल दिया और शुद्धि का काम जारी कर दिया। इसके लिये पं० लेखराम पं० रामचन्द्र, पं० तुलसीराम, स्वामी श्रद्धानंद आदि अनेक आर्य वीरों ने अपने प्राण त्याग दिये। अब शुद्धि सभा स्थापित करके हज़ारों पतित हिंदुओं को शुद्ध किया जाता है और अन्य जातियों के लोगों को भी वैदिकधर्म का अमृत चखाया जाता है।

(११) दलितोद्धार-कई हिंदुओं को हमारे पूर्वजों ने अछूत बना दिया था। इन्हें सभा में बैठने न दिया जाता था। अपने कूप से जल नहीं लेने देते थे, न सड़कों पर चलने देते थे। इन की छाया पड़ने से स्नान करना पड़ता था। इन पर बड़ा अत्याचार किया जाता था। इसलिये कई तो दुखी होकर ईसाई और मुसलमान बनजाते थे। मगर आर्य समाज ने इन्हें शुद्ध करके समानता का दर्जा दिया। मेघोद्धार सभा स्यालकोट ने इस

विषय में प्रशंसनीय कार्य किया है। दयानन्द दलितोद्धार सभा होशियारपुर लाहौर आदि २ अछूतोद्धार सभायें कार्य कररही हैं।

(१२) सामाजिक सुधार-हिन्दू जाति में जो कुरीतियां और फ़ज़ूल खर्चियां थीं, इनके निवारण करने के लिये आर्य समाज ने बहुत यत्न किया और कर रही है। बिरादरियों में जागृति पैदा करदी है और वह कान्फ्रैंस करके इनके निवारण करने में कार्य कर रही हैं।

(१३) नवयुवकों में व्यायाम करने का उत्साह बढ़ाया। सभायें बनाकर आर्य वीर दल की स्थापना की और व्यायाम शालायें खोलदीं। कई समाजों में अखाड़े भी बना दिये ताकि नवयुवक वहां आकर व्यायाम किया करें।

(१४) संगठित होकर नियंत्रण (organisation and discipline) का उपदेश किया और धर्म सभा चलाने के लिये ऐसे नियम बनाये कि धर्म के कार्यों में गड़बड़ मत रहे किन्तु समानता के नियम को मुख्य रखते हुये प्रजातंत्र राज्य के समान स्वतंत्रता को प्रधानता दी। अर्थात् आर्य समाज में जहां संगठित होकर काम करने का प्रचार किया साथ ही पदाधिकारी चुनने में समानता को मुख्य रखा। जिसे चाहें सभासद अपनी सम्मति द्वारा प्रधान या मंत्री बनायें। एक प्रकार से गुरुडम को कुचल दिया और संगठित होकर काम करने और नियमपूर्वक धार्मिक कार्य चलाने की प्रथा चलाई।

(१५) स्वामी जी ने गोकरुणा निधि पुस्तक लिख कर गऊ

रक्षा पर बल पूर्वक लेख और भाषण द्वारा यत्न किया। आर्य समाज गऊ रक्षा के लिये अब भी बल पूर्वक कार्य कर रहा है। जहां कहीं गऊशालायें खुली हैं आर्य समाजिक लोग इसके चलाने में बहुत भाग लेते हैं। आर्य समाज आर्थिक दृष्टि से गऊ शाला का समर्थन करता है। भारत की उन्नति में गऊ रक्षा भी एक भारी साधन है। उत्तम वंश की गऊ पैदा करने और दूध देने वाली गऊ पालन करने पर आर्य समाज बहुत ज़ोर देता है।

(१६) स्वदेशी का प्रचार-स्वराज्य-स्वतन्त्रता का प्रचार, यह सब स्वामी दयानन्द ने आरम्भ किया। आर्य समाज को अपना उत्तराधिकारी बनाकर यह काम आर्य समाज के सुपुर्द किये। जब स्वराज्य और स्वतन्त्रता पर स्वामीजी ने लेख लिखे और भाषण किये उस समय राष्ट्रीय राजनैतिक सभा (Indian National Congress) का जन्म भी न हुआ था। कांग्रेस १८८५ में उत्पन्न हुई और स्वामी जी के उपदेश व लेख १८७५ से १८८० तक उन विषयों पर होते रहे। राजनैतिक जागृति आर्य समाज ने सबसे पहिले आरम्भ की।

(१७) देश भक्ति, जाति भक्ति और ईश्वर भक्ति के वास्तविक मूलक अर्थों को आर्य समाज ने प्रकाशित किया और इन पर कर्तव्य पालन कर दिखाया। हिन्दू जाति सर्वथा बिखरी हुई स्वार्थ में मुग्ध थी परन्तु आर्य समाज ने ही इस में भक्ति भाव को सच्चे अर्थों में उत्पन्न किया।

(१८ आर्य समाज ने मनुष्य पूजा, देवता पूजा, भूत पूजा आदि सब पूजाओं को बन्द करके एक ईश्वरी पूजा का प्रचार किया। इसका प्रभाव तमाम जातियों और मतमतान्तरों पर पड़ा है। इसी कारण अब वह आर्य समाज के सिद्धान्तों को दबी जबान से स्वीकार कर रहे हैं।

व्याख्यान नं० १७

पश्चिम और पूर्व की सभ्यता की तुलना

वर्तमान समय में जिधर देखो पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव पड़ रहा है और वह लोग अभिमान से कहते हैं कि हमारी सभ्यता सब से उत्तम और अनुकरणीय है। पूर्वी सभ्यता को वह सड़ी हुई और वर्तमान समय के प्रतिकूल गली कहते हैं। आज मैं आपके सन्मुख पश्चिमी और पूर्वी सभ्यता में जो कुछ अन्तर है उपस्थित करता हूं। पश्चिमी सभ्यता पर पहिले मैं पश्चिम के दो चार विद्वानों की सम्मतियां रखूंगा।

(१) महोदय फ़ौक्स (Fox) वर्तमान सभ्यता पर लिखते हैं कि Modern civilization is perfectly barbarous & scientific savagry. All the resources of science are utilized to the method of slaughter with effectiveness to inflict maximum suffering in minimum time.

अर्थात वर्तमान सभ्यता सम्पूर्ण जंगली पन और वैज्ञानिक पशुत्व है। विज्ञान के तमाम साधन इस बात पर उपयोग किये जाते हैं कि किस प्रकार से थोड़े समय में दूसरों को अधिक से अधिक दुख दिया जावे या वध किया जावे।

(२) प्रोफेसर प्रोपीलूगा प्रसिद्ध जापानी कहता है "It is not based on crucified but crucifying one. It is materialistic—chaos of conflicting aims and a whirlpool of selfishness".

अर्थात्–वर्तमान सभ्यता प्राकृतिक है वह त्याग के आधार पर नहीं किन्तु दूसरों को विध्वंस करने पर है वह परस्पर दृढ़ उद्देश्यों का समूह है और स्वार्थ की इच्छाओं का भंवर है।

(३) महोदय वैगनर (Wagner's Spoiled Child) अपनी पुस्तक बिगड़ा हुआ बालक में लिखता है This civilisation has not made us more contented and less anxious but absorbed in materialism.

The more one has the more he wants. So it can be compared to the patrilance of a spoiled child at once satisfied and discontented. Thus western civilisation has surrendered itself to the inner energy of desires which creates outer anarchy.

अर्थात–वर्तमान सभ्यता ने हमें अधिक सन्तुष्ट नहीं किया, न हमारी चिन्ताओं और आवश्यकताओं को घटाया है किन्तु प्राकृतिक भोग में मुग्ध कर दिया है। जितना अधिक किसी के पास हो उतना अधिक वह और चाहता है हमारी अवस्था

उस बिगड़े हुये बालक के समान हो रही है जो क्षण भर में सन्तुष्ट हो जाता है और क्षण भर में असन्तुष्ट होता है। पश्चिमी सभ्यता ने आन्तरिक शक्तियों और विषयों के आधीन अपने आपको कर दिया है। इसका परिणाम बाहर की अशान्ति और दुख हो रहा है। अस्तु वर्तमान सभ्यता का आधार (१) क़त्ल (२) दूसरी जातियों को लूटना (३ फैशन परस्ती (४) मैशीन (कलाकौशल) की उन्नति (५) कलाकौशल में जंग व मुक़ाबला (६) खुदकशी करना (७) भेड़िये वाला क़ानून न कि मनुष्यता का।

Dr. Homes डा० होम्ज़ अमरीका के प्रसिद्ध लेखक का मत है Our civilisation has led us to angry passions, dark suspicions and fears. Nation is set against nation, class after class and party after party. It is materialistic because western mind has never been able to realise the essential spirituality of nature and hence unity in trinity of man. nature and God. If we are to find substitute to that false philosophy, we must turn for guidance to the metaphysical Philosophy of Upnishads, ethical Philosophy of Lord Budha and spiritual philosophy of Vedas.

अर्थात् पश्चिमी सभ्यता ने अब अंधकार, शंका और भय उत्पन्न कर दिये हैं। एक जाति दूसरी जाति को, एक दल दूसरे दल को नष्ट करने की सोच रहे हैं। यह सभ्यता प्राकृतिक है क्योंकि पश्चिमी जातियों का मस्तिष्क कुदरत की अध्यात्मिक अवस्था की वास्तविकता को समझने के अयोग्य है।

इसलिये वह परमात्मा, प्रकृति और जीव की एकता को नहीं अनुभव कर सकता। यदि हम लोग ऐसी मिथ्या फिलासफी का उपाय ढूंढना चाहें तो हमें अपना पथ प्रदर्शक भारत को बनाना पड़ेगा क्योंकि वहाँ उपनिषदों का ब्रह्म ज्ञान, भगवान बुद्ध की सदाचार की शिक्षा और वेद का आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने से शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। अस्तु अधिक दृष्टांत देने की आवश्यकता नहीं।

पश्चिमी सभ्यता कलाकौशल की उन्नति है मगर इससे दिल व आत्मा की उन्नति नहीं हो सकती। वहां निज के जीवन और वाहरी जीवन में भेद है। भारत की सभ्यता में सारा आधार जीवन पर है (३) पश्चिमी सभ्यता में बेईमानी असत्य और ऐसे शब्द उपयोग में लाये जाते हैं जिनके दो प्रकार के अर्थ निकल सकें परन्तु भारतीय सभ्यता में मन वचन कर्म की एकता चाहिये।

(४) पश्चिमी सभ्यता हमें सिखाती है कि मेरा है वह तो मेरा है परन्तु आपका माल भी बस चले तो मेरा होजावे। भारतीय सभ्यता सिखाती है कि जो तेरा है वह तो तेरा ही है परन्तु यदि तुझे मेरी सम्पत्ति की आवश्यकता है तो वह भी मैं भेंट करने को उद्यत हूं।

(५) पश्चिमी सभ्यता में स्त्री पुरुष का सम्बन्ध भोगवाद के लिये, पूर्वी सभ्यता में उत्तम सन्तान उत्पत्ति और गृहस्थाश्रम के सुख भोगने के लिये है।

(६) पश्चिमी सभ्यता में कमज़ोरों को सताना है Therming at the expense of others, survival for the fittest वैदिक सभ्यता में दूसरों के अधिकार या धन का लालच मत करो और दुर्वलों की सहायता करो।

(७) भारतीय सभ्यता के आधार प्रेम, परोपकार, पवित्रता, त्याग, वैराग्य, जितेन्द्रिय, ब्रह्मचारी संगठन और सेवा हैं।

(८) परन्तु हम पश्चिम से निम्नलिखित शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं—

(१) नियम पूर्वक कार्य करना regularity (२) समय पर काम करना punctuality (३) नियंत्रण discipline (४) स्त्री सन्मान (५) (toleration) क्षमा भाव, सहन शीलता। (७, गुण ग्राही होना (appreciation)

. हम पश्चिम को क्या शिखा सकते हैं।

(१) गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्य। (२) सदाचार। (४) त्याग। (५) सबसे प्रेम करना।

(६) भारतीय सभ्यता का आधार मनुष्य की जीवन चर्या है जिसमें हमको प्रतिदिन पांच यज्ञ करने अनीवार्य है।

अर्थात् ब्रह्म यज्ञ spiritual development अर्थात् मन की शान्ती और आत्मा का विकाश।

(२) अग्नी होत्र यज्ञ Physicals and Hygienes Development शारीरिक शान्ती और आरोग्यता।

(३) पितृ यज्ञ Social Dvelopment विद्वानों, उपदेशकों

और बड़ों का सत्कार करना, सामाजिक शक्ति।

(४) बलिवैश्व यज्ञ (Universal development) तमाम प्राणियों से प्रेम, संसार का उपकार।

(५) अथिति यज्ञ दरिद्रों और अकसमात आने वालों का सत्कार। गरीबी और पूंजीदारों का झगड़ा समाप्ती अर्थात् मनुष्य मात्र में शान्ति और प्रेम का राज्य। अस्तु

पश्चिमी सभ्यता	पूर्वी सभ्यता
१–भोग के आधार पर	योग के आधार पर
२–फ़ैशन परस्ती	सरलता (त्याग)
३–जाति उन्नति	मनुष्यमात्र की उन्नति
४–कलाकौशल से नष्ट करना	अहिंसा
५–जीवन में संग्राम	एकान्त सेवन

व्याख्यान नं० १८

वेद में स्त्री के अधिकार

संसार के तमाम मतमतान्तरों में स्त्री जाति को अपने से नीचे समझा और इसका सत्कार नहीं किया केवल वैदिक धर्म ही है जो स्त्री का सन्मान करता है और पुरुष से भी ऊंचा दर्जा स्त्रियों को देता है। ईसाई मत में जो वर्तमान समय में स्त्रियों का सन्मान है यह इसके धार्मिक दृष्टि से नहीं किन्तु

(1) St. Jerom (सन्त जैरौम) कहता है Woman is

the gate of devil, road of evil and sting of seorfien अर्थात् स्त्री शैतान का फाटक है दुराचार की सड़क है और बिच्छू का डंक है।

(2) Canon law (अंजील का सिद्धान्त) man only is made after the image of God and not woman; she will serve him and be his handmaid अर्थात् केवल पुरुष ही ईश्वर के स्वरूप के समान बनाया गया है न कि स्त्री। इस लिये स्त्री पुरुष की सेवा करेगी और इसकी दासी बनकर रहेगी। अंग्रेज़ी में वोमेन (स्त्री) का अर्थ बनने वाली, वाईफ़ (पत्नी) का अर्थ रोटी पकाने वाली, Spinster लड़की का अर्थ कातने वाली है। यहां तक कि ५८७ में जो पादरियों की सभा हुई इसमें वाद विवाद इस विषय पर था कि स्त्रियों में जीव है या नहीं गोया स्त्रियों में ये लोग जीव भी न समझते थे।

(२) इसलाम में स्त्रियों को खेती से समानता दी है और इनके सिद्धान्तों के अनुसार एक पुरुष चार स्त्रियों से विवाह कर सकता है और लौंडियां जितनी चाहे रख सकता है। २-दो स्त्रियों की साक्षी एक पुरुष के बराबर है। ३-स्त्रियां मस्जिद में नमाज़ पढ़ने नहीं जा सकती हैं। ४-मुंह खुला नहीं रख सकतीं। इन्हें पर्दे में रखा जाता है। ५-पुरुष तलाक़ दे सकता है, स्त्री पुरुष को तलाक नहीं दे सकती। ६-पुरुषों को बहिश्त में सत्तर हूरें मिलेंगी परन्तु स्त्रियों को सत्तर पुरुष मिलेंगे। ईसाई और मुसलमान मत में कोई स्त्री पैगम्बर नहीं। बिशप

या काज़ी के दर्जे तक नहीं पहुंची। इसलाम में ज़न के अर्थ मारने के और औरत के अर्थ नंगे के हैं।

पौराणिक धर्म में भी स्त्री को नीच बताया गया है। तुलसीदास ने लिख दिया है कि 'ढोल, गंवार, पशु और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी"। ब्राह्मणों ने यह श्लोक घड़ लिया कि 'स्त्री शूद्रो नाधीयतां' अर्थात् स्त्री, शूद्र को न पढ़ाओ। मगर वैदिक धर्म में स्त्री का दर्जा उन शब्दों से प्रगट होता है जो वेद और शास्त्रों में स्त्री के लिये उपयोग में लाये गये हैं। उनमें से नमूने के तौर पर थोड़े से उपस्थित करता हूं।

स्त्री के लिये पहिला शब्द देवी है। दिव्यगुण वाली अर्थात् सबसे उत्तम चमकीले गुणवाली जो दूसरों को आकर्षित कर सके। सरस्वती, विद्वान, बुद्धिमान, शक्ति, लक्ष्मी, नारी, लीडर पथप्रदर्शक, गृहपत्नी, धर्मपत्नी, स्नम शान्ति देने वाली, सखे (मित्र), पृथ्वी भिन्न भिन्न प्रकार की उत्तम वस्तुयें देने वाली, काम्य (पूजा करने के योग्य), रन्ने, ज्योति, चन्द्रा (शीलता देने वाली), अघ्ननस्य (न मारने योग्य), आदित्य, अग्नि समान, उत्पत्ति का साधन, सत्य और पवित्रता की देवी, प्रशंसा और स्तुति करने योग्य, शान्ति देने वाली आदि अनेकों नामों से सम्बोधित किया गया है।

इससे प्रगट होता है कि भारत में स्त्रियों का कैसा सन्मान था इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण खण्ड अव्वल में स्त्री पुरुष का सम्बन्ध इस प्रकार वर्णन किया है—

(१) पुरुष विष्णु है स्त्री लक्ष्मी है (२) पुरुष विचार है स्त्री दीर्घ दृष्टि है (३) पुरुष युक्ति है स्त्री विचार शक्ति है (४) पुरुष अधिकार है स्त्री कर्तव्य है (५) पुरुष ग्रंथ रचना है स्त्री ग्रंथ है (६) पुरुष धैर्य है स्त्री शान्ति है (७) पुरुष इच्छा शक्ति है स्त्री कामना है (८) पुरुष राग है स्त्री स्वर है (९) पुरुष अग्नि है तो स्त्री ईंधन है (१०) पुरुष सूर्य है स्त्री ज्योति है (११) पुरुष वायु है स्त्री हरकत है (१२) पुरुष समुद्र है स्त्री किनारा है (१३) पुरुष स्वामी है स्त्री लक्ष्मी है (१४) पुरुष युद्ध है स्त्री शक्ति है (१५) पुरुष वृक्ष का तना है स्त्री शाखा है (१६ पुरुष बाजा है स्त्री राग है (१७) पुरुष न्याय है स्त्री सत्य है (१८) पुरुष दीपक है स्त्री इसमें प्रकाश है (१९) पुरुष शक्ति है स्त्री सुन्दरता है (२०) पुरुष शरीर है तो स्त्री इसमें आत्मा है।

अहा ! कैसी उत्तम उपमा देकर वैदिक धर्म में स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध को वर्णन किया है। मैंने बताया कि इसलाम और ईसाई मत ने स्त्रियों को पैग़म्बर का दर्जा नहीं दिया परन्तु वेद में जैसे पुरुषों को ऋषि का दर्जा दिया है वैसे कितनी ही स्त्रियां भी वेदवक्ता और मन्त्र दृष्टा ऋषि हो गई हैं। इनमें से कई स्त्री ऋषियों के यह नाम हैं। १-घोषा २-उपाला ३-विशोद्रा ४-निशद ५-विजटा ६-उती ७-लोप मुद्रा ८-यमी ९-श्री १०-मद्ता ११-शशोती १२-मेधा १३-इन्द्राणी १४-इन्दुमती १५-सरमा १६-रत्नार १७-उसती १८-श्रद्धा १९-वाक २०-सर्प रजनी २१-दिद्दा २२-रोत्री २३-सावित्री

आदि अस्तु इससे सिद्ध होता है कि वेद में स्त्री का दर्जा पुरुष से उत्तम और पूजने योग्य बताया है। मनु ने भी लिखा है कि जहां स्त्रियों का सत्कार व सन्मान होता है वहां देवता लोग निवास करते हैं।

— · —

व्याख्यान नं १६

भारत की २५ महान शक्तियां

इसमें सन्देह नहीं कि भारत इस समय गुलामी की ज़ंजीरों में जकडा पड़ा है इसलिये अन्य जातियां भारत के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखती हैं। जब मैं न्यूज़ीलैंड में गया तो वैलिंग्डन शहर में मैंने भारत की सभ्यता और वैदिक धर्म के महत्व पर व्याख्यान दिये तो एक गोरे ने कहा कि यदि आपका धर्म और तत्वज्ञान इतना उत्तम होता तो आप अन्य जातियों के दास कैसे बनते ? मैंने उसे बताया कि इसमें सदेह नहीं कि हम शारीरिक दृष्टि से अन्य जायियों के आधीन हैं परन्तु अब भी भारत संसार भर को प्रत्येक दृष्टि (Point of view) से शिक्षा दे सकता है और बीसवीं शताब्दी में भी ऐसे मनुष्य और महापुरुष पैदा करता है कि दुनिया के स्वतंत्र देश और वर्तमान सभ्यता के पुजारी उनकी तुलना नहीं कर सकते जैसेः—

(१) अध्यात्मिक शक्ति में भारत में महात्मा गांधी को

उत्पन्न किया है। जिसके सम्बन्ध में Dr. Holmes of America लिखते हैं Gandhi is greater and nobler than Washington, and Christ incarnated.

अर्थात् महात्मा गांधी वाशिगंटन से अधिक पवित्र और महान और ईसा का स्वरूप है।

(२) Blocking M. P. in House of Commons said "He is the greatest living soul in the world. He is power in the land, an inspired sage upon whom the wisdom of the ancient Rishis descended.

अर्थात् महोदय ब्राकवे सदस्य पार्लियामेंट ने अपने एक भाषण में कहा था कि महात्मा गाँधी संसार भर में एक महान आत्मा है। वह पृथ्वी पर एक शक्ति है। ईश्वरीय ज्ञान से उत्तेजित ऋषि जिस पर प्राचीन ऋषियों का ज्ञान उतरा हुवा है।

(३) तत्वज्ञान और कविता में रविन्द्रनाथ टागौर हैं। इनके सम्बन्ध में Rector Veclis of University of Rome ने इसे अभिनन्दन पत्र देते हुये कहा "One of the loftiest and most representative spirit of modern age, your humanistic Poetry and Philosophy have found a profound echo in our hearts. Your message is Phila of Action which gathers strenghth from wisdom, justice and harmony of love".

अर्थात् "वर्तमान समय एक सबसे उच्चकोटि और अत्यन्त प्रतिनिधि कहलाने योग्य जिसके कविता और विचार कोटि

ने हमारे हृदय पर छाप लगादी है जिसका तत्वज्ञान, न्याय, प्रेम और ज्ञान का भण्डार है।

(४) साईंस (वैज्ञानिक शक्ति में) सर जे० सी० बोस Sir J.C Bose जिसके सम्बन्ध में अक्तूबर १९२६ की साईंस कांग्रेस जिनेवा के प्रधान (Instein) ऐन्स्टाइन ने कहा था, Sir J.C.Bose has won the genuine appreciation of all the eminent scholars of Europe and America, by his eloquent speeches and subtle instruments. He is Darwin of Asia and can be called the intellectual giant of the modern time.

अर्थात सर जे० सी० बोस ने युरोप और अमरीका के तमाम धुरन्धर विद्वानों की प्रशंसा को प्राप्त कर लिया है। अपने मधुर भाषणों और सूक्ष्म यंत्रों के द्वारा वह एशिया का डारविन (Darwin) है और वर्तमान समय का बुद्धिमत्ता में सबसे अधिक विद्वान और चोटी का मेधावी है। पंजाब के गवर्नर ने इसे साईंस के पैग़म्बर के नाम से सम्बोधित किया है।

(५ a C V. Raman in astronomical science Modern Review Dec. 1931 'No country in Europe did so much scientific work of such great importance during the 1st half century as this Indian has done. The award of noble prize is as much tribute to his genius as to India's intellectual potency in spite of her political subjugation.

b. Dr. Summartand's view a German Scholar, "No physical discovery of last few years caused

so much sensation and brought so much admiration in the whole world as spectrascopic caused by C. V. Raman in Calcutta, worked by Krishna and established by Professor Mayhnoch.

अर्थात "युरोप के किसी देश ने अर्द्ध शताब्दि में साईंस की उन्नति में इतना महान कार्य नहीं किया जितना कि इस भारतीय ने किया है। यदि भारत गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ा पड़ा है तो भी इसने बुद्धिमत्ता की शक्ति में ऐसे मनुष्य पैदा किये जो नोबिल प्राइज़ लेने के अधिकारी हुयें।

(६) एल०एन० गुप्ता महोदय ने संसार भर की चौथी फ़िलासफ़ी की कांग्रेस में भारत का सर ऊंचा किया। २५ यूनीवर्सिटियों ने इसके व्याख्यान कराये और एल०एल०डी० की डिग्री दी।

The World Magazine लिखता है His mission is to establish the greatness of Indian thought, culture and religion. Should the west be prepared to understand and appreciate the message of India is explained by her ancient sages, that will be a force in uplifting and uniting the nations of the world India's message is of world peace, universal friendship attainable by the ideals of her culture, philosophy and religion.

इसका काम यह है कि भारत की महानता संस्कृति, तत्वज्ञान और धर्म के द्वारा युरोप और अमरीका में स्वार्थ नष्ट किया जावे। यदि पश्चिम के लोग भारत के ऋषियों के संदेश

और उपदेश को समझाने के योग्य हो जायं तो संसार में एकता और शान्ति का राज्य हो जावे।

(७) राधा कृष्ण कुमार—इसने भी अमरीका और युरोप में जाकर भारत की फ़िलासफ़ी पर व्याख्यान देकर भारत का नाम उज्ज्वल किया। यहां तक कि इसके चार व्याख्यान जो इसने भारत के फ़िलसफ़े पर दियें कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी का कोर्स बनाये गये।

(८) राम औतार—इसने गणित (Mathematics) में वह नाम पैदा किया कि कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटि में गणित (Mathematics) का प्रोफेसर बनाया गया। परन्तु जलवायु अनुकूल न होने से छः मास के पश्चात् देहान्त हो गया। गणित विद्या में इसकी तुलना का युरोप में कोई मनुष्य न था।

(९) सरोजनी नायडो—इसके सम्बन्ध में कनाडा का समाचार पत्र "Oneword" २० अक्तूबर १९२० ई० के अंक में लिखता है. "Her patriotic dreams together with her spiritual visions make her dynamic personality whose words electrify the audience. She is poet, prophet, eloquent and eminent figure in Indian politics. Her impassioned oratry has thrilled the audience stirring a flame of patriotism in the hearts of all despairing and too weak: Her intense devotion and high spiritual ideals, spreading a healing balm for the wounds inflicted.

अर्थात् इसके देशभक्ति और अध्यात्मिक ज्ञान के विचार श्रोतागणों पर बिजली जैसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं। वह भारत

के राजनैतिक क्षेत्र में विशेष वक्ता शक्ति रखती हैं और कविता में बड़ी निपुण हैं। इसकी मधुर वाणी ने यहां के श्रोतागणों पर देश भक्ति का अत्यन्त प्रभाव डाला है और असन्तुष्ट आत्माओं को शान्त कर दिया है।

(९) महात्मा तिलक–इसके गुण और योग्यता संसार भर में विख्यात हैं। युरोप और अमरीका के लोग इसकी विद्वत्ता के आगे सिर झुकाते हैं। इसकी पुस्तक गीता रहस्य, orion (वेदों की प्राचीनता) और वेदों में आरकटिकहोम (ध्रूरू में हमारा जन्म स्थान) ने संसार को मुग्ध करलिया है।

(१०) राजनैतिक क्षेत्र में भूपेन्द्रनाथ वोस को लार्ड ऐसक्वाइथ आफ़ इंडिया Lord Asquath of India कहा है।

(११) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को Burk of India भारत का बर्क कहा है।

(१२) गोखले को भारत का गलेडस्टोन की पदवियों से इंगलिस्तान के राजमंत्री ने सम्बोधित किया है।

(१३) राग विद्या में रजनीदेवी के सम्बन्ध में न्यूयार्क टाइम्ज़ (New York Times) अक्टूबर १९२७ में लिखा है–
"The songs and dances of Rajni Devi won the audience with simple truth of graceful interpretation rare to see in Theatre. Her dance to Hindu airs, singing of India's classical melodies is considered the most artistic and reliable of its kind in the United States of America".

अर्थात रजनी के राग और नाच ने श्रोतागणों को ऐसा मुग्ध कर लिया कि अमरीका के थियेटरों में ऐसे अंदाज़ और खूबी के साथ नाच कम देखने में आते हैं। इसका नाच और गीन जो भारतीय नमूने के हैं अमरीका में निहायत ही प्रशंसनीय और उच्चकोटि के स्वीकार किये गये हैं।

(१४) नाचने और वजाने में उदयशंकर के विषय में हिन्दुस्तान टाइम्स १८ फ़रवरी १९२९ ई० के अंक में छपा है- He has been one of the greatest cultural and singer abroad. अर्थात विदेशों में वह सबसे वड़ा कलापूर्ण गाने वाला माना गया है।

(१५) योग और अध्यात्मिक विद्या में स्वामी विवेकानन्द जी और स्वामी रामतीर्थ ने विदेशों में भारत का नाम उज्ज्वल किया है।

(१६) क्रिकेट में अमरनाथ और रणजीतसिंह ने सारे संसार में भारत का सिर ऊंचा कर दिखाया है।

(१७) डा० चौधरी डी०एस०पी० ने वनस्पति विद्या में (Harticulture) में ख्याति पाई वह न केवल भारत में इस विद्या की सभा का मंत्री है किन्तु वर्लिन में जो बारहवां अधिवेशन कांग्रेस वनस्पति विद्या (Harticulture Congress) का हुआ वहां Tropical Fruit Growing Association. का वह प्रधान चुना गया था।

(१८) हाकी में ध्यानचन्द ने इतना नाम पैदा किया कि

जर्मनी के समाचार पत्रों ने इसे विष्णु अवतार बना दिया था।

(१९) गेंद फेंकने में अमरसिंह का नाम दुनिया में सबसे बड़ा बाउलर और ओवरेले से दूसरे दर्जे पर इसका नाम लिया जाता है।

(२०) मिस्टर S. D Bhuse बम्बई निवासी अमरीका में भारत का एडसिन के नाम से प्रसिद्ध है। आपने Type-writing की ऐसी मशीन ईजाद की जो एक मिनट में ३ हज़ार हरुफ़ तैयार करती है अब वह मैशीन भू से टाइप के नाम से प्रसिद्ध है।

(२१) वीरता में राममूर्ति ने प्रसिद्धि पाई।

(२२) मल्लयुद्ध में भवानीसिंह ने अमरीका, जावा, जापान में हज़ारों तम्गे प्राप्त किये हैं और भारत का नाम उज्ज्वल किया है।

(२३) मुक्काबाज़ी (Boxing) में रामेश्वर और मुक़रजी ने प्रसिद्धि पाई है।

(२४) साइकिल तेज़ चलानेमें जानकीदास ने नाम पैदाकिया।

(२५) महाशय कृष्णलाल ने Olympic Games में अमरीका में यश और प्रशंसा प्राप्त की।

व्याख्यान नं २०

विदेशों में भारतीय संस्कृति

जब पश्चिम की जातियों ने भारत में अपना अधिकार जमाया तो न केवल भारत की सभ्यता और संस्कृति पर आक्षेप किये किन्तु ऐसी पुस्तकें रचकर स्कूलों में जारी कीं कि जिन्हें पढ़कर भारत के विद्यार्थियों के अन्दर भारत की सभ्यता धर्म और प्राचीन संस्कृति का गौरव और सम्मान न रहे। कहीं भारत के लोगों को जंगली लिखा, कहीं गोमांस भक्षक। हमारे धर्म ग्रंथों को चरवाहों के गीत कहकर इनपर उपहास किया। परन्तु सत्य की जय होती है। अब जो निष्पक्ष लोगों ने खोज की और भूगर्भ विद्या और पुरातत्व विद्या का विकास हुआ तो इन्हें पता लगा कि भारत की सभ्यता ने तमाम संसार पर अपना प्रभाव डाला है। मैं इस व्याख्यान में संक्षिप्त मात्र कुछ देशों के सम्बन्ध में प्रमाण उपस्थित करता हूं जिन पर भारत की सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा।

(१) अमरीका पर प्रभाव—इस सम्बन्ध में महोदय हार्डी अपनी पुस्तक भारतीय कलाकौशल में लिखता है कि मध्य अमरीका के नगर चावान के मकानों और मन्दिरों की बनावट भारत के मकानों और दक्षिण के बुद्ध मन्दिरों से समानता रखती है। अमरीका की देवमाला भी भारत से ही निकली हुई है जैसा कि (१) वह हिन्दुओं की तरह पृथ्वी को देवी मानकर

पूजते हैं (२) चटानों पर वीरों के पांव के चिन्ह हिन्दुओं की तरह पूजते हैं (३) शतपथ ब्राह्मणों में जैसे पलूका वर्णन है वैसे इनमें भी गाथा प्रचलित हैं (४) सूरज और चन्द्रग्रहण पर जैसे हिन्दुओं में दानपुण्य और स्नान का रिवाज है वैसे इनमें भी है (५) कछुए के अवतार लेने की कहानी इनमें भी प्रचलित है (६) सांप की पूजा और पुनर्जन्म का सिद्धांत वह भी भारत की तरह मानते हैं।

(२) अफ्रीका पर भारत की सभ्यता का प्रभाव-प्रोफेसर ग्रेगोरी अपनी पुस्तक (Hydrographic) में लिखता है कि अत्यन्त प्राचीन समय में अफ्रीका के मध्य में सागर था और अफ्रीका के दो भाग थे पूर्वी अफ्रीका का नाम कुश द्वीप था जो कि राम के सुपुत्र कुश की प्रजा ने वहां प्रस्थान करके अपने राजा के नाम पर आबाद किया। उत्तरी भाग युरोप से मिला हुआ था और पूर्वी भाग भारत से मिला हुवा था। पश्चिमी भाग का नाम श्याम द्वीप था न केवल मिश्र और दरिया नील के आसपास के देशों का नाम किन्तु तमाम अफ्रीका का नाम उस समय आर्य था क्यों कि आर्य लोगों ने ही वहां जाकर उपनिवेष बसाये।

(३) युरोप में प्रभाव-पोकाक महोदय ने अपनी पुस्तक 'यूनान में भारत' में लिखा है कि सिंध नदी के मुख पर एक समुद्री यात्रा करने वाली जाति निवास करती है जो अपना देश छोड़कर यूनान में प्रस्थान कर गई और वहां अपनी

सभ्यता फैलाई। इसी प्रकार मैकडोनल महोदय अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि थैलीज़, एम्पीडोक्लीज़, पैथागोरस और कई अन्य विद्वान यूनान से भारत को गये वहां आध्यात्मिक विद्या व तत्व ज्ञान को सीखकर उन्होंने युरोप में जाकर उसे फैलाया।

(४) इटली में सभ्यता—जैकोलियट महोदय अपनी पुस्तक 'आर्यों की प्राचीनता' में लिखते हैं—'सूर्य वंशी लोगों ने इस देश को बसाया और इसका नाम आदित्यालय रक्खा ··· ··· इटली की गाथाओं और देवमाला में भारत के देवताओं और गाथाओं का वर्णन मिलता है।'

(५) फ्रांस में सभ्यता—यूजेन बर्नफ़ प्रसिद्ध लेखक का विचार है कि यदि फ़िलासफ़ी से हम अपने देश को पवित्र करना चाहते हैं तो हमें उस ज्योति को नहीं भुलाना चाहिये जो हमें भारत से प्राप्त हुई है। हमें भारत की गाथाओं, तत्व ज्ञान, धर्मशास्त्र, साहित्य और भाषा को श्रद्धा से अवलोकन करना चाहिये क्योंकि भारत का इतिहास संसार का इतिहास है।

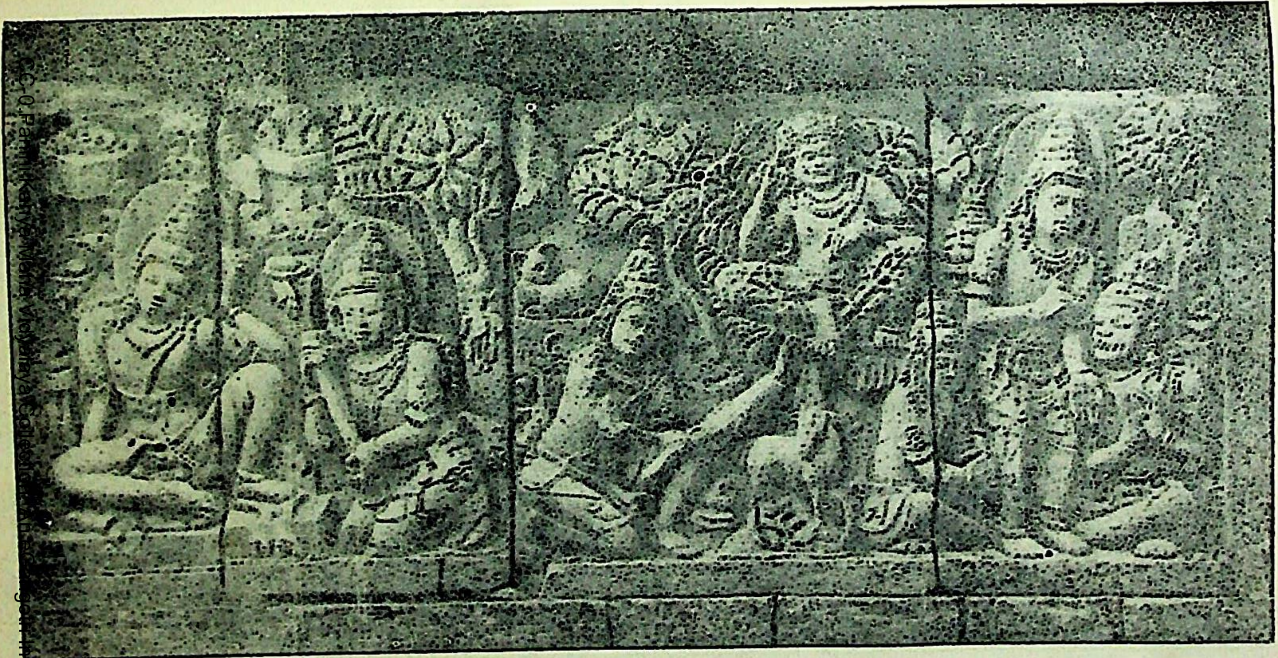
६—जर्मनी में प्रभाव—(१) वानशरोडर अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि भारत के ब्राह्मणों अर्थात् शर्मन लोगों ने ही इस देश को बसाया (२) हिटलर जर्मनी के सर्वाधिकारी ने चार घोषणायें की हैं १—मेरे तमाम कालिजों में संस्कृत पढ़नी अनिवार्य होगी २—सेनापति स्वस्तिक का चिन्ह लगायें और

झण्डे पर भी यह चिन्ह हो ३-जर्मन स्त्रियां नौकरी से हटकर घरों का काम करें ४-हम आर्य वंश से हैं। हम आर्य धर्म को ही ग्रहण करेंगे।

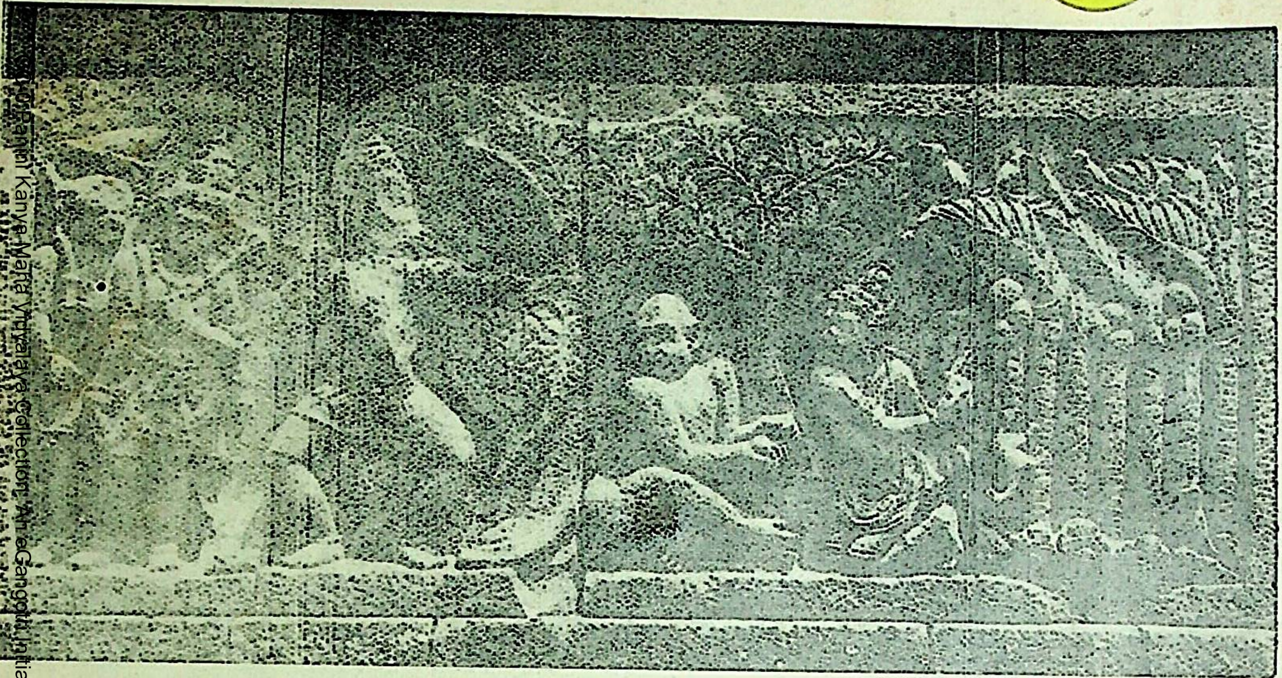
(७) अफ़गानिस्तान-इसे अपगन जाति के चंद्रवंशी लोगों ने आवाद किया। यहाँ खुदाई करने पर हिन्दुओं के ४०० मंदिर आदि निकले हैं। यहां हिन्दू और बुद्ध धर्म फैल रहा था। बिलोचिस्तान को वल-ऊंचे वाले खत्रियों ने बसाया था।

(८) ईरान का नाम आर्यस्थान था। वहाँ की सभ्यता और धर्म भारत के समान है। बुखारा का नाम भू·खारा, समरकंद का नाम सुमेर खण्ड और अस्फ़हान का नाम अश्वस्थान था।

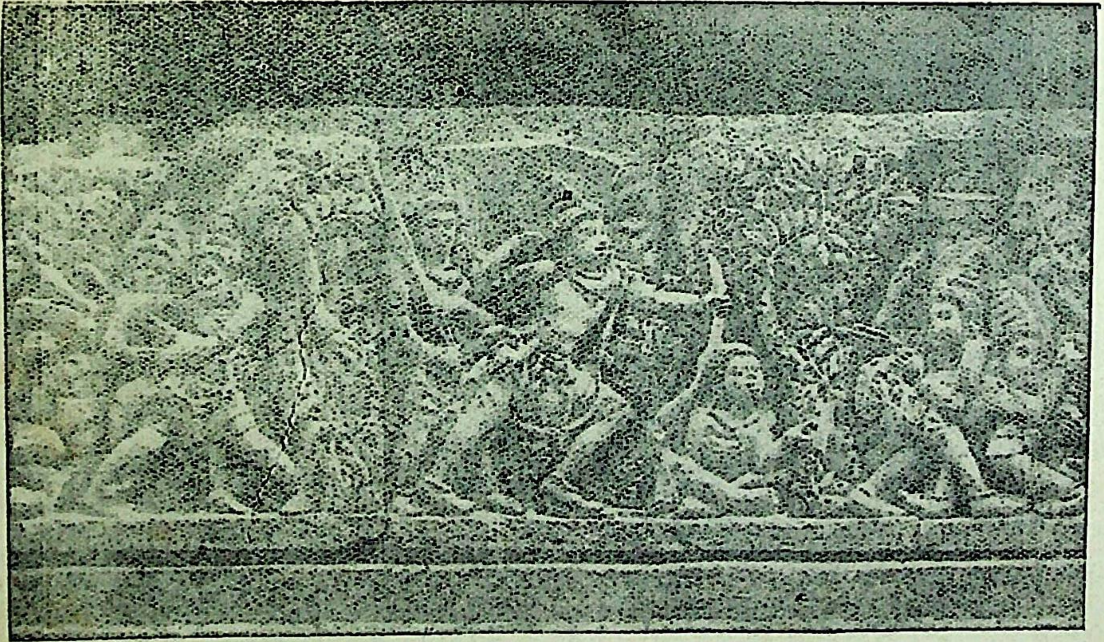
नोट—इस व्याख्यान में श्री महता जी ने जापान में भारतीय सभ्यता, जावा सुमात्रा में भारतीय सभ्यता आदि देशों के वारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया। स्थानाभाव से उसे हम नहीं दे रहे हैं। उनकी जापान दर्पण पुस्तक में विस्तार सहित पढ़िये।



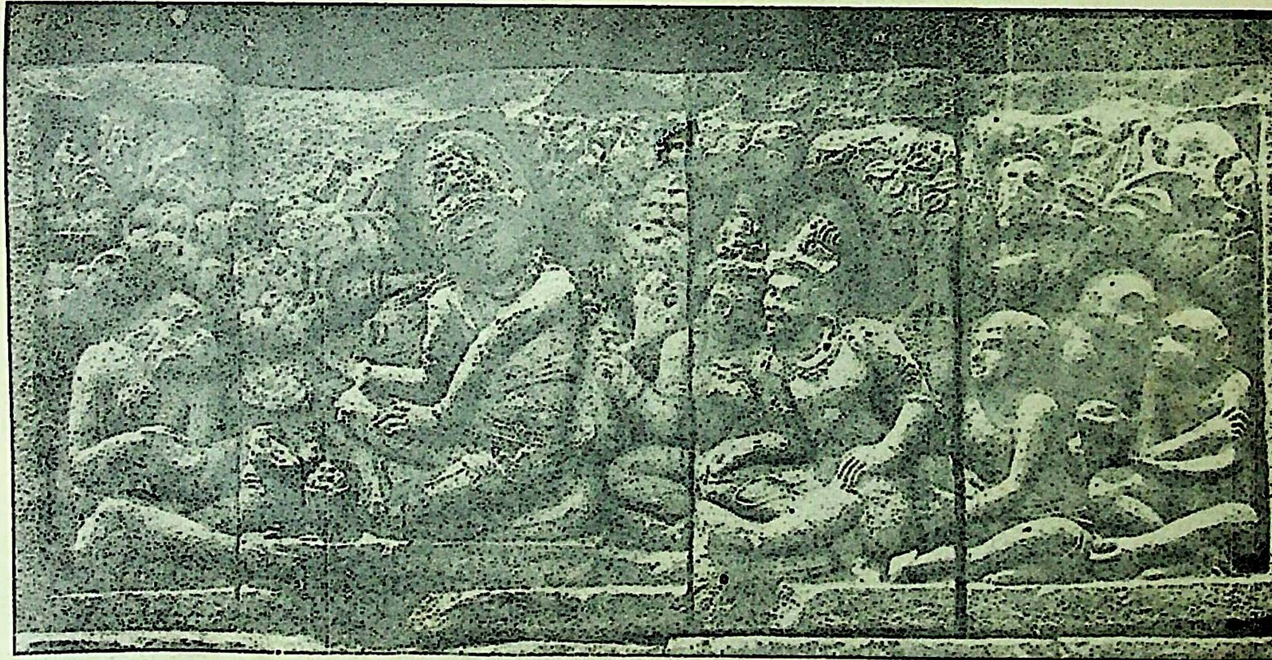
राम लक्ष्मण निराश बैठे थे । लक्ष्मण राम के लिये तरकश में पानी लेने गया । सुग्रीव पेड़ पर बैठा रो रहा था । उनके आँसुओं को भरकर लक्ष्मण राम के पास ले गया । उसके बाद राम लक्ष्मण ने सुग्रीव की खोज करके उससे प्रतिज्ञा की ।



सुग्रीव को अपना बल दिखाने के लिये राम उसके अनुरोध पर सात वृक्षों के पार अपना बाण पार करते हैं।
सुग्रीव और हनुमान यह दृश्य देखकर राम की वीरता से चकित हो रहे हैं।



बाली और सुग्रीव मल्लयुद्ध करते हैं। दोनों समान शक्ति वाले हैं इस लिये राम किसी पर बाण नहीं चलाता चुपचाप वृक्ष के पीछे खड़ा है। सुग्रीव ने पुष्पमाला पहिन ली तो राम ने बाण से बाली को मारा और वह गिर पड़ा।



हनुमान लङ्का से लौटकर राम लक्ष्मण तथा सुग्रीव को अपनी वीरता और घटनाओं का समाचार सुना रहा है।

व्याख्यान नं० (२१)

विदेशों में हिन्दुओं के मंदिर तथा जावा में रामायण का मंदिर

जावा टापू पूर्वी एशिया में एक प्रसिद्ध टापू है जहां काली मिर्च, रबड़, साबूदाना, नारियल तथा शक्कर अधिक उत्पन्न होती हैं। युरोप तथा अमेरिका में यह वस्तुएँ जावा से ही जाती हैं। आज से ५०० वर्ष पहिले हिन्दुओं का राज्यशासन था। जावा के इतिहास से प्रगट होता है कि गुजरात काठिया-वाड़ के राजकुमार शिवरत्न वर्मा ने ५०० सैनिकों को साथ लेकर नौका द्वारा वहां पहुंचकर अपना राज्य स्थापित किया और १४ वीं शताब्दी तक वहां हिन्दुओं का राज्य रहा। उस काल में वहां हिन्दू राजाओं ने अनेक अद्भुत मन्दिर बनवाये तथा यज्ञ किये। तत्पश्चात कुछ समय के लिये मुसलमानों का राज्य हुआ, फिर हालैण्ड की सरकार ने यह टापू मुसलमानों से छीन लिया। अब डच लोगों का राज्य है। पश्चिम के विद्वानों तथा खोजकों ने वहां के खण्डरों को खोदकर अनेक शिलालेख तथा पत्रों पर हस्तलिखित ग्रन्थ तथा पट्टियों पर लेख निकाले हैं सब संस्कृत में हैं। उनसे वहां भारत की संस्कृति के प्रभाव का पर्याप्त पता लगता है। जब चीनका प्रसिद्ध यात्री फ़ाहियान भारत से लौटकर चीन को गया तो मार्ग में ३ मास जावा में

ठहरा। वह अपनी 'भारत यात्रा" नाम की पुस्तक में वर्णन करता है कि ५ वीं शताब्दी में जावा में २००० संस्कृत पढ़ाने की पाठशालाएं थीं। वहां ब्राह्मण लोग संस्कृत पढ़ाते थे तथा बुद्ध मत के ग्रन्थ भी पढ़ाये जाते थे। अब भी वहाँ कई मंदिरों में हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ पाये जाते हैं। यदि वहाँ के लोग अधिक संख्या में मुसलमान हो गये परन्तु अब भी उनके रस्म रिवाज, रहन सहन हिन्दुओं से मिलता जुलता है।

जावा के समीप एक और टापू है जिसे बाली कहते हैं। वहां के नगरों तथा मनुष्यों के नाम, उनकी पूजा विधि, रस्म सब कुछ हिन्दुओं के समान हैं। वह अपने को आर्य कहते हैं और अपभ्रंश संस्कृत बोलते हैं। वहाँ मन्दिरों में वेद, रामायण, महाभारत तथा ७० श्लोकी गीता मिलती है जो लन्टूर वृक्ष के पत्तों पर लिखी हुई है। उनका मत है कि यह वास्तविक गीता है। क्योंकि रणभूमि में जब दोनों दलों की सेना अस्त्र शस्त्र धारण करके युद्ध के लिये तैयार थे तो ऐसे कड़े समयमें ७०० श्लोक का उपदेश जो भारत की गीता में पाया जाता है, असम्भव है। इतने उपदेश में २ घंटे लग जायेंगे इतनी देर विरोधी दल प्रतिक्षा क्यों करेगा। इसलिये वह वास्तविक उपदेश ७० श्लोक ही समझते हैं। जावा के जोगजा नगर में एक विशाल मन्दिर है जो रामायण का मन्दिर कहलाता है। उसमें सारी रामायण पाषाण चित्रलिपि में बनी है। यह शिल्प कारी तथा चित्रकारी इतनी अद्भुत है कि युरोप अमेरिका के

बड़े बड़े चित्रकार (Engineer) तथा अनुभवी शिल्पकार इस मन्दिर की सुन्दरता और महानता को देखने आते हैं और चकित रह जाते हैं। महोदय हावल ने तो पुस्तक "भारत की प्राचीन शिल्पकारी" में लिखता है:—

"The Hindus built this temple outside the sea shore like of which the earth has never known".

अर्थात् हिन्दुओं ने समुद्र पार यह ऐसा अद्भुत मन्दिर बनाया कि इसके समान भूमण्डल पर और कोई मन्दिर नहीं है।

कहा जाता है कि यह मन्दिर राजा शिवकुमार वर्मा ने १००० शिल्पकार भारत से मंगाकर वहाँ बनवाया। १०००० मज़दूर जावा से लेकर ४ वर्षों में यह मन्दिर तैयार हुआ। पाषाण को काट काट कर रामायण के दृश्यों को ऐसी सुन्दरता से खड़ा किया है कि वह चित्र साक्षात नाटक तथा महापुरुष प्रगट होते हैं।

(२) इन चित्रों से पता चलता है कि जिस समय यह मंदिर तैयार हुआ लोग हनुमान को बन्दर न समझते थे न उस की पूंछ थी। हनुमान जी चूंकि वन में रहने वाले थे, उनको वानर कहते थे। वानर के अर्थ वनमें रहने वाले तथा बन्दर भी हैं। अविद्या के समय में पहले अर्थ त्यागकर दूसरे अर्थ ग्रहण कर लिये गये। मन्दिर के दृश्य में न उसकी पूंछ है न वह बन्दर है।

(३) रावण के १० सिर बताये जाते हैं परन्तु इस मन्दिर में रावण का दृश्य भी साधारण मनुष्यों के समान है।

(४) इस मन्दिर की शिल्पकारी से सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में भारत में शिल्पविद्या, कलाकौशल विद्या, पाषाण चित्रलिपि उन्नति के शिखर पर पहुंच चुकी थी।

इस प्रकार जावा में कई मन्दिर बुद्ध, शिव तथा विष्णु के हैं। वहाँ एक पर्वत का नाम मेरु है उसपर पांचों पांडवों की मूर्तियां पत्थर की विद्यमान हैं। कई पुस्तकें भी मिलती हैं। उनके नाटकों खेल तमाशों में भारतीय वीरों के चित्र दिखाये जाते हैं। मैंने कुछ फोटो जावा की रामायण के दिये हैं ताकि लोगों का भ्रमजाल दूर हो और अपने पूर्वज वीरों की विद्वता वीरता तथा सभ्यता का हम अभिमान कर सकें।

इसी प्रकार हिन्दुओं के मन्दिर अमेरिका, चीन, जापान, ब्रह्मा, स्याम, कम्बोडिया में अद्भुत कारीगरी के अब तक विद्यमान हैं।

व्याख्यान नं० २२

संसार का आगामी धर्म

वर्तमान समय में सब से आवश्यक प्रश्न यह है कि संसार का आगामी धर्म क्या होगा। कई पश्चिमी विद्वानों का मत है कि भविष्य में संसार का कोई धर्म न होगा। अब वैज्ञानिक

युग में धर्म की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। परन्तु अधिक विद्वानों का विचार है कि मनुष्य बिना धर्म के कभी नहीं रह सकता, जिस प्रकार शरीर की रक्षा तथा पुष्टी के लिये भोजन की आवश्यकता है वैसे ही आत्मा की रक्षा तथा पुष्टी के लिये धर्म की आवश्यकता है। प्राकृतिक वस्तुएं हमें शारीरिक सुख तो दे सकती हैं परन्तु आत्मिक शान्ति नहीं दे सकतीं। मनुष्य के भीतर दया, प्रेम, सेवा, शान्ति, परोपकार तथा आनन्द आदि शक्तियां केवल धर्म से ही विकास पाती हैं। साईंस (विज्ञान) इन गुणों को उत्पन्न नहीं कर सकता।

सब मज़हब यह दावा करते रहे हैं कि हमारा ही मज़हब सत्य तथा सार्वजनिक है, इस लिये हमारा ही मज़हब संसार का भविष्य धर्म होगा परन्तु अब उन मज़हबों के नेता अपनी जिज्ञासा प्रगट कर रहे हैं।

(१) इसलाम का कभी दावा था कि इसलाम ही संसार भर का धर्म होगा परन्तु अब उनकी आशा पर पानी पड़ गया है। अब मुसलमानों का समाचार पत्र 'अलवाइज़" २४ अगस्त १६३६ लखनऊ के अङ्क में लिखता है, "इसलामी जगत आज जिस रंग पर आ रहा है तथा उसके धार्मिक सिद्धान्तों की जो अवस्था हो रही है अब गुप्त नहीं है। "लाइला" के कहने वाले कुरान पर कटाक्ष करते हैं, हज़रत मोहम्मद को रसुल मानने वाले हदीसों पर शंकायें करते हैं। शिया लोग जो १० इमामों को मानते हैं उनके उपदेशों पर उपहास करते हैं। वह इसलाम

के मन्तव्य स्वीकार नहीं करते। अब वह जन्नत, नर्क, कर्मों का पलड़ा, सरातुल मुस्तकीम तथा फरिश्तों के मानने से मुन्किर हो रहे हैं। स्वर्ग में हूरों (अप्सराओं) के वजूद से भी इन्कार कर रहे हैं। जब मैं उपदेश देता हूं तो कई मुसलमान प्रश्न करते हैं कि यदि पुरुषों को स्वर्ग में ७० हूरें मिलेंगी तो मुसलिम स्त्रियों को क्या मिलेगा अस्तु अब लोग वैज्ञानिक काल मानते हैं इस लिये इसलाम से बिमुख हो रहे हैं।

(२) समाचार पत्र "पेशवा", इसलामिया अखबार देहली २४-४-२२ लिखता है "मुद्दत से खबरें आरही हैं कि 'ईरान" इसलाम के मन्तव्यों को भंग कर रहा है "तुर्क" इसलाम का जूता गर्दन से उतारना चाहते हैं। पठान भी अपना पैंतरा बदल रहे हैं। टर्की में धार्मिक विभाग बन्द हो गया है। हमने समझा था कि हमारे विरोधी मिथ्या प्रचार कर रहे हैं परन्तु अब तो हृदय बेधक समाचार आ रहे हैं कि तुर्कों ने मज़हब को अन्तिम इसलाम कह दिया। उन्होंने विज्ञापन कर दिया है कि तुर्की सरकार का भविष्य धर्म इसलाम न होगा।"

यह तो इसलाम की मुख बोली तसवीर है। अब ईसाई मत की सुनिये।

(३) लाट पादरी लेडलो (Bishop Ladlaw of U.S.A.) अमेरिका के सम्बन्ध में लिखते हैं "Christianity is dying fast here. What is the use of flogging which is already dying", अर्थात् ईसाई मत यहां मर रहा है, अब उसपर कोड़े मारने से क्या लाभ।

इसी प्रकार पादरी बारनिस ने कह दिया कि अब विद्वान लोग हज़रत ईसा के चमत्कारों को नहीं मानते, न उसका कुमारी के गर्भ से उत्पन्न होना, न मरकर जी उठना या आकाश पर उड़ जाना मानते हैं। विज्ञान तथा पदार्थ विद्या ने अब बाईबल के विश्वास को नष्ट कर दिया है। मसीह के सम्बन्ध में सब गाथाएं कपोल कल्पित तथा स्वार्थी पादरियों की मिलाई हुई पाई जाती हैं अस्तु यह दोनों मज़हब अब बुद्धिमानों की दृष्टि में पतित हो रहे हैं तो फिर प्रश्न यह है कि संसार का आगामी धर्म क्या होगा। मैं यहाँ सार्वजनिक धार्मिक सम्मेलनों के तीन प्रधानों की सम्मति को आपके सन्मुख रखता हूं, जिनसे सिद्ध होगा कि अब संसार वैदिक धर्म अपनाने को है।

(१) सन् १९११ के सार्वजनिक धर्म सम्मेलन शिकागू में चार्लस इलियट (Charles Elliot, President The World Religions Congress Chicago) ने कहा—(१) संसार का भविष्य धर्म मज़हबी ठेकेदारों तथा पुजारियों से पृथक होगा (२ ईश्वर तथा परमात्मा के मध्य में कोई दूत या मोक्षदाता न होगा किन्तु आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध बेतार सन्देश (Wireless Telegraphy) के समान होगा अर्थात् आत्मा सम्बन्ध योग द्वारा होगा (३) धर्म सिद्धान्त Science & Philosophy (विज्ञान तथा पदार्थ विद्या) के अनुकूल होंगे, बुद्धि और तर्क की कसौटी पर भविष्य का धर्म शिक्षा किया जावेगा (४) अन्ध विश्वास के स्थान में ज्ञान

का स्थान होगा (५) आगामी धर्म में देवताओं और फ़रिश्तों का कोई स्थान न होगा। चमत्कारों तथा सृष्टि नियम विरुद्ध बातों से तृतेप होगा। न ही उसमें किसी महापुरुष या राजाधिकारी के जीवन का वर्णन होगा।

(२) दक्षिण अफ्रीका में जो धार्मिक सम्मेलन हुआ, उसमें Thomas Fitz (थामस फ़िटज़) ने यह कहा "मुझे सम्पूर्ण निश्चय है कि एक दिन आवेगा जब हर घर में वेदों की पूजा होगी और घर घर में योग फिलासफी का चर्चा होगा। वेदों के सम्बन्ध में जो कुछ पश्चिम के विद्वानों ने लिखा है वह स्वीकार करने योग्य नहीं क्योंकि उनको वेदार्थ करने की या समझने की योग्यता नहीं है। वैदिक धर्म ही मनुष्य की आत्मा को शान्ति दे सकता है। स्वामी दयानन्द के प्रचार से पहिले वैदिक धर्म लोप हो चुका था। वेद हीरे मोतियों के समान सन्दूक में बन्द थे जिसकी चाबी गुम हो गई थी। स्वामी जी ने चाबी तलाश कर उसको खोला और हीरे मोती बखेर दिये।

(३) सन् १८७७ में जो सार्वजनिक धर्म सम्मेलन डनमार्क के देश में हुआ वहां की प्रधान लेडी मिस जटस्क् ने अपने भाषण में कहा:—

"O Ye assembled scholars of the earth, if you desire to keep the atmosphere of the world quiet and calm go to the saints in caves and forests of India: sit at their feet and learn divine wisdom from their holy lips and then propagate it in Europe and America.

अर्थात् ओ भूमंडल के एकत्रित विद्वानों! यदि तुम संसार के वायु मंडल को शान्त तथा सुखदायक बनाना चाहते हो तो भारत के सन्तों के पास गुफा और जंगलों में जाओ, उनके चरणों में बैठकर उनसे ब्रह्मज्ञान को सीखो और युरोप, अमेरिका में फैलाकर शान्ति का राज्य स्थापन करो।

इन तीनों परमाणों से सिद्ध होता है कि अब संसार में अन्य धर्म के जिज्ञासु वैदिक धर्म को ही आगामी संसार का मुख्य धर्म मानने को तैयार हैं क्यों कि "James Victor Couson" (जेम्स विकटर कज़न) के कथनानुसार वैदिक धर्म में तीन विशेष बातें हैं जो अन्य किसी मत में नहीं अर्थात् (१) त्याग, वैराग (२) संसार का परोपकार (३) भोग के स्थान में योग, ईमान के स्थान में ज्ञान। अतः संसार का आगामी धर्म वैदिक धर्म ही होगा।

व्याख्यान नं० २३

जापान की उन्नति के कारण

जापान १८६८ में एक साधारण अज्ञात टापू था; जब उसकी बागडोर महाराजा ने शगवानस से अपने हाथ में ली तो उसने उन्नति की ओर पग धरा। उसने विचार किया कि शिक्षा के बिना किसी देश की उन्नति नहीं हो सकती। उसने आज्ञा दी कि मेरे देश में सब ग्रामों में शिक्षा प्रचलित की जावे। सन्

१८७१ में उसने विद्या सभा (Education Board) की स्थापना की तथा सन् १८७२ में शिक्षा प्रबन्ध नियम (Educational Code) बनाया। सन् १८७१ में १५० नवयुवक ५ लड़कियां अमेरिका में शिक्षा गृहण करने तथा शिक्षा प्रणाली देखने भेजे पुत्रियों के लिये पाठशाला खोलते समय यह भाषण किया:—

"उन देवियों का शिक्षित होना आवश्यक है जिन की संतान पर देश उन्नति निर्भर है। माताओं का कर्तव्य है कि सन्तानों के हृदयों में विद्या का अनुराग उत्पन्न करें। माताओं के शिक्षित होने से ही सन्तान उन्नत तथा शिक्षित हो सकती है।"

बालकों की शिक्षा में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाता है:—

(१) माता पिता की सेवा करना (२) सब से मित्रता (३) अल्प व्यय (४) सदाचार (५) आत्म दमन (६) देश भक्ति (७) परोपकार वृत्ति (८) उच्च अभिलाषा के विचार (९) राजभक्ति (१०) प्रसिद्ध पुरुषों के चरित्र, योधाओं के वीरता चरित्र (११) पेट पूर्ती करने की योग्यता के साधन साथ ही सैनिक शिक्षा भी दी जाती है। फकुज़ावा ने शिक्षा फैलाने में यहां कार्य किया। उसने संस्कृत के बहुत ग्रन्थ अनुवाद करके फैलाये जो कई संस्करण निकल चुके हैं। जापान में ४५ हज़ार स्कूल २१००००० विद्यार्थी प्राईमरी स्कूलों में, शहरों में कुल सरकारी व्यय का पांचवां भाग शिक्षा पर व्यय होता है। ४६ यूनीवर्सि-

टियां हैं उनमें ७० हज़ार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं, २२ हज़ार पुस्तकें प्रति वर्ष नई छपती हैं, ५ हज़ार समाचार पत्र व मासिक पत्र मुद्रित होते हैं। चार हज़ार पांच सौ पुस्तकालय, १५ हजार दो सौ नवयुवक सभायें, जिनके सदस्य २५ लाख ५२ हजार हैं स्त्रियों की सभायें १३ हजार ३३० हैं उनके सदस्य साढ़े १५ लाख हैं ७३० स्काऊट क्लब (Scouts Clubs) हैं उनके सदस्य ७१६२० हैं १० लाख आदमी प्रतिदिन रेडियो सुनने वाला है।

(२) महाराजा साहब ने अध्यापक वर्ग में (Teacher's Association Kento) में निम्न भाषण किया "शिक्षा प्रचार का मूल उद्देश्य यह है कि जाति में ऐसी योग्यता उत्पन्न की जाये जिससे हमारी प्रजा देश का धन बढ़ा सके और अन्य देशों में हमारा जाति वैभव प्रगट हो। हम केवल व्यापार और शिल्पकला की व्यवस्था से अपना वैभव बढ़ा सकते हैं। जिस देशभक्ति की हम आराधना कर रहे हैं, उसने अब अपना फल दिखा दिया है; हमें उचित है कि अब शिक्षा प्राप्त करके अपने जाति गुण और बल को और भी पुष्ट करें। हरेक बालक, स्त्री पुरुष को राजाज्ञा का पालन करना चाहिये। सभ्यता के परिवर्तन के साथ हमें भी अपनी पुरानी दुर्गीति को बदल देना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने और पवित्र आत्मा बनने का प्रयत्न करना चाहिये। विदेशियों के साथ अनुचित व्यवहार कभी न करो। हमने अपने पूर्वजों से जो

जाति सभ्यता और स्वतन्त्रता प्राप्त की है, उसे उन्नत करके सन्तान के लिये छोड़ जायें, शिक्षा के द्वारा दुर्बल और दुराचारियों को घटा सकते हैं ये बात न केवल अपने हृदय में अङ्कित करें किन्तु औरों में भी इनका प्रचार करें, ताकि हम संसार की अन्य जातियों के साथ अपना शिर ऊंचा कर सकें।"

जिस देश में राज्य की ओर से अध्यापक वर्ग के लिये ऐसी सुशिक्षा हो वह देश क्यों न इतनी उन्नति करे।

जापान की शिक्षा प्रणाली का वर्णन किसी दूसरे व्याख्यान में कर चुका हूं। अब वहां की कृषि विद्या की ये अवस्था है कि वहां कुल १६२०० वर्ग मील में कृषि होती है परन्तु वे अपनी सारी आवश्यकतायें इसी भूमि से पूर्ण करते हैं, किन्तु कुछ चावल बाहर भी बिक्री के लिये भेजते हैं। कृषि करने वाले नई बातों को बड़े उत्साह से ग्रहण करते हैं, कृषि विद्या को सिखाने के लिये १८०० कृषि स्कूल हैं और दो बड़े महाविद्यालय हैं, उनमें १६३३०० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अतः जापान ने ५० वर्ष में इतनी उन्नति कर दिखाई है कि वहां अब ५००० कारखाने हैं, ६० लाख तकुवे हैं तथा सूत कातने वाले देशों में पांचवें नम्बर पर हैं। बनावटी रेशम पैदा करने में अव्वल नम्बर पर है, ६० प्रतिशत रेशम जापान में उत्पन्न होता है।

(३) जापान की उन्नति के कारणः (१) देशभक्ति (२) एक राष्ट्रीयभाषा (३) नैतृत्व (Discipline) (४) अनिवार्य तथा मुफ्त

शिक्षा (५) ईमानदारी (६) राजभक्ति (७) कर्तव्य पालन (८) सन्तुष्ट मजदूर (६) गुणग्राही होना (१०) पुरुषार्थ (११) संगठित होकर कार्य्य करना (Cooperation) (१२) प्रत्येक घर में रेडियो का होना (१३) सस्ती बिजली, रेल, डाक सस्ते (१४) सादगी (१५) आत्म सम्मान।

(४) जापान में सस्ता माल होने के कारणः (१) सस्ती मजदूरी (२) कारखाने रात दिन चलते रहते हैं (३) निर्वाह सादा (४) कर्तव्य पालन (५) हर नमूना की वस्तु तैयार करना (६) काम में फुर्ती (७) लाट्री का रिवाज (८) बल पूर्वक प्रचार (६) राज की सहायता (१०) देशभक्ति का भाव आदि।

(५) जापानियों के विशेष गुणः (१) नियम पूर्वक काम करना (२) स्वतन्त्रता के विचार (३) ईमानदारी (४) निर्भयता (५) सदाचार (६) शिष्टाचार (७) अतिथि सेवा (८) जाति तथा देश व राजभक्ति (६) सादा जीवन समय पर काम।

(६) जापान पर भारत की सभ्यता का प्रभावः—

1. Professor Takasu in Osaka Minichi 15. 2. 35 writes thus: Japan is indebted to India for her culture and literature, so her success and achievements are due to the culture of India. I heartily expect that the inhabitants of mighty India will not forget their prestige, glory, they shall compare their sublime Philosophy and harmonise it with the present one.

2. Dr. James says in "Advanced Japan".

Japan cannot ignore the numerous benefits derived from India. It could not have been modern Japan without the help of India. But now India should imitate Japan to reinstate her ancient sublimity, prestige and glory

3. Marquis Okama in Asiatic Review writes: Such a big country as India if united could never be vanquished by the whole Europe. In Japan also such dissension prevailed in olden days. Then how Japan arose;

(a) By unification. (b) Assimilating good things of others without giving up her own culture. (c) Harmonising civilisation of East and West. (d) Abolition of Feudalism. (e) Starting democracy respecting and representing the will of the people. (f) Opening industrial, agricultural, architectural and technical institutions. (g) Giving Military instruction freely.

(७) जापान में शिक्षा पाने के साधनः—

अपने जिले के कलक्टर को पासपोर्ट के लिये प्रार्थना करें। ६) फ़ीस ३ फ़ोटो वह लेकर सरकार से पासपोर्ट मंगा देगा। कलकत्ता से प्रति मास एक जापानी जहाज़ जाता है। तीसरे दर्जे का किराया ७५) भोजन का व्यय २५)। यदि अपना भोजन बनावें तो ५) पर्याप्त होगा। २२ दिन में जहाज़ जापान के

बन्दरगाह कोबी में पहुंचता है। मार्ग में जहाज़ रंगून, पीनाँग, सिंगापुर, हाँगकाँग तथा शंघाई में एक दो दिन ठहरता है। वहां आर्य समाज तथा गुरुद्वारे हैं। वहां ठहर कर सैर कर सकते हैं। कोबे में हिन्दुस्तानियों की ४ सभायें हैं—(1) Indian Merchants Association. (2) Sindh Merchants Association. (3) Indian Welfare Society. (4) Indian National Congress Tokyo. इन में से किसी सभा के मंत्री को तार भेजदें कि अमुक जहाज़ में आरहा हूं। वह जहाज़ पर लेने आवेंगे। यथाशक्ति सत्कार करेंगे तथा किसी स्कूल में किसी धन्धे के सीखने का प्रबन्ध करदेंगे। दो वर्ष का कोर्स है। मार्च या अप्रैल के मास यात्रा के लिये उत्तम हैं। अक्तूबर मास में शिक्षा का आरम्भ होता है। इतने में जापानी भाषा सीख सकते हैं तथा जिस काम को सीखना हो उसकी देख भाल कर सकते हैं। वहां १३४ प्रकार के हुनर सिखाये जाते हैं। मेरी सम्मति में निम्न धन्धों में से किसी एक दो को सीखें (१) घड़ी बनाना (२) खिलौने बनाना (३) रंग (४) साबुन (५) छाते (६) कागज़ (७) निब (८) बटन (६) साईकिल (१०) रंग बनाना (११) रबड़ के जूते तथा बिस्तर बनाना (१२) ऐनकें तथा उनके फ्रेम बनाना (१३) चमड़े का काम (१४) चाकू (१५) मैच बक्स आदि कोई हुनर जो पसन्द हो सीख सकते हैं। जापानी लोग सिखाने में संकोच नहीं करते। यह लोग भारतीयों से बहुत सहानुभूति प्रगट करते हैं।

व्याख्यान नं० (२४)

युरुप में वैदिक साहित्य का प्रचार तथा प्रभाव

सबसे प्रथम यूरुप के देश पुर्तगाल से सन् १४९८ ई० में वास्कोडिगामा ने भारत में जल मार्ग से प्रवेश किया। उसने भारत यात्रा पर पुस्तक India De Gasper लिखी जिसमें भारतीयों को मूर्ख लिखा है क्योंकि भारतीयों ने काँच की चूड़ियां उससे स्वर्ण के भाव से मोल लीं। फिर पादरियों ने भारत में आना आरम्भ किया। सबसे पहिले हालैंड देश के पादरी इब्राहाम रोचर ने संस्कृत पढ़कर "भर्तृहरी शतक" का अनुवाद डच भाषा में किया। सन् १५४८ ई० में इसका प्रभाव युरोप पर वहुत हुआ। २-पुनः पादरी फिलिट्टप सासटी ने सन् १५८७ में संस्कृत पढ़कर लिखा कि संस्कृत के शब्द तथा विभक्तियां हमारी भाषाओं से सम्बन्धित प्रतीत होते हैं। यदि मैं १८ वर्ष पहले आता तो संस्कृत भाषा का पूरा ज्ञान प्राप्त करता। तत्पश्चात पैरी कालमैटी ने संस्कृत पढ़कर और अनेक संस्कृत ग्रन्थ संग्रह करके युरुप में ले गया उसने लिखा "जब से वेद हमारे हाथ लगे हैं हमने उनका संक्षिप्त तात्पर्य लेलिया है। उनमें ईश्वर की एकता, उसके सद्गुणों का वर्णन है, स्वर्ग नर्क आदि सब बातों का ज़िक्र है"। ४-तत्पश्चात

कई अन्य पादरियों ने वेद शास्त्रों का अवलोकन किया। यहाँ तक कि पादरी मेकी ने तो बाइबिल का कुछ भाग लेकर उसका अनुवाद करके उसका नाम खरस्ट पुराण रक्खा तथा रावर्ट नोजिलि ने बाइबिल का कुछ भाग अनुवाद करके उसका नाम अज़हर वेद रखा तथा उसे पांचवाँ वेद बताया। ५-सबसे पहले कर्नल पेलियर को १७७१ में महाराजा जैपुर से वेद की एक प्रति मिली जो अबतक लंदन के पुस्तकालयमें विद्यमान है।

१—ब्रिटेन पर भारत की संस्कृति का प्रभाव—

सब से पहिले ईस्ट इन्डिया कम्पनी (East India Company) ने भारत में "हाबल कमीशन भेजकर भारत साहित्य की जाँच कराई, उसने विवरण में लिखा कि Brahmanic religion is the first and purest product of supernatural religion. The Hindu Scriptures contain the original doctrines and terms of revelation delivered from God to mankind at its first creation The Hindu literature is vast like occean. Comprehensive and perfect on every avenue of learning and love".

इसपर ईस्ट इन्डिया कम्पनी (East India Company) ने जो उस समय भारत पर राज्यशासन करती थी एक सभा की स्थापना की जिसका नाम Royal Asiatic Society रखा तथा भारत में उसका प्रधान सर विल्यम जोन्स जज सुप्रीम कोर्ट कलकत्ता नियत हुवा।

(१) Sir W. James ने गीता तथा मनुस्मृति का अनुवाद किया तथा ४१ पुस्तकें लिखकर मुद्रित कराईं, उनमें से प्रसिद्ध पुस्तकें यह हैं : ऋतु संग्रह, शकुन्तला नाटक, हिन्दू रसायन विद्या, हिन्दू नक्षत्र, हितोपदेश आदि।

(२) Thomas Calbrook (थामस कोलब्रुक) ने भारत में १५ वर्ष संस्कृत अध्ययन करके ऋग वेद पर निबन्ध लिखे तथा संस्कृत व्याकरण तथा कोष तैयार किये। अमरकोष का अनुवाद किया। बीज गणित, रेखा गणित, लीलावती आदि कई ग्रंथों के अनुवाद किये। वेद पर लिखा When once we are satisfied that Vedas are old and genuine and have exercised influence for centuries over millions of souls, it becomes our duty to try and understand them whose authors were fathers of wisdom, virtue and truth.

(३) मोनियर विलयम Monier William ने संस्कृत पढ़कर भारत का ज्ञान (Indian Wisdom), भारत के धार्मिक विचार (Religious thoughts in India) आदि कई पुस्तक लिखीं।

(४) Maxmuller ने अपना सारा जीवन वैदिक साहित्य की खोज में व्यतीत किया तथा ५० से अधिक ग्रंथ अनुवाद किये और लिखे उनमें से बड़े प्रसिद्ध ग्रन्थ यह हैं।

क–Sacred books of the East (पूर्व के पवित्र ग्रंथ)

ख–चारों वेदों का अनुवाद।

ग—भारत से हमें क्या शिक्षा मिल सकती है।

घ—हिन्दुओं के षट शास्त्र (Six systems of Hindu Philosophy.

ङ—धर्म का विकास।

च—प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास History of Ancient Sanskrit literature.

(५) वेदों के अनुवादक इङ्गलेण्ड में :— १-मैक्समूलर २-प्रोफैसर विलसन ३-ग्रीफ्थ ४-पीटरसन।

(६) इनके अतिरिक्त एडवर्ड कारपेन्टर, विक्टर कज़न, वैलकिनसन आदि अनेक विद्वानों ने संस्कृत ग्रन्थों को पढ़कर लाभ उठाया।

२—फ्राँस पर प्रभाव—

(१) सब से पहिले सन् १७५४ में पादरी डयू पैरन (Anquetell Du Paron) ने १६ वर्ष भारत में संस्कृत पढ़कर ५७ उपनिषदों का अनुवाद फ्रेंच भाषा में किया।

(२) फिर पैरिस में संस्कृत कालिज खुलने पर बर्नूफ (Engene Burnoof) ने संस्कृत पढ़कर वहां प्रोफैसर बनकर कार्य्य किया तथा यह विचार प्रगट किये।

We cannot close our eyes from the most brilliant light that comes from India. There can be no genuine Philosophy without the Philosophy of India. We should study her laws, her religion, her philosophy and literature.

(३) लूई जैकोलियट (Louis Jaccolliat ने २६ वर्ष भारत में ठहर कर संस्कृत का अध्ययन किया। चन्द्रनगर हाई कोर्ट के जज के पदाधिकार से मुक्त होकर उसने पुस्तक "The Bible in India" मुद्रित की, उसमें लिखाः

The Veda is the word of eternal wisdom; the principle of principles. Of all revelations, it is only the Vedic revelation which is in perfect harmony with modern science.

फिर लिखता है : I traced the progress of India in giving her enlightenment to the whole world. I saw India giving her laws, her customs, her morals, her Philosophy and Religion to Egypt, Greece, Italy and Persia. In short India is initiator of the civilisation of the whole world.

(४) Professor Flecher in Social Reformer June 1934 लिखता है:—

O India will you not help ? We your Vedic children are turning our gaze to our Mother India who is old, learned and wise. By your teaching we can become regenerating and moralising force of the World.

इसी प्रकार फ्रांस के कई विद्वानों ने वेद तथा अन्य शास्त्रों के अनुवाद करके लाभ उठाया तथा फ्रांस में संस्कृत साहित्य को फैलाया।

३—जर्मनी पर प्रभाव—

जर्मन के सम्बन्ध में तो Vonshraeder Professor Sanskrit Kiel University (महोदय शरोडर) ने अपनी पुस्तक "आर्य्यों की अत्यन्त प्राचीनता" में लिखा है कि जर्मन या जर्मनी को भारत के शर्मन तथा श्रोमणि ब्राह्मणों ने आवाद किया। श का ज से परिवर्तन होने पर जर्मन या जर्मनी वन गया। इस लिये वहां संस्कृत का प्रचार सब से अधिक है पं० विशेश्वरानन्द झा ने जो १६-८-३६ में समाचार पत्र मिलाप में अपना वक्तव्य मुद्रित कराया, उसमें कहा, मैं ७ वर्ष से जर्मन लोगों को साम वेद का गायन सिखा रहा हूं। वहां संस्कृत पठन अनिवार्य है। वहाँ के लोग संस्कृत भाषा को अध्यात्मिक तथा सांसारिक ज्ञान का कोष समझते हैं। वेद अध्ययन के लिये वहुत उत्सुक हैं। वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करने के लिये मांस भक्षण त्याग रहे हैं।"

(२) Herr Hitler वहाँ के सर्वाधिकारी ने ६-१-३५ को अपने भाषण में कहा जो २-२-३५ आर्य्य गज़ट में मुद्रित हुवा। "ईसामसीह यहूदी वंश से था, इस लिये ईसाई मत यहूदियों का है। हम आर्य्य वंश से हैं। हम क्यों यहूदियों का मत ग्रहण करें? हमें आर्य्य धर्म ग्रहण करना चाहिये जो हमारे पूर्वजों की सम्पत्ति है।"

Jesus Christ belonged to jewish tribe; hence Christianity is offshoot of Jewish religion. We

belong to Aryan Nation, hence we should accept Aryan Religion which is heritage of our fore-fathers.

इस प्रकार वहां के प्रसिद्ध विद्वानों ने भारत के धर्म, संस्कृति तथा साहित्य से अत्यन्त लाभ उठाया है। हमारे ग्रंथों को यहां से लेजाकर उनके अनुवाद करके उनसे अत्यन्त लाभ प्राप्त किया है। दृष्टांत मात्र थोड़े से विद्वानों के नाम देता हूं।

(क) वेद के अनुवाद करने वालों के नामः—

१–डा० रोज़न (Rosen) सन् १८१८ में ऋगवेद का अनुवाद किया।

२–राथ (Ridelph Rath) ने १८३७ में वेद का कुछ अनुवाद तथा सायनाचार्य्य के आधार पर निर्भर न करके उसको रद्द किया।

३–बन्फी (Benfey) ने १८४५ में सामवेद की कोथम शाखा का अनुवाद किया।

४–वैबर (Weber) ने १८५२ में वेद पर कुछ महत्वपूर्ण लेख लिखे तथा प्राचीन भारत के साहित्य का इतिहास लिखा।

५–अफ्रिचट (Anfrecht) ने १८३७ में वेदों को रोमन भाषा में मुद्रित कराया उसने सूत्र ग्रन्थों, पुराणों, नल दमयन्ति, गोविन्द गीता का भी अनुवाद किया।

६–प्रोफैसर ग्रासमैन (Grossmann) ने १८४५ में वेदों का अनुवाद किया।

७-प्रो० लेडविग (Laidwigg) ने १८७८ में वेदों का अनुवाद किया।

८-विटनी (Proff. Witney) को काश्मीर से पिपलाद तथा शौनक शाखायें वेद की प्राप्त हुईं; उनके अनुवाद किये।

९-प्रो० लैज़विक ने १६०५ में वेद का अनुवाद किया।

१०-मूर (Muir) ने वेद पर ४ भाग में वेदों के तत्व को संक्षिप्त रूप में मुद्रित किया।

११-ओल्डन वर्ग (Oldenburg) ने वेदों के छन्दों के इतिहास पर एक बृहद् पुस्तक रची जिसका मूल्य १५०) है।

(ख) ब्राह्मण ग्रंथों तथा अन्य साहित्य ग्रंथों का फैलाव।

१-फिचटी तथा शेलंग (Fitchte, Shellong) ने वैदिक साहित्य पर अधिक गवेषण करके कई ग्रंथ मुद्रित किये।

२-प्रो० बुल्हर (Bulher) ने अनेक पुस्तक भारत से संग्रह करके जर्मन में लेजाकर उनके अनुवाद किये।

३-शलेगल (Proff. Shlegal) ने व्याकरण तथा तत्व ज्ञान पर खोज करके कई ग्रंथ अनुवाद किये। बम्बे तथा व्याना यूनिवर्सिटियों में संस्कृत का प्रोफेसर रहा।

४-प्रो० ज़ीमर (Zemir) ने All Zunduski पुस्तक बर्लिन में मुद्रित कराई। यह पुस्तक भारत के साहित्य का भंडार वा विस्तार है।

५–पिस्कल (Piscal) ने वैदिक स्टूडियन (Vedic Studein) नाम की ३ बड़े भागों में मुद्रित कराई।

६–प्रो० लिन्डज़ (P. Lindez) ने जैना यूनीवर्सिटी से "कौशतकी" ब्रह्मन का अनुवाद किया।

७–डियूसन (Paul Duessen) ने उपनिषदों की फ़िलासफ़ी पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा।

८–वलहल्म (Welhelm) ने रामायण, गीता तथा हितोपदेश का अनुवाद किया।

९–बर्नल (Burnul) ने अद्भुत ब्रह्मन, सामवेद का अनुवाद किया।

१०–प्रो० लियूडर (Leuder) ने भारतीय संस्कृति, देवमाला, वरुण देवता पर पुस्तक लिखी। अतः जर्मनी के अनेक विद्वानों ने अनेक संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद करके जर्मनी को विद्या, ब्रह्म ज्ञान तथा अभ्युदय से यशवान बना दिया। अतः जर्मनी तथा जापान की उन्नति का कारण भारत के साहित्य तथा ज्ञान को उपयोग में लाना ही है।

श्री महता जैमिनी जी द्वारा लिखित पुस्तकें

तुरन्त लेकर पढ़िये

जावा में पाषाण चित्रलिपि रामायण

प्राचीन काल की बाली द्वीप में मन्दिर कला को देखकर आप चकित रह जायंगे। नवीन संस्करण अभी फिर छपाया गया है। सचित्र पुस्तक का मूल्य १।

अन्य पुस्तकें

१.	दक्षिण अफ्रीका की यात्रा	१॥)
२.	पूर्वी अफ्रीका की यात्रा	१)
३.	महता जी का विदेश भ्रमण	१)
४.	विदेश यात्रा-पथ-प्रदर्शक	॥)
५.	जापान दर्पण (जापान का सम्पूर्ण वृतान्त)	१)
६.	वेदों का महत्व अङ्गरेज़ी	॥-)
७.	जगत गुरु भारत अंग्रेज़ी	१।)
८.	वैदिक मिशन इन अफ्रीका अंग्रेज़ी	॥=)
९.	अमेरिकन लेडी व भारत माता	१)
१०.	विदेशों में आर्य समाज का इतिहास उर्दू	१॥)
११.	मध्य अमरीका में वैदिक धर्म	॥)
१२.	महता जी का जीवन चरित्र	॥।)
१३.	उपनिषदों का महत्व	।)

मिलने का पता—

मैनेजर जैमिनी पुस्तकालय मार्फत अरोड़वंश सुधारक

लाहौर।

ی آف نیچرز کا ش

ابر قوم کے لیے نپاؤش رسنبر نے آپ کے گذشتہ تمام ریکارڈ توڑ د

میوزک

غلام حید